श्री प्रेम ज्योति

[वीतराग वाणी के मर्मज्ञ अध्यात्मिक सन्त]

त्वं देव जगता ज्योतिः,
त्वं देव जगता गुरूः।
त्वं देवं जगतां धाता,
त्वं देव जगता पति ॥

जीवन

|

चरित्र

|

महापुरुषों

|

के

|

|

हमें

|

|

शिक्षा

|

|

देते हैं।

|

|

आदर्श चरित्र

[परम पूज्यनिय श्री प्रेमचन्दजी महाराज
का अनोखा व्यक्तित्व]

भूमिका

अंग्रेजी के प्रसिद्ध कवि लोंग फैली Longfellow अपनी प्रसिद्ध तथा सुन्दर रचना "साम आफ लाइफ" Psalm of Life में जीवन चरित्र की उपयोगिता कितने सुन्दर शब्दों में अभिव्यक्त कर रहे हैं—

Lives of great men all remind us, we can make our lives Subline.

And departing leave behind us,
Foot Prints on the sands of time.

भाव यह है कि महापुरुषों की जीवनियां हमें इस सत्य की ओर प्रेरित करती है कि हमें भी अपना जीवन उन जैसा पावन बनाना चाहिये और जब हम इस संसार से प्रस्थान करें तब हम समय रूपी समुद्र के रेतीले तटपर अपने ऐसे चरण चिन्ह छोड़ जाँय कि जिनसे हमारी भावी सन्तानों को मार्ग दर्शन की सुविधाएं प्राप्त हो सकें ।

प्रस्तुत रचना एक जीवन चरित्र है, आदर्श जीवन चरित्र है । इस में वीतराग वाणी के मर्मज्ञ अध्यात्मिक सन्त परम पूज्य पाद पंजाब केसरी श्री प्रेमचन्द जी महाराज के जीवन वृत्त को संकलित किया गया है । महाराजश्री की सिंह गर्जना समाज के मानव को ही नहीं जैन अजैन तमाम मानवों को सच्चे पथ पर चलाने वाले महापुरुष की गर्जना होती थी ।

जीवन चरित्र के अवलोकन से सुसंस्कारी व धर्मिष्ठ बनेगें, सन्त शान्तिमय जीवन बिताने वाले आत्मा के उद्धार करने वाले ज्ञान-धार्मिक शिक्षा तथा नीति धर्म युक्त व्यवहार में दक्ष बनाने वाला ज्ञान मिलेगा ।

चरित्र नायक इस दृष्टि से चुने गये हैं कि जिन से प्रेरणा मिलती है, उनके साहस, तपस्या, त्याग की जिससे हममें शिक्षा ग्रहण करने की भावना पैदा होती है ।

महापुरुषों के चरित्रों का अध्ययन करना चाहिये महान सन्त श्री प्रेमचन्द जी का परिचय जिसको कई बार पढ़ना चाहिये अनेक बार पढ़ने से ही बहुत सी बातें समझ में आती है पढ़ने के बाद उस पर विचार मनन करना चाहिये जिससे विकास होने का अवसर प्राप्त हो।

हम और आप भी यात्री है, आज से नहीं अपितु अनन्त काल से यात्रा कर रहे हैं संसार रूपी भयानक जंगल में अज्ञान का गहरा अन्धकार छाया हुआ है जिससे सही मार्ग दिखाई नहीं दे रहा है। उस समय सदगुरु ज्ञान रूपी सर्च लाइट लेकर आते हैं और शिष्य को कहते हैं कि घबराओ नहीं मैं तुम्हें सही मार्ग बताता हूँ ज्ञान के निर्मल प्रकाश से चलो बढ़े चलो लक्ष्य की ओर उस समय साधक का हृदय भी आनन्द विभोर होकर गा उठता है—

"गुरु बिन कौन बतावे बाट"

भारत के महान सन्त युग प्रवर्त्तक महावीर स्वामी ने इस बिहार पथ के पथिक बन कर २५०० पहले सत्य के दिव्य सन्देश को ग्राम-ग्राम घर-घर पहुंचाया उस समय एक नया मोड आया क्रान्ति आई उथल पुथलता में शान्ति आई। उसी महावीर भगवान् के सच्चे सिपाही बन कर श्री प्रेमचन्द जी महा-राज ने महावीर स्वामी का सन्देश घर-घर ग्राम-ग्राम में तथा बड़े शहरों में हजारों मानवों के बीच डंके की चोट से पहुंचाया वाह पंजाब केसरी आपकी वाणी में जोश था, त्याग था, निरडरता थी, तपस्या थी, सत्यता थी, उच्च कोटि का चरित्र था वह सब होने के कारण आप एक महान सन्त बने और भटके हुये मानवों को सही रास्ते पर लाने को प्रवचन समय-समय पर दिया जो सदैव स्मरण रहेगा। प्रवचनों का कुछ संग्रह प्रेमसुधा नामक पुस्तकों में प्रकाशित हुआ है उसके अवलोकन से सही रास्ते पर चलने वाला मानव बन सकेगा और वह सुख शान्ति को प्राप्त करलेगा।

राष्ट का धर्म एक ही है जो मानव धर्म कहलाता है और वह धर्म है "इसमें सर्व धर्म आ जाते हैं और मानव का यही मुख्य धर्म है जिसे जिन जैन) धर्म भी कहते हैं। मानव धर्म जीवन को पवित्र बनाने वाला तत्व है

धर्म से प्रवृत्तियों का संचालन हुआ है वे बड़ी ही लोकोपयोगी हैं। अतः धर्म का ज्ञान होना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है। यह ज्ञान माहपुरुषों के जीवन चरित्रों के स्वाध्याय से प्राप्त होता है।

महाराजश्री खरी-खरी कहने वाले सन्त (सत्य गुरु) थे चाहे जितना व्यक्ति गत प्रेम हो लेकिन सम्प्रदाय या धर्म पर कोई कुछ गलत टीका (लेख आदि) करते और वह पढ़ने को मिल जाते तो फौरन ही उसका उत्तर देते और निडर होकर अपने सिद्धान्त पर दृढ़ थे। महाराजश्री अक्सर फरमाया करते थे कि इन्साफ (न्याय) के लिहाज से गुरु-शिष्य छोटे-बड़े का कोई लिहाज नहीं। न्याय (सच्चाई) के आगे न झुकना भी गुनाह है, और अन्याय (असत्यता) के आगे झुकना भी गुनाह है, और (असत्यता) के आगे झुकना अनीति (दुष्टकर्मो) को जन्म देना है। यह बातें महाराजश्री अपने व्याख्यान में भी बड़ी मिसालों को देते हुए फरमाया करते थे एवं ज्ञान चर्चा में रात्री को आने वाले भाईयों से भी फरमाया करते थे।

परम पूज्यनिय श्री प्रेम चन्द जी महाराज वीतराग वाणी के मर्मज्ञ, आध्यात्मिक सन्त, निडर योद्धा, आदर्श, त्यागी, तपस्वी, कर्मठ नीति निपुण राजनीतिज्ञ अजेय नेता थे। अनुभव और उनके साथ घटी घटनाओं का सार (तत्व) सही रास्ते पर चलने का ज्ञान विहार और प्रचार नामक पुस्तक में मिलेगा आशा है विहार और प्रचार के अनोखे ज्ञान को प्राप्त करने के लिये प्रश्न उत्तर आदि जो पुस्तक में दिये गये हैं उससे बन्धुओं (पाठकों) को बड़ा ही ज्ञान प्राप्त होगा इसलिये हर मानव को इस पुस्तक का अवलोकन कई बार करना चाहिये ऐसा मेरा विश्वास है।

१६३ साऊथ एवेन्यू
नई दिल्ली

जगदीश सिंह सोलंकी
"पत्रकार'

लेखक की ओर से—

महाराजश्री के स्वर्गवास हो जाने के बाद यह आवश्यकता महसूस हुई कि महाराजश्री ने जो चातुर्मास किये हैं और जगह-जगह प्रचार कार्य किया है उसको विहार प्रचार के रूप में लिखकर प्रकाशित किया जाय अतः मैंने यह विहार प्रचार लिखाना प्रारम्भ किया, इसको लिखवाने मे निम्नोक्त व्यक्तियों ने अपना समय दिया जिसमें पारस मुनि ने इसको शुद्ध करने तथा सिल सिले वार लेखों को लगाने आदि का कार्य करने में अपना पूर्ण सहयोग दिया तथा श्री शिवकुमार, श्री बारुमल जी ने प्रूफ आदि देखने का कार्य किया मास्टर मौजी रामजी व श्री हरि प्रसाद जी ने अपना पूर्ण सहयोग दिया तथा जगदीश सिंह सोलंकी जो महाराजश्री का परम भक्त है समय पर यहां आगया उसने लेखों की नकलें आदि की शुद्धि करने का कार्य किया अन्य सज्जनों ने भी सहयोग दिया।

विहार और प्रचार के प्रकाशन में अशुद्धियों पर ध्यान तो काफी रखा गया लेकिन फिर भी कोई गलती रह गई हो तो हमें सूचित करें ताकि वह उचित होगी तो भविष्य में सुधार करली जायेगी।

भूमिका के आगे श्रद्धांजलियां दी जा रही है—यह श्रद्धांजलियाँ जगदीश सोलंकी की मंगाई हुई हैं। श्रद्धाँजलियाँ न मंगाने का कारण यह था कि करौलबाग ऐ० ऐ० जैन सभा के प्रधान मंत्री ने विश्वास दिलाया था कि हम साधु-साध्वियों की श्रद्धाँजलियां मंगा कर जैन प्रकाश का विशेपाँक निकालेंगे। इसी विशेपांको छपवाने के विपय में आनन्दराज सुराणा महाराजश्री का फोटो मांगते थे। यदि उनकी भावना साधु-साध्वियों की श्रद्धांजलियां मंगाकर छपवाने की हो तो प्रेमज्योति के दूसरे संस्करण के साथ छपवा सकते हैं।

श्रद्धाँजलि

श्री सोलंकी जी,

पूज्य पाद पंजाब केसरी जैन मुनि श्री प्रेम चन्द्रजी महाराज जो व्यक्ति की मुक्ति और मानव मात्र के प्रति करुणा के साथ ही एक स्वतन्त्र और राष्ट्रीय चेतना को अपने चिन्तन का अंग बनाये हुये हैं। उन्होंने जैन साधु बन कर देश का भ्रमण किया, देश की जनता को शाकाहारी बनाने का सद् प्रयत्न करते ही रहते हैं। ऐसे महापुरुष के दर्शन से ही लाभ होता है। अमृत वचनों के सुनने और समझने से तो निश्चय ही कल्याण होता है।

बामाई अमर सिंह तंवर
ए० डी० सी० महाराणा साहब
उदयपुर (मेवाड़)

प्रधान मंत्री
भारत सरकार
का सन्देश,

श्री सोलंकी—

सत्पुरुषों के जीवन चरित्र से जनता को प्रकाश मिलता है, जीवनोपयोगी शिक्षण मिलता है, जीवन संग्राम में जूझने के लिये बल और उत्साह भी मिलता है। जो मनुष्य अपने जीवन को पवित्र, प्रगति शील तथा बहुजन योग्य बनाना चाहता है। उसे चाहिये कि वह महापुरुषों के जीवन चरित्रों का गहरी दृष्टि से अध्ययन, मनन और चिन्तन करता हुआ उन महापुरुषों के गुणों को अपने जीवन में उतारने का प्रयत्न करे।

जैन मुनि प्रेम चन्द्रजी का संक्षेप में जीवन चरित्र से बड़ा ही लाभ होगा।

लाल बहादर शास्त्री

आस्था का मोती

तारक शिष्य श्री हीरामुनि "हिम कर" पदराड़ा,
जय बोलो ज्ञानी गुरुवर की।
पूज्य प्रेम चन्द्र प्रिय मुनिवर की…………
दर्शन कर सबजन सुख पावे।
सिंह वाणी को सुन हर्षा वे॥
मन मोहन सूरत है गुण कर की…………
मिथ्याडम्बर को नित दूर करे।
जीवन में समकित बीज भरे॥
जिन धर्म के प्रबल पैंगाम्बर की…………
तप तेज में आप निराले हैं।
पाखण्डियों के मद गाले हैं॥
हे गजानन्द शान्ति सुधा कर की…………
पंजाब केसरी पुण्य धारी।
और श्रमण संघ के सुख कारी॥
कहे हीरामुनि, मुनि हित कर की………

चन्डी गढ़ पंजाब

आज विश्व की मानवता को भगवान् महावीर जैसी दिव्यात्माओं का परम सन्देश ही प्राण दिला सकता है। मैं इस महान दिवस पर भगवान् के प्रति विनम्र श्रद्धांजलि समर्पित करता हुआ प्रत्येक देशवासी से आग्रह करता हूँ कि इस महापुरुप द्वारा प्रवर्तित अहिंसा अनेकान्त एवं अपरिग्रह आदि सिद्धान्तों पर आचरण करें तथा इस दिशा में विश्व का निर्देशन करें। ऐसे ही महात्मा पंजाब केसरी मुनि प्रेमचन्द्र जी का जीवन है इनके उपदेशों से बड़ी प्रेरणा मिलती है। श्री सोलंकी ने जो संक्षेप में जीवन चरित्रमय उपदेश की वार्ता को लेकर प्रकाशित किया है वह सराहनीय है।

प्रताप सिंह
मुख्य मंत्री, पंजाब

जैन भूषण पंजाब केसरी श्री प्रेम चन्द्रजी महाराज एक प्राचीन संस्कृताचार्य के शब्दों में वज्र से भी अधिक कठोर है तो पुष्प से भी अधिक कोमल हैं 'वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि।'' जो भी व्यक्ति जैन भूषणजी के निकट परिचय में आता है वह भूषणजी के सहज निर्मल प्रेम से आप्लावित हो जाता है। उनके हृदय में स्नेह का सागर ठाठें मारता नजर आता है और वे अपने संयम सिद्धान्त एवं अनुशासन की दृष्टि से कठोर भी महाति महान हैं अपने निर्मल चरित्र के लिये संघ में एक महान् यशस्वी सन्त है।

जैन भूषण जी वाणी के देवता है उनके ओजस्वी प्रवचनों का जन समूह पर वह प्रभाव पड़ता है कि श्रोता मंत्र मुग्ध हो जाते हैं। पंजाब राजस्थान, उत्तर प्रदेश, गुजरात और महाराष्ट्र आदि दूर-दूर तक के प्रदेशों में विचरण कर आपने भारतीय धर्म और दर्शन के आधार पर जन जीवन को जो अध्यात्मिक उपदेश दिया है वह युग-युग तक चिर स्मरणीय रहेगा। आप पर सन्त परम्परा को सात्विक गौरव है कि उसमें आप जैसे एक महान प्रभावशाली आचार निष्ठ सन्त है।

श्री जगदीश सिंह सोलंकी जैन भूषण जी का एक सुन्दर जीवन चरित्र जनता के समक्ष उपस्थित कर रहे हैं यह जानकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता है। महान् आत्माओं के जीवन चरित्र नैतिक प्रेरणा के मूल श्रोत है उनके द्वारा राष्ट्र के चरित्र का निर्माण होता है अन्धकार में भटकती जनता को दिव्य प्रकाश मिलता है। मैं आशा करता हूँ सोलंकी जी का यह सत्प्रयास शीघ्र ही सफल हो।

जैन स्थानक
मान पाडा आगरा
४ अप्रैल १९६७

उपाध्याय अमर मुनि

उप मंत्री
पंजाब सरकार
चन्डी गढ़

माई डियर चौधरी साहब

महात्मा प्रेमचन्दजी पंजाब के जैन ऋषियों में, सुधारकों में, श्रेष्ठ पुरुषों में एक हैं। ऐसे विद्वान् पुरुष से सैनी जाति को भी गौरव है।

आपके जीवन का प्रभाव जैन, अजैन मानव पर पंजाब प्रान्त में बहुत अधिक है। लेकिन गुजरात-राजस्थान प्रान्त तो बड़ा ही प्रभावित हैं।

महाराजश्री प्रेमचन्दजी का परिचय प्रकाशित हुआ है जिसको जाति के युवा, वृद्ध, बालक, बालिकाएं अध्ययन कर लाभ उठाये यही मेरी शुभ कामना है।

सन्त साधु सिंह

मुझे इस छोटी सी पुस्तक में महात्मा जैन मुनि श्री प्रेमचन्द्रजी के जीवन का परिचय अध्ययन करने से मेरी विचारधारा ही बदल गई। सोये हुए पूर्वजों के स्वाभिमान को जागृत करने वाली यह पुस्तक अद्वितीय है। सैनी जाति के गौरव को संसार के सामने प्रकाश में लाने वाली पुस्तक है। प्रत्येक जाति भाई को इसका अध्ययन करना ही श्री सोलंकी जी के परिश्रम को सफल करना है और अपने पूर्वजों के गौरवता की प्रेरणा लेना है।

प्रेम सिंह सैनी
मियूनीसिपल कमिश्नर
देहरादून

पंजाब केसरी श्री प्रेम चन्द्र जी म० स्थानक वासी जैन समाज के मूर्धन्य मनीषी मुनिराज है और प्रतापपूर्ण प्रतिमा सम्पन्न प्रवक्ता है, सन्त संस्कृति के सजग प्रहरी है, आचार और विचार के संगम स्थल है उनके व्यक्तित्व और कृतित्व के सम्बन्ध में कलम कलाधर श्री जगदीश सिंह जी सोलंकी ने प्रस्तुत

पुस्तक में प्रकाश डाला है। सोलंकी जी भावुक भक्ति पुस्तक की प्रत्येक पंक्ति में मुखरित हो रही हैं। यह अधिकार की भाषा में कहा जा सकता है कि पुस्तक श्रद्धालुओं के लिये अत्यन्त उपयोगी है।

देवेन्द्र मुनि शास्त्री, साहित्य रत्न
पदराडा (मेवाड)

पंजाव केसरी प्रेम चन्द्र जी महाराज की संक्षिप्त सारगर्भित जीवन रेखा पढ़ कर मन आह्लादित हुआ। सोलंकी जी ने एक बहुत ही सुन्दर कृति समाज को समर्पित की है।

पुस्कर मुनि
न्याय-साहित्यतीर्थ
पदराडा (उदय पुर)

"पंजाब केसरी" पुस्तक का अवलोकन कर मन मयूर थिरक उठा। यद्यपि पुस्तक का कलेवर बहुत छोटा है। तथापि उसमें श्री युत सोलंकीजी ने गंभीर भावों की भावाभिव्यन्जना भर पुस्तक की उपा देयता विशेष बढ़ा दी है। इसमें कोई शक नहीं, प्रस्तुत पुस्तक पंजाव केसरी श्री प्रेमचन्द्र जी म० की उज्जवल जीवन रेखा को समझने में पूर्ण सहायिका बनेगी।

गणेश मुनि
शास्त्री, साहित्य रत्न
पदराडा (मेवाड)

मेरी दृष्टि में—

जैन धर्म दिवाकर, साहित्य रत्न, जैनागम रत्नाकर, आचार्य सम्राट परम श्रद्धेय पूज्य श्री आत्मा रामजी महाराज के सुशिष्य श्री ज्ञान मुनि जी द्वारा—

लुधियाना शहर के जैन स्थानक में सन्त हृदय श्री जगदीश सिंह सोलंकी पण्डित प्रवर श्रद्धेय श्री हेम चन्द्र जी महाराज के दर्शनार्थ आए। उस समय समय ये मुझसे भी मिले। वार्ता लाप के अनन्तर यह ज्ञात हुआ कि आप

जाति के सैनी हैं और सैनी जाति की उन्नति एवं प्रगति के लिये यथाशक्य प्रयत्न कर रहे हैं। इस सम्बन्ध में इन्होंने साहित्य का सृजन भी किया है। इनकी लिखी महाराष्ट केसरी महात्मा "श्री ज्योतिराव फुले का चमत्कारी जीवन" नामक पुस्तिका मैंने आद्योपान्त पढ़ी। इस पुस्तिका में इन्होंने सैनी जाति के एक सुप्रसिद्ध, जाति सेवक महात्मा श्री ज्योतिराव फुले की सामाजिक तथा राष्ट्रिय सेवाओं का परिचय कराया है। १८ शताब्दी में सामाजिक तथा राष्ट्रिय उत्थान के पवित्र कार्य में महात्मा ज्योतिराव फुले ने अपना जीवन न्यौछावर कर दिया था। इसी उदार हृदय, जाति सेवक महात्मा के जीवन वृतान्तों का सोलंकी जी ने अपनी उक्त पुस्तिका में उल्लेख किया है। सोलंकी जी की इस जातिय समुत्थान की सामायिक एवं निष्काम भावना को देख कर बरवस यह दोहा मेरी रसना पर नाचने लगा—

निज भाषा, निज जातिका, जो चाहे उत्थान।
"ज्ञान मुनि" सत्य जान लो, वह सच्चा इन्सान॥

साहित्य प्रेमी श्री जगदीश सिंह जी सोलंकी अब श्रद्धास्पद पंजाब केसरी जैन भूषण श्री स्वामी प्रेम चन्द्र जी महाराज का जीवन परिचय प्रकाशित कर रहे हैं। सोलंकी जी का यह प्रकाशन कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण प्रमाणित होगा, ऐसा मेरा विश्वास है। इस प्रकाशन का पहला लाभ यह होगा कि इससे सैनी जाति के एक महापुरुष का संसार को परिचय प्राप्त होगा। श्रद्धेय पंजाब केसरी जैन भूषण श्री प्रेम चन्द्र जी महाराज सैनी जाति में उत्पन्न हुए हैं।

ये महा पुरुष सैनी वंश की एक आदरणीय दिव्य विभूति हैं। नालागढ़ रियासत के दभोटा नामक ग्राम के सैनी राजपूत परिवार में माननीय चौधरी श्री गेन्दामलजी की धर्मपरायण धर्म पत्नी श्रीमती साहब देवी जी की पवित्र कुक्षि से श्रद्धेय महाराजश्री का जन्म हुआ। महाराजश्री जी अध्यात्मजगत के शिरोमणि सन्तों में से एक हैं त्याग, वैराग्य, जप, तप के महान आराधक एवं उपासक मुनिराज हैं श्री वर्धमान स्थानक वासी जैन श्रमण संघ के एक

सुप्रसिद्ध प्रतिष्ठित मुनिवर है। विश्व मैत्री तथा विश्व कल्याण की पावन भावनाओं से भावित उपदेशों के निर्मल स्रोत हैं। महाराजश्री के सूर्य के समान चमकते हुए इस आध्यात्मिक व्यक्तित्व को निहार कर अन्तकरण का कण-कण वोल उठता है—

सैनी जाति ! तू धन्य है, तूने अहिंसा सत्य के पावन सन्देश वाहक को जन्म देकर आध्यात्मिक जगत पर वह अपूर्व उपकार किया है, जिसका वदला यह मानव जगत कभी चुका नहीं सकता ।

श्री सोलंकी जी के इस प्रकाशन का दूसरा लाभ तो वड़ा विलक्षण है। इस प्रकाशन से सैनी जाति के सपूत द्वारा की गई आध्यात्मिक जगत की अध्यात्म सेवा की लोगों को जानकारी प्राप्त होगी। श्री सोलंकी जी ने अपने ज्योतिराव फुले का चमत्कारी जीवन" इस पुस्तिका के द्वारा महात्मा ज्योति-राव की सामाजिक तथा राष्ट्रिय सेवाओं का उल्लेख किया है। एक युग था जब महाराष्ट्र में नारी जाती की वड़ी दुर्दशाथी, इसकी स्वतन्त्रता को समाप्त कर दिया गया था। विधवा होने पर स्त्री के वाल काट कर उसे वलात् रूण्ड मुण्ड वना दिया जाता था। उस समय अन्य अनेक विविध अत्याचार भी नारी जाति पर किये जा रहे थे। अधिक क्या कहें, नारी जीवन के विकास का उसे कोई अवसर नहीं दिया जा रहा था स्त्री शिक्षा की वात भी कोई सुनने को तैयार नहीं था ऐसे अन्धकार पूर्ण युग में क्रान्तिकारी महात्मा ज्योतिराव फुले ने क्रांति का विगुल वजाया, नारी जाति के विकास एवं उन्नयन का आन्दोलन चला कर लोगों को सत्पथ अपनाने की सामजिक प्रेरणा प्रदान की। विधवा नारियों के मुंडन का खंडन करके उनके साथ हो रहे अमानुपिक व्यवहार एवं वलात्कार को सदा के लिये समाप्त किया। दृढ़ साहसी महात्मा ज्योतिराज ने स्त्री शिक्षा वुद्धि संगत एवं शास्त्र सम्मत आन्दोलन के द्वारा नारी जाति को विद्या एवं ज्ञान के मोतियों से मालामाल करने में पूर्ण सफलता प्राप्त की। इस प्रकार क्रान्तिकारी ज्योतिराव फुले ने अपने अनवरत तुप्रयत्नों द्वारा समाज एवं राष्ट्र

की तात्कालिक एक विकट समस्या को सुलझाने में बहुत सुन्दर एवं प्रशंसनीय योग दान दिया।

श्री सोलंकी जी ने महात्मा ज्योतिराव फुले का जीवन परिचय लिख कर यह प्रगट करने का सुन्दर प्रयास किया है कि सैनी वंश की विभूतियों ने भी राष्ट्रिय उन्नति में अपना पूरा सहयोग दिया है। जब भी कभी समाज और राष्ट्र के उत्थान के लिये समाज और राष्ट्र ने सेवाओं की आवश्यकता अनुभव की तब ही सैनी जाति के वीर सपूतों ने अपनी सेवाऐं प्रस्तुत करदी। देश और जाति के निर्माण एवं कल्याण की सहायता से सैनी जाति ने कभी मुख नहीं मोडा।

"पंजाब केसरी श्री का जीवन परिचय" लिख कर श्री सोलंकी जी ने यह प्रमाणित करने की कोशिश की है कि सैनी वंश की विभूतियों ने सामाजिक तथा राष्ट्रीय समस्याओं को सुलझा कर जहां समाज एवं राष्ट्र की अमूल्य सेवाऐं की है वहां यह सैनी वंश आध्यात्मिक जगत की सेवाओं में भी किसी से पीछे नहीं रहा हैं। इस वंश ने समाज को ऐसे विराट हृदय एवं विचारक सन्त दिये हैं जो विश्व कल्याण का ध्वज लेकर संसार के कौने-कौने में पाद भ्रमण करते हैं संसार को अहिंसा सत्य एवं सदाचार का अमृत पिलाकर उसके भविष्य को उज्जवल एवं समुज्जवल बना रहे हैं। इसका जीवित प्रमाण सैनी वंश के चमचमाते सूर्य श्रद्धास्पद पंजाब केसरी जैन भूषण वन्दनीय श्री स्वामी प्रेम चन्द्र जी महाराज हैं। जैन भूषण जी सैनी समाज के एक समुज्जवल रत्न है, हीरे हैं जिन पर सैनी वंश के बच्चे-बच्चे को महान गौरव है।

पंजाब केसरी श्री प्रेमचन्द्र जी महाराज बड़े मनीषी सन्त हैं दीर्घ दर्शी होने के साथ-साथ बड़े त्यागी वैरागी सन्त हैं। आपने आध्यात्मिक जगत की वे सेवाएं की है जो आध्यात्मिक संसार में सदा संस्मरणीय रहेगी। आपश्री आधुनिक युग के एक जाने माने प्रवक्ता है, प्रवचनकार है, कथा वाचक हैं। जब बोलने लगते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है मानो आपकी रसना पर भगवती सरस्वती का वास हो रहा है। आपश्री की वक्तृत्व शक्ति विलक्षण है उसमें ओज है,

गाम्भीर्य है, वैयक्तिक पारिवारिक सामाजिक तथा राष्ट्रिय उलझी समस्याओं का एक अद्भुत प्यार भरा समाधान है, लोक और परलोक के सुधार का उज्जवल एवं समुज्जवल मार्ग दर्शन है।

श्रद्धेय पंजाब केसरी श्री स्वामी प्रेम चन्द्र जी महाराज की भाषण शैली अनूठी है, अनुपम है अद्वितीय है, संगीत तथा हास्य रस का संगम पाकर वह निखर उठती है जन-मानस को आनन्द विभोर कर देती है। सैद्धान्तिक तथ्य तो मानों साकार होकर श्रोताजनों के सामने आते दिखाई पड़ते हैं, युक्तियों का ऐसा विलक्षण प्रवाह फूट पड़ता है कि श्रोताजनों की विचार तथा आचार सम्बन्धी छोटी-मोटी सभी आशंकाए उसमें विलीन हो जाती है। स्थानक वासी जैन श्रवण जगत के मनोनीत नेता मेरे परम श्रद्धेय गुरुदेव जैन धर्म, दिवाकर, साहित्य रत्न, जैनागम रत्नाकर आचार्य सम्राट पूज्य श्री आत्माराम जी महाराज कभी-कभी पंजाब केसरी के संबन्ध में स्वयं फरमाया करते थे। वे कहा करते थे कि मेरी सम्प्रदाय में पंजाब केसरी प्रेम चन्द्र जी जैसा व्याख्याता अन्य कोई सन्त नहीं है। मुझे इनकी वक्तृत्व कला पर महान गौरव है।

श्रद्धेय पंजाब केसरी श्री स्वामी प्रेम चन्द्र जी महाराज जैन साधु होने के कारण एक घुमक्कड़ सन्त हैं। चातुर्मास काल को छोड़ कर शेप काल में छोटे बड़े ग्रामों एवं नगरों में इनको विचरण करना पड़ता है। कई बार ऐसे स्थानों पर जाना पड़ता है जहाँ के निवासी लोग पूर्णतया माँसाहारी एवं मदिरा सेवी होते हैं। यह तो संसार जानता है कि अंधकार और प्रकाश का कभी सान्निध्य नहीं होता। जैसे अन्धकार और प्रकाश का कभी मेल नहीं होता वैसे साधुओं और मांसाहारी लोगों का कभी मेल नहीं होता। माँस मदिरा पर पत्नी गमन आदि कुव्यसनों के पुजारी लोग तो साधुओं के नाम से ही बिदकते हैं, भागते हैं। पर यह विना किसी संकोच के मैं कह सकता हूँ कि श्रद्धेय पंजाब केसरी श्री प्रेमचन्द्रजी महाराज की सरस, मधुर और प्यार भरी वाणी ने वे चमत्कार दिखलाए जिन्हें देख सुन कर मनुष्य आश्चर्यचकित हुए विना नहीं रहता। ऐसे-

ऐसे मांसाहारी और मदिरा सेवी व्यक्ति जिनको साधु के दर्शन मात्र से
थी वे भी इनकी वाणी-वीणा के मधुर स्वर सुन कर झूम उठे इनके वि
बन गये, मांसाहार मदिरा सेवन आदि कुव्यसनों का परित्याग करके
परिपूत चरणों के सदा के लिये दास बन गए। इस "चमत्कारी" एवं क
कारी जैन सन्त की आध्यात्मिक सेवाओं का कहाँ तक वर्णन करूं इस
पुरुष की चरणरज से मस्तक को पावन करने वाले तथा इनकी आध्याि
सेवाओं से आनंद विभोर होने वाले भक्तजनों के कण्ठों पर गूंजते हुए
स्वरसुनाई पड़ते हैं—

धन्य मात अरु तात है, धन्य वंश सुखकार।
धन्य भूमि अरू जाति है, जिसके हो तुम लाल ॥

सन्तों के परम भक्त श्री सोलंकी जी ने पंजाब केसरी श्री प्रेमचन्द्र महाराज का जीवन परिचय लिख कर सैनी वंश की पुण्य विभूतियों द्वारा गई आध्यात्मिक सेवाओं की जानकारी कराकर सैनी वंश तथा आध्याि जगत पर बड़ा उपकार किया है। इनके इस बुद्धि शुद्ध प्रयास के लिये इन सप्रेम धन्यवाद।

पंजाब केसरी श्री प्रेम चन्द्र जी महाराज का जीवन परिचय प्रकाि होने का तीसरा लाभ भी उपेक्षित नहीं किया जा सकता। इस जीवन परि से भारतीय अध्यात्म परम्परा की एक सम्माननीय जैन परम्परा के श्र साधक की अध्यात्म साधना का साधक जगत को ज्ञान प्राप्त होगा। जैन श्र की कठोर संयम साधना का संसार लोहा मानता है। जैन सन्तों के वि विधानों को जीवन में उतारना बच्चों का खेल नहीं है। संसार की मोह-मा से सर्वथा उपराम तथा परम जितेन्द्रिय व्यक्ति ही इस विकट साधना के मह पथ पर चल सकता है, जैन साधु जर, जोरू और जमीन का त्यागी होता जीवन भर घोड़ा, मोटर, रेलगाड़ी आदि किसी भी सवारी का प्रयोग न करता सदा नंगे सिर और नंगे पांव रहता है यात्रा पैदल करता है। साधु निमित्त भोजन बना हो वह नहीं लेता गर्भवतीस्त्री को उठने-बैठने से क

होता हो तो उससे तथा गोदी का बालक दुग्धपान कर रहा हो उसका दूध छुड़ा कर भोजन नहीं लेता कच्चे पानी तथा हरी सब्जी का स्पर्श हो रहा हो तो भोजन नहीं लेता आदि बातों का ध्यान रख कर भिक्षा ग्रहण करता है किसी हरि या सचित्त सब्जी का जीवन भर उपयोग नहीं करता सदा सत्य बोलता है मालिक की बिना आज्ञा तिनका तक नहीं लेता ब्रह्मचर्य की आराधना करता है नव जात बालिका का भी स्पर्श नहीं होने देता रुपया, पैसा, सोना, चांदी आदि सभी धातुओं तथा धातुओं से बनी वस्तुओं का परित्याग करता है सूई तक अपने पास नहीं रखता जायदाद, सम्पत्ति मठ आदि से कोई सम्बन्ध नहीं रखता न पैसे की टिकट अपने पास रहने देता रात को अन्नजल का सर्वथा परित्याग कर देता है खाना पीना सब कुछ दिन में ही करता है सिर के और डाढी के केशों का हाथों से लोच करता है नाई से बाल मुण्डवाने का कोई काम नहीं करता इस प्रकार के अन्य भी अनेकों नियम, उपनियम हैं जिन्हें जैन साधु अंगीकार करता है। इसके अलावा मुख से निकलने वाले उष्ण वायु से बाहर की वायु के जीवों का घात न हो जाय इस विचार से मुख पर वस्त्रिका (एक प्रकार का वस्त्र खण्ड) धारण करता है। रात को चलते समय जीवों की रक्षा के लिये अपने पास सदा रजोहरण रखता है।

उदार हृदय श्री सोलंकी जी ने पंजाब केसरी श्री का जीवन परिचय लिख कर जैन श्रमण की अध्यात्म साधना तथा उन त्याग वैराग्य प्रधान नियम उपनियमों का पाठक वर्ग को बोध कराने का एक आदरणीय एवं स्तुत्य प्रयास किया है। अपने प्रयास में ये पूर्णतया सफल हों यही हार्दिक मंगल कामना है।

"पंजाब केसरी श्री का जीवन परिचय" को तीन भागों में बांटा जा सकता है। प्रथम भाग में श्री सोलंकी जी के अपने निजी विचार हैं। दूसरा भाग जैन जगत के श्रद्धास्पद विचारक मुनिराज पंडित प्रवर उपाध्याय श्री अमर मुनि जी महाराज के सुशिष्य मेरे स्नेही श्री विजय मुनि जी शास्त्री

साहित्य रत्न का लिखा हुआ है। इसमें इन्होंने श्रद्धेय पंजाब केसरी के जीवन का बड़ी गम्भीरता के साथ चिन्तन किया हैं। प्रस्तुत जीवन परिचय का तीसरा भाग पद्य रूप का है इसका नाम है पंजाब केसरी पंडित प्रवर प्रेम चन्द्र जी महाराजाष्टकम। इसके निर्माता आचार्य प्रवर पंडित रत्न जैनागम महारथी श्रद्धेय पूज्य श्री घासी लाल जी महाराज हैं। आचार्य श्री ने इस अष्टक में श्रद्धेय श्री प्रेमचन्द्र जी महाराज के जीवन आचार विचार को लेकर काफी सुन्दर प्रकाश डाला है। इस अष्टक में जहाँ पंजाब केसरी श्री के विराट संयमी जीवन की झांकी प्राप्त होती है। वहाँ श्रद्धेय श्री घासी लाल जी महाराज का संस्कृत भाषा सम्बन्धी "सौष्ठव" भी सुचारू रूप से उपलब्ध होता है। उक्त तीनों विभागों द्वारा श्रद्धेय पंजाब केसरी श्री की जीवन झाँकी प्रस्तुत की गई है। यह झाँकी भाव भाषा तथा शैली सभी दृष्टियों से सुन्दर बनी है। इसके पीछे हमारे धर्म स्नेही सन्त भक्त श्री जगदीश सिंहजी सोलंकी ब्यावर निवासी का प्यार भरा परिश्रम ही काम कर रहा है। इस निष्काम परिश्रम के लिये इनको एक बार फिर धन्यवाद।

ज्ञान मुनि

प्रिय सोलंकी जी,

आपका दिनांक २६-६-७३ का कृपा पत्र मिला। धन्यवाद पंजाब केसरी प्रेमचन्द जी म० स्थानकवासी' का जीवन एक सन्त, एवं संस्कृति के सजग प्रहरी व महान पुरुषों का सा रहा है। समाज के लिए व देश के लिए ऐसे पुरुष सदैव स्मरण किए जाते रहेंगे आपने इस प्रकार की पुस्तक में उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाल कर जिज्ञासुओं व पाठकों के लिए एक उपयोगी कार्य किया है। इस शुभ कार्य के लिए मेरी बधाई स्वीकार कीजिए।

पुन: धन्यवाद सहित

आपका
अचल सिंह

श्री जगदीशसिंह सोलंकी
C/o श्री मुल्कीराज जी सैनी
एम० पी०
१६३ साउथ ऐवेन्यू-नई दिल्ली

कारणवश स्थिरवास

करौंलबाग में लाला इन्द्र सेन ने महाराजश्री को ठीक समय पर दवाई आदि देने के लिये एक साधारण सा डाक्टर रखा पाँच सात दिन के बाद उसे छुट्टी दे दी क्योंकि उसका विशेष काम नहीं था। किन्तु रिक्खी डाक्टर कुछ दिनों तक दो तीन दिन में महाराजश्री को देखने आता रहा इन दिनों एक रात को साधू की गलती से पट्टा दिवार से दूर रहने के कारण महाराजश्री फर्श पर गिर पड़े जिससे महाराजश्री के छाती में तथा कई जगहों पर चोटें आई जिससे महाराजश्री को सारी रात दर्द में बितानी पड़ी दूसरे दिन डाक्टर ज्ञान चंद जैन को बुलाया गया उसने महाराजश्री की छाती पर पलस्तर लगाया और खाने की गोली दी कई दिनों के बाद महाराजश्री का यह दर्द उपशान्त हुआ इसके बाद महाराजश्री के पैरों पर सूजन आगई जिसे दूर करने के लिये रिक्खी डाक्टर ने पेशाब निकालने की गोली दी परन्तु उसने महाराजश्री को यह नहीं बताया कि इस गोली के साथ पानी अधिक पीयें जिससे यह गोलियां शरीर में और कोई व्याधि उत्पन्न न कर सकें। महाराजश्री कई दिनों तक यह गोली लेते रहे इससे पैरों की सूजन तो उतर गई किन्तु शरीर में पानी की कमी हो गई जिसके कारण महाराजश्री का शरीर एकदम कमजोर हो गया तथा मुंह सूखने लगा जीभ में काँटे से पड़ने लगे, भूख प्यास कम हो गई शरीर में बेचैनी रहने लगी इस पर रिक्खी डाक्टर को फिर बुलाया गया उसने बताया कि महाराजश्री के शरीर में पानी की कमी हो गई इसका कोई उपचार नहीं है। इसका उपचार तो यही है कि अस्पताल में लेजाकर ग्लुकोस चढ़ा कर पानी की कमी को दूर की जाय। इस पर महाराजश्री ने डाक्टर को उत्तर दिया कि मैं अस्पताल में नहीं जाता इसके बाद महाराजश्री के एक भगत हकीम मोतीराम को बुलाया गया जो कि रावलपिंडी में प्रेमवेजिटेरियन सोसायटी का प्रधान था। उन्होंने महाराजश्री को दवाई देनी आरम्भ की उनसे

महाराजश्री को कुछ शान्ती मिली परन्तु पूर्ण स्वास्थ्य लाभ तब भी न हो सका फिर रामभारती वैद्य को बुलाया गया उसकी दवाई लेने से महाराजश्री को कुछ आराम मिला और आहार पानी की रूचि होने लगी इसके बाद यहां की बिरादरी ने महाराजश्री के स्वास्थ्य लाभ की खुशी में एक समारोह का आयोजन किया। जिसमें महाराजश्री चतुर्विध संघ के सन्मुख ओपरेशन आदि बिमारी के दिनों में जो दोष लगे हैं उनकी आलोचना करना चाहते हैं और प्रायश्चित लेना चाहते हैं।

महाराजश्री का यह सिद्धान्त था कि जो भी दोष लगे वह चतुर्विध संघ के सामने प्रकट करना चाहिये महाराजश्री ने तो दशवे कालिक सूत्र के इस पाठ को अपने जीवन में आत्मसात् कर रखा था "सेभिक्खूवा, भिक्खुणिवा, संजय विरयपडिहय पच्चक्खाण पाव कम्मे दिवा वा राओ वा, एगआवा, परिसागओवा, सुत्ते वाजागर माणेवा" महाराजश्री का कथन था कि साधु का जीवन तो खुली चादर के समान होना चाहिये, कोई बात परदे में नहीं रहनी चाहिये जो अपने जीवन के लिए घातक हो। ठाणाँग सूत्र के तीसरे ठाणे में लिखा है कि साधु अपने पर लगे दोषों की आलोचना तीन कारणों से नहीं करता इनमें पहला कारण है कि इस समय तो लोगों में मेरी प्रतीष्ठा विद्यमान है और सर्वत्र लोग मेरा यशोगान करते हैं किन्तु यदि मैंने उनके सन्मुख अपने दोषों को प्रकट कर दिया तो मेरी प्रतिष्ठा को आघात लगेगा और वे मेरा पहले के समान आदर सम्मान नहीं करेंगे।

दूसरे कारण से इसलिये आलोचना नहीं करता कि अभी तो फिर मैंने इस दोष को सेवन करना है अतः इसको आलोचना क्या करूँ ?

तीसरे कारण से साधु इसलिये आलोचना नहीं करता कि मैं बार-बार अपनी आलोचना क्यों करूं जबकि पक्खी चौमासीया संवत्सरी को अपनी आलोचना करनी ही है।

कुछ साधुओं का ऐसा ख्याल है कि अपनी संप्रदाय में कोई नई चीज

प्रारम्भ करने से दूसरी संप्रदाय पर इसका प्रभाव अच्छा नहीं होगा।

कुछ साधु ऐसे हैं जो समझते हैं कि मेरी संप्रदाय में कुछ लोग ऐसे हैं जो किसी वस्तु के विरोधी है और कुछ समर्थक हैं अतः वे साधु दोनों प्रकार के लोगों को प्रसन्न करने का प्रयत्न करता है। जैसे लुधियाना में उपाध्याय श्री आत्माराम जी महाराज के पंजाब संघ का आचार्य पद को देने के लिये समारोह हो रहा था उस समय गणी श्री उदयचंद जी महाराज का दिल्ली से पत्र आया कि इस समय साधु एकत्रित हो रहे हैं। अतः ध्वनि यंत्र खोल दिया जाय। इस पत्र पर साधुओं में विचारविमर्श हुआ इस पर और साधु तो सहमत हो गये परन्तु श्रीमदन लालजी महाराज ने कहा कि ध्वनि यंत्र पर बोलना प्रगट रूपमें सामने नहीं आना चाहिये इसका अर्थ यह हुआ कि पर्दे में लगाया जाय इसका परिणाम यह निकला भाईयों ने ध्वनि यंत्र को पर्दे में लगा दिया जैसे आचार्य श्री आनन्द ऋषि महाराज स्वयं ध्वनि यंत्र पर नहीं बोलते किन्तु दूसरे साधु जब उनका स्वागत करने के लिये ध्वनि यंत्र पर बोलते हैं। तथा जब आचार्य श्री खड़े होकर व्याख्यान फरमाते हैं तो गृहस्थी लोग ध्वनि यंत्र को कपड़े में लपेट कर उनके सिर के ऊपर शमियाने में लटका देते हैं ऐसा देखने में आया। जब ध्वनि यंत्र पर बोलने का परहेज है तब ऐसे विशाल जनसमूह में क्यों भाग लिया जाय महाराजश्री ऐसी बातों को परदे में रखने के समर्थक नहीं थे।

महाराजश्री का अन्दर बाहर एक समान सिद्धान्त था एक बार महाराजश्री जालन्धर से लुधियाना आरहे थे फगवाड़े और फलौर के बीच में अट्टा नाम का ग्राम है यहाँ ज्ञान मुनि विराजमान था उसने महाराजश्री से अर्ज किया कि आप कुछ राजनीति का प्रयोग भी किया करें जिससे लोग नाराज न हों महाराजश्री ने फरमाया कि मैं इसका विरोधी हूँ। महाराजश्री के स्वास्थ्य लाभ की खुशी में बहुत से श्रावक और श्राविका बोली इसके बाद साध्वियाँ बोली तथा साधुओं में सुशिल मुनि, सुमित्र मुनि, आदि साधु बोले

इसके बाद महाराजश्री ने संघ के सन्मुख अपने विचार रखते हुए फरमाया कि मेरा ओपरेशन हुआ जिसमें यह ख्याल था कि महाराजश्री को पाँच सात रोज में छुट्टी मिल जायेगी परन्तु मेरे को दिल का दौरा पड़ गया। दौरा भी जबरदस्त पड़ा जिससे कि मुझे एक महीने से ज्यादा अस्पताल में रहना पड़ा अस्पताल में इलाज करवाने वाले को तो दोष लगता ही है। मरीज के पथ पानी के लिये भी दोष लगता है और किसी कारण वसात मेरे को ऐम्बूलेन्स में लाया गया। में तो अपवाद लगाना नहीं चाहता था परन्तु यह अपवाद मेरे को लगा। अस्पताल का वातावरण साधु के लिये अनुकूल नहीं होता इसलिये मैं सब लोगों की साक्षी से चार महीने का दीक्षा छेद लेता हूँ। इसके बाद चौमासे लगने के बाद व्याख्यान शुरू किया। विविध प्रकार के विषयों पर महाराज श्री ने व्याख्यान शुरू किया। महाराज ने फरमाया कोई भी जीव ६ बातों का गति जाति तिथि अवगाहना अनुभाव प्रदेश ६ निध्दत रूप ६ निकाचित रूप बारह एक जीव आस्त्री, बारह अनेक जी व आश्री, चौबीस हुये चौबीस नीच गौत्र के २४ ऊंच गौत्र के यह ७२ हो गये ७२ को २५ से गुणा करें तो १८०० हो गये। भगवती सूत्र के छठेशतक के तीसरे उद्देशे में कर्म बन्ध का स्वरूप इस तरह है।

अहो भगवन् क्या महाकर्मी, महा क्रिया वन्त, महा आश्रवी महावेदनावंत जीव के सब दिशाओं से कर्म पद्गल आकर आत्मा के साथ बन्धते हैं ? चय उपचय होते हैं ? उन कर्मों के मैल से आत्मा निरन्तर दुरूप पने दुवराणंदि १७ बोल मलीनपने बारम्बार परिणमते है ?

१७ बोल इस प्रकार है—

१. दुरूपपने (खराब रूपपने)
२. दुर्वर्ण पने (खराब वर्ण पने)
३. दुर्गन्ध पने, ।
४. दुररूपपने ।

५. अनिष्ट पने ।

६. अकान्त पने ।

७. असुन्दर पने ।

८. अपथपने ।

९. अशुभपने ।

१०. अमंगल पने (जो मन को सुन्दर न लगे) ।

११. अमनामपने (मन में स्मरण करने मात्र से ही जिस पर अरुचि पैदा हो) ।

१२. अटनच्छिलपने (अनभिप्सिपने) जिसको प्राप्त करने की इच्छा ही न हो ।

१३. अभिज्झियतपने (जिसको प्राप्त करने का लोभ भी न हो)

१४. अहताए (जघन्यपने भारीपने)

१५. णोउड्ताए-उर्ध्वपनें नहीं (लघू पने नहीं)

१६. दुखताए दुःख पने ।

१७. णो सुहताए सुखपने नहीं ।

हाँ गौतम बंधता है यावत् परिणमता है ।

अहो भगवन् इसका क्या कारण है ?

हे गौतम जैसे नये कपड़े को हमेशा पहनने से काम में लाते रहने वस्त्र मैला मलीन हो जाता है । इसी तरह आत्मा भी १८ पापों में करता हुआ जीव कर्मों के मैल से मलीन होता है ।

अहो भगवन् क्या अल्प कर्मी अल्प क्रियावंत अल्पआश्रवी अल्प वेदनावंत जीव के कर्म सदा आत्मा से अलग होते हैं ।

छेदन होते हैं ? भेदन होते हैं ?

हां गौतम होते हैं !

अहो भगवन् इसका क्या कारण है ?

हे गौतम जैसे मलीन वस्त्र को धोने से मैल कट कर वस्त्र उजला सफेद हो जाता है यावत् सुरूप सुर्वणादि में १७ बोल शुभ पने परिणमते है। इसी तरह जीव तप संयम ध्यानादि से कर्मों को छेदते भेदते क्षय करते हैं। यावत सुरूप सुवर्णादि १७ बोल शुभपने परिणमते हैं।

अहो भगवन् वस्त्र के पुदगलों का जो उपचय होता है। क्या वह प्रयोग से (पुरुप के प्रयत्न से) होता है ? या स्वभाविक रीति से होता है ?

हे गौतम प्रयोग से भी होता है और स्वभाविक रीति से भी होता है।

अहो भगवन् जिस तरह वस्त्र के प्रयोग से और स्वभाविक रीति से पुद्-गलों का जो उपचय होता है। यानि मैल लगता है। क्या उसी तरह जीवों के कर्मो का जो उपचय होता है वह प्रयोग से और स्वाभाविक रीति से दोनों रीति से होता है ?

हे गौतम जीव के कर्मो का उपचय प्रयोग से होता है। किन्तु स्वभाविक रीति से नहीं होता अर्थात् जीव के कर्म प्रयोग से लगते हैं स्वाभाविक रूप से नहीं लगते।

अहो भगवन् इसका क्या कारण है ?

हे गौतम जीवों के तीन प्रकार के प्रयोग कहे गये हैं।

१. मन प्रयोग।

२. वचन प्रयोग।

३. काया प्रयोग।

इन प्रयोगों से जीव कर्मो का वन्ध करता है एकेन्द्रिय में प्रयोग पावे एक काया प्रयोग, विकलन्द्रिय में प्रयोग पावे दो काया प्रयोग—वचन प्रयोग, पंचेन्द्रिय में प्रयोग पावें तीनों ही।

अहो भगवन् वस्त्रों के मैलेपन और कर्मों की स्थिति कितनी है ?

हे गौतम स्थिति आश्री चार भांगे हैं।

१. सादि सान्त (आदि अन्त सहित)

२. अनादि सान्त (आदि रहित अन्त सहित)

३. अनादि अनन्त (आदि अन्त रहित)

४. सादि अन्त (आदि है अन्त नहीं)

वस्त्र के मैल की स्थिति में भांगा पावे १ सादि सान्त) जीव के कर्मों की स्थिति में भांगे पावे ३ पहला तीसरा चौथा।

इर्या वही क्रिया की स्थिति में भाँगा पावे १ (सादि सान्त) भवी (मोक्षी) ईर्या वही जीवके कर्मों की स्थिति में भांगा पावे १ (अनादि सान्त) अभवि जीव (अमोक्षी) के कर्मो की स्थिति में भांगा पावे १ (अनादि अनन्त) किसी भी जीवों के कर्मों की स्थिति सादि अनन्त नहीं है। वस्त्र द्रव्य सादि सान्त हैं। जीव द्रव्य आश्री भांगे पावे चारों ही १ चारों गति के जीव. गतागत करते हैं। इसलिये सादि सान्त हैं। २ सिद्ध गति की अपेक्षा सिद्ध जीव सादि अनन्त है। ३ भव सिद्धिक लब्धि की अपेक्षा अनादि सान्त है। ४ अभव सिद्धिक जीव संसार की अपेक्षा अनादि अनन्त है।

अहो भगवान् कर्म कितने हैं ?

हे गौतम कर्म आठ हैं।

१. ज्ञाना वरणीय।
२. दर्शना वरणीय।
३. वेदनीय।
४. मोहनीय
५. आयुष्य।
६. नाम।
७. गोत्र।
८. अन्तराय।

अहो भगवान् कर्मो की बन्ध स्थिति कितनी कही गई है ?

हे गौतम ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, अन्तराय इन तीन कर्मो की जघन्य स्थिति अन्तमहूर्त की उत्कृष्ट ३०-३० कोडा-कोडी सागर की वेदनीय की जघन्य स्थिति दो समय की उत्कृष्ट ३०-३० कोडा-कोड़ी सागर की इन चारों कर्मो का अबाधा काल ३-३ हजार वर्ष का है मोहनीय की जघन्य अन्तमहूर्त की उत्कृष्ट ७० कोडा कोडी सागर की है। आबाधा काल ७ हजार वर्ष का है। आयु कर्म की स्थिति जघन्य अंतर्मुहूत की उत्कृष्ट ३३ सागर की बंधाश्री क्रोड पूर्व का तीसरा भाग अधिक, नाम कर्म और गोत्र कर्म की स्थिति जघन्य आठ महूर्त की उत्कृष्ट २० कोडा-कोडी सागर की अबाधा काल २ हजार वर्ष का।

यहां पर महाराजश्री का व्याख्यान चालू रहा और पर्यूषण पर्व आगए जिसमें अन्तगढ सूत्र लगाया सूत्र सुनने के लिये बाहर से भी भाई हजारों की संख्या में आते रहे यह अन्तगढ़ सूत्र महाराजश्री अनुमान ५५ वर्ष तक सुनाते रहे परन्तु यह अन्तगढ़ सूत्र सुनाना आखरी है। यह पर्यूषण पर्व भी मनाने आखिरी है। यहाँ पर पर्यूषणों में प्रभावना भी होती रही। संवत्सरी को अन्तगढ़ समाप्त कर दिया गया तपस्या भी काफी हुई बाहर की जनता भी काफी आती जाती रही। महाराजश्री का व्याख्यान संवत्सरी के बाद भी चालू रहा। महाराजश्री अनुमानतः माघ महीने तक व्याख्यान देते रहे। इसके बाद महाराजश्री की छाती में दर्द होना शुरू हो गया उसका उपचार चलता रहा परन्तु महाराजश्री को कोई आराम नहीं हुआ जिससे व्याख्यान न दे सके।

यहां पर पंजाब कान्फ्रेन्स के सदस्य आये उन्होंने महाराजश्री से विनती की कि हम आचार्य आनन्द ऋषि महाराज की सेवा में गए थे। हम लोगों ने प्रवत्तक के लिए आपका नाम लिया था उसके बाद आचार्यश्री ने आपके नाम की घोषणा कर दी वहाँ से आते समय हम आचार्यश्री को आपको मनाने का विश्वास देकर हैं इसलिए हम आपके पास आए हैं। महाराजश्री ने उत्तर दिया मैं बीमारी आये की हालत में कहीं आ जा नहीं सकना न संयम मर्यादा के लिये मैं किसी से

आग्रह कर सकता हूँ। मैं यहां वैठा हूँ साधु पंजावमें विचर रहे हैं। उन्होंने कहा हम आपकी आज्ञा का पालन आपके यहीं रहते ही करवायेंगे महाराजश्रीनेउनके वहुत आग्रह करने पर फरमाया तुम साधुओं के पास जाओ जैसा वह तुमको कहें वैसी सूचना मुझे देना इसलियेमैं एक तरफा फैसला नहीं दे सकता मैं आपकी विनती मानता हूँ तुम पंजाब में ही मुख्य-मुख्य साधुओं का सम्मेलन वुला लो जिस तरह साधुओं में एक राय हो करके संयम की वृद्धि करें। आगे इस समय मैं रोग की हालत में हूँ। भाईयोंने कहा सम्मेलन वुलाना, आपकी आज्ञा मनवाना, यह हमारा काम है। इसके वाद महाराजश्री के कहने पर लोग चले गये। इसके वाद समूह रूप से आकर कोई सूचना नहीं दी गई अतः महाराजश्री ने न तो आचार्य श्री के पास अपनी स्वीकृति भेजी, न अपने को कमी प्रवर्तक लिखवाया। हां जिन साधुओं ने आज्ञा मंगाई उनको आज्ञा दे दी। इसके वाद महाराजश्री ने किसी को कुछ नहीं कहा। कि आज्ञा मंगाने न मंगाने का कोई किसी प्रकार का आग्रह नहीं था। महाराजश्री को तो किसी अधिकार की इच्छा ही नहीं थी। महाराजश्री की यह तो इच्छा थी कि साधु संयम और अपनी मर्यादा में रहे। आज्ञा किसी की भी मंगाओ।

महाराजश्री को तकलीफ चलती रही इसके वाद डाक्टर मोहन लाल शर्मा को एक भाई लाए जिसने महाराजश्री को गोली देने को लिखवाई उन गोलीयों के लेने से महाराजश्री को वेचैनी हो गई दर्द तो कुछ कम हुआ रात दिन वहुत तकलीफ रहने लगी। डाक्टर को खवर पहुँचाई कि तकलीफ से वेचैनी हो रही है गोली को वदलना चाहिये या नहीं? डाक्टर शर्मा ने उत्तर दिया गोली लिए जाये। तकलीफ की कोई परवाह नहीं की। गोली लेना महाराजश्री के कर्म उदय में आने की निमित्त वना जिसके कारण महाराजश्री को पेट दर्द, मैदे में दर्द, जिगर में दर्द, शरीर में दाह, हो गई जवान व गले में कांटे पड़ने लगे रात दिन वेचेनी रहने लगी, खाने की रूचि नहीं रही। इसके वाद महाराजश्री को टट्टी की कब्ज रहने लगी। वहुत रोगों की उत्पत्ति हो गई शर्मा की गोली दुःख उत्पत्ति का कारण वन गयी। इसके वाद हाकिमराय हकीम को वुलाया गया उसने महाराज को देख कर कहा महाराजश्री का जिगर वढ़ गया है टट्टी

आने की जगह खराब हो गई वह मल नहीं छोड़ती अन्तडियों में नुक्स आ रहा है। कुछ दिन हकीम की दवाई दी गई परन्तु कोई आराम नहीं आया, फिर दूसरे वैद्य रामभारती की दवाई की महाराज को कोई आराम नहीं हुआ इसके बाद लाला सरदारी लाल के सुपुत्र सुशील एक वैद्य को लाए वैद्य ने दवाई देनी शुरू की उसने टट्टी आने की दवाई भी दी टट्टी आनी तो शुरू हो गई परन्तु तकलीफ में कोई फर्क नहीं पड़ा उससे कहा बिना दवाई के टट्टी आये तो ठीक है महाराज को कमजोरी आती जा रही है। उसने कहा टट्टी में पानी सा आने लगेगा तब दवाई बंद करेंगे। अतः वैद्य महाराजश्री को जुलाब की दवाई देता रहा जिससे।

महाराजश्री को दिन रात में आठ-दस टट्टी पतली आने लगी कमजोरी इतनी बढ गई कि स्वयं अपने आप उठने बैठने से मजबूर हो गए। इसके बाद तीन चार वैद्य इकट्ठे बुलाए गये उन्होंने जो दवाई तजवीज की वह भी अनुकूल नहीं रही। इसके बाद होमियो पैथिक डाक्टर को बुलाया गया दो तीन दिन दवाई ली पेट में अफारा होगया। जो भाई बुलाकर लाए थे उनको सूचना दी उसके बाद उसने कहा कि डाक्टर ज्ञान जो कहे वह करलो परन्तु किसी दवाई से भी कोई आराम नहीं हुआ। शर्मा डाक्टर को फिर बुलाया गया उसने महाराजश्री के पेट में पानी बताया उसने कहा महाराज को अस्पताल में ले जाओ महाराज ने जवाब दिया कि मैं अस्पताल में नहीं जाऊंगा इसपर उसने दवाई तजवीज की। दवाई तीन बार ली गई परन्तु मुआफिक नहीं आई, पेशाब निकालने की गोली लेते रहे उससे पेट में अफारा कम हो गया। इसके बाद एक हकीम बुलाया गया। उस दवाई के लेने से गैस होने लगी उल्टी भी आने लगी टट्टी न आने की तकलीफ फिर चल पड़ी फिर राम भारतीय वैद्य को बुलाया गया बीच-बीच में ज्ञान डाक्टर की दवाई लेते रहे राम भारतीय की दवाई से टट्टी आने लगी पेट भी कुछ हल्का हो गया खाने की भी कुछ रूचि हुई यह सिल सिला ३ महिने चलता रहा कुछ सुधार हुआ जिससे महाराज अपने आप उठने बैठने और घूमने भी लगे।

महाराजश्री ने उत्तराध्ययन के २०-२२ अध्ययन भूले हुए भी याद कर लिये इसके तीन चार महीने बाद महाराजश्री के पांव पर सूजन आई जिगर

मैंदे पेट में दर्द होने लगा महाराज ने फरमाया पहले जैसी तकलीफ होने लग गई है।

श्री प्रेम चंदाय नमः

महाराजश्री के असाता वेदनीय कर्म का उदय किसी न किसी रूप में चलता रहा। कभी थोड़े रूप में कभी ज्यादा रूप में इसके वाद दिल घटना शुरू हो गया शरीर में वेचैनी रहने लगी यह सिल सिला दस पन्द्रह दिन तक चलता रहा इसके लिये वहुत दवाई की लेकिन कोई आराम नहीं हुआ शुगर की तकलीफ भी चल रही थी शुगर आहार के वाद २/३ प्र० हो जाती थी और शाम को तीन चार घंटे के वाद एक प्रैसर का चौथा हिस्सा या निल हो जाती थी, इस प्रकार चढ़ाव उतार चलता रहा इन्सोलीन का इन्जकशन नं० ४० का लगता रहा परन्तु महाराज को दौरे पड़ने शुरू हो गये दौरा रात को पड़ता था पहले साल की सम्वत्सरी को और इस वर्ष की सम्वत्सरी को व्रत रक्खा महाराजश्री ने फरमाया कि मेरे व्रत में कोई टंटा न लगे चाहे मैं मरू या जिन्दा रहूँ। व्रत शुद्ध रूप से रक्खा हाँ इस चतुर्मास में एक ख्याल अवश्य आया दो पर्यूषण खाली जा रहे हैं। आपने कहा चलती का नाम गाड़ी है। मेरी सेहत ठीक होती तो व्याख्यान होता तो हजारों लोग धर्म लाभ उठाते। को यहां के लोग दूसरी जगह घूमते फिरें इस कर्म चक्र के आगे किसी की पेस नहीं चलती इसके वाद दौरे की तकलीफ चलती रही कई डाक्टरों से पूछा तो उन्होंने कहा कि यह एक हार्ट की तकलीफ है दिन में दौरा नहीं पड़ता रात को दोरा पड़ता इसके वाद शर्मा डाक्टर को फिर वुलाया गया उसने हार्ट की तकलीफ वताई, दवाई तजवीज की, खून पतला करने की दवाई दी परन्तु दौरा चलता ही रहा मैंने माई से कहा कि इस दवाई से महाराजश्री को को लाभ की अपेक्षा हानि अविक हो रही है इसलिये इस रोग की जांच होनी चाहिये कि रोग क्या है ? मैंने कहा कि जो दवाई रोग के अनुसार होती है वह रोग को खाती है जो रोग के अनुसार दवाई नहीं होती वह दवाई रोगी को सहन नहीं होती रोगी को खाती है। ऐसा सुनने में आता है कि डाक्टर खून

पिघलाने और नसे की दवाई दे रहा है, यह महाराजश्री को मुआफिक न ही आ रही सेहत डाऊन होती जा रही है उसने जवाब दिया रोग तो वही है जो शर्मा ने बताया है। मैंने एक दिन उसको कहा डाक्टर कोई चाहे बड़ा हो या छोटा हो ऐसा हो सकता है जो तकलीफ को न समझे आप यह आग्रह छोड़ दो कि जो शर्मा कहता है वही तकलीफ है। इससे महाराज को नुकसान पहुंच रहा है। उसने जवाब दिया शर्मा किसी के यहाँ बुलाने पर भी आता नहीं ७०-७५ आदमी मेरे पास आते है कि आप शर्मा को बुलादें इसलिये मुझे उनकी सिफारश करनी पड़ती है वह हरेक के बुलाने पर नहीं आता। मैंने कहा कि आजकल सिफारिश और रिशवत से ही काम काम चलते हैं। यह कोई नई बात नहीं है।

(१) इन वचनों में तीन बातें झलकती प्रतीत होती है डाक्टर के प्रति उनकी आगाध अन्धी श्रद्धा।

(२) गुरु के वचनों की उपेक्षा।

(३) मान का अधिक नशा। जिससे आत्ममान भूला हुआ प्रतीत होता है क्योंकि शर्मा डाक्टर से गरीब को अपना इलाज करवाना मुश्किल है उनके द्वारा जिन ७० या ७५ लोगों की सिफारिस की जाती है वे भी धनवान होने चाहिएं अतः उनका यह कथन अभिमान का प्रतीक था अतः वे स्वयं विचार कर अपना आत्मालोचन करें।

इसके बाद एक प्रेम नारायण डाक्टर बुलाया गया उसने हालात देख कर दौरे के विषय में पूछा दौरा रात को पड़ता है ? हमने उसे बताया कि रात को दौरा पड़ता है। डाक्टर ने कहा दिन में दौरा न पडने का रात को पड़ने का ऐसा केस मेरे देखने में बहुत कम आया है। उसने कहा शुगर की सुई कितने दर्जे की लगती है ? हमने उत्तर दिया चालीस दर्जे की ! डाक्टर ने कहा कि ४० की जगह २० की लगाओ २० की शुरू कर दी दौरा बंद हो गया पेट की तकलीफ और पाँव की सूजन चलती रही। इस दौरान मुनि सुदर्शन आये यहां उनके व्याख्वान हुए महाराजश्री से व्याख्यान में बैठने की विनती की गई महाराजश्री ने कमजोरी होने की हालत में भी मुनि सुदर्शन के व्याख्यान के बाद दोनों दिन आधा-आधा घंटे के करीब बोले यह महाराजश्री

के अन्तिम व्याख्यान थे। इसके वाद महाराजश्री के व्याख्यानों का अंत हो गया। इसके वाद महाराजश्री को किसी-किसी वक्त टट्टी अपने आप निकल जाने लगी। राम भारतीय वैद्य को वुलाया गया उसने दवाई देनी शुरू की जिससे दट्टी तो ठीक हो गई परन्तु पेट में मरोड़ा चलता रहा मरोड़े के लिये अंग्रेजी दवाई देदी महाराजश्री को टट्टी शुरू हो गई टट्टी भी पतनाले की तरह आने लगी यहाँ एक दास नाम के हकीम रावल पिंडी वाले ने दवाई दी वह महाराज का श्रद्धालू भक्त था टट्टी वंद हुई किन्तु दस वारह घंटे के वाद पतली ही टट्टी आने लगी। यह क्रम दस पन्द्रह दिन चलता रहा। जिससे महाराज वेहोशी में पड़े रहे, इतने कमजोर हो गए। कि पड़े रहने से कमर में लागा लग गया, अर्थात् कमर पर फोड़ा सा हो गया तथा उसके ऊपर से खाल उतर गई यहां की भी मलहम पट्टी यहां का भाई सुशील कुमार रोजाना करता रहा, इसके वाद टट्टी शुष्क रूप में आने लगी ताकत की दवाई देने से टट्टी आने लगी थी हजम नहीं होती थी इसलिये दवाई भी देनी वन्द कर रक्खी थी, इस वीच में आनन्द राज सुराणा आये महाराजश्री लेट रहे थे महाराजश्री से उन्होंने कहा कि महावीर स्वामी की २५ वीं निर्वाण शताब्दी में २५०० गऊएं छुटवानी है। इसलिये आपके यहाँ से ५१ गऊ कसाई की छुरी से छुटवाने का उपदेश देकर करौलवाग की ओर से छुटवाने की प्रेरणा देने की कृपा करें। महाराजश्री ने कहा जैसा होगा मैं करने की कोशिश करूंगा। इससे पहले महाराजश्री ने तकलीफ के कारण वोलना चालना कम कर रखा था। तकलीफ में वोला नहीं जाता था। महाराज ने कहा कि मेरे जीने का कोई भरोसा नहीं फिर भी इस अभय दान के काम में कोशिश करूंगा इसके वाद महाराजश्री ने गऊओं को अभयदान देने के विषय में भाइयों को उपदेश देना प्रारम्भ किया जिससे १५-२० दिन के अन्दर २९० के लग-भग गऊओं के अभयदान दिलाने के वचन भाइयों की ओर से दिये गये, २५० गऊओं की धनराशी तो इकट्ठी भी लोगों ने की। यह सिल सिला चल ही रहा था यद्यपि महाराजश्री का विचार ऐसा था कि ३०० से ऊपर गायों को इस क्षेत्र से अभयदान दिलाया जाय। महाराजश्री अभयदान के इस कार्य में

अपने शरीर की संपूर्ण शक्ति लगा रहे थे कि एक दिन रात को इतना भीषण दौरा परा कि चक्कर बन्ध गया कि पट्टे से उठा कर महाराजश्री को घुमाया वहुत ज्यादा दौरा पड़ा इसके बाद वैद्य से कहा कि रात को ऐसा दौरा पड़ा, उसने कहा कि खून को नसों में जारी करने के लिये पुडीया दी थी उसके कारण ऐसा हुआ है फिर महाराजश्री को दिन में दौरा पड़ा जिससे हाथ पैर तन गए डाक्टर ज्ञान को बुलाया। उसने गोली दी जिससे दौरा शान्त हो जायेगा परन्तु महाराज के मुंह में पानी डाला पानी नीचे नहीं उतरा फिर डाक्टर ज्ञान के पास गए उसको कहा जब पानी नहीं उतरता तब गोली कैसे दी जाय ? उसके बाद डाक्टर ने आकर सुई लगाई दौरा तो शान्त हो गया परन्तु कमजोरी इतनी आ गई कि गायों के विषय का प्रचार ही स्थगित करना पड़ा। महाराजश्री ने एक दिन ऐसा फरमाया कि दवाई के विषय में डाक्टर वैद्य के द्वारा जो भूल होती है वह मेरे असाता वेदनीय कर्म का उदय है वे तो अपनी ओर से रोग शान्ती के लिये देते होंगे। तकलीफ चलते-चलते जनवरी का महीना आया उस दिन में ८-१-१९७४ को बोलना भी बन्द हो गया, महाराजश्री के गले में पानी भी उतरना मुश्किल हो गया। तकलीफ वहुत बढ़ गई मैं ज्ञान डाक्टर के पास गया उससे कहा कि आप महाराज का गला देखें कोई चीज गले में नहीं उतरती उसने कहा गले का डाक्टर नन्दा है उसे बुलवाले। क्योंकि मैं गले का डाक्टर नहीं हूं मैं सुदर्शन कुमार जैन की कोठी नं० ६ वाले के पास आकर उससे कहा कि ज्ञान डाक्टर ऐसा कहता है कि नन्दा को दिखाओ। सुदर्शन ने नन्दा डाक्टर को टेलीफोन किया डाक्टर ने चार बजे शाम को आने को कहा। ज्ञान डाक्टर १ या १½ बजे देखने आया उसने महाराजश्री को देखा डाक्टर ज्ञान ने कहा कि महाराजश्री की नब्ज आदि सब ठीक चल रही है। कोई ऐसी बात नही है। डाक्टर नन्दा ४ बजे आया उसने महाराज का गला देखा उसने पूछा कि महाराज के गले में कभी कैंसर तो नहीं हुआ ? मैंने कहा महाराज को कैंसर कभी नहीं हुआ उसने महाराज के सामने ऐसा बोला महाराजश्री की खाने की नली सुकड़ गई है। इस वक्त कमजोरी है खुराक सुई द्वारा दी जाय या अस्पताल ले जाओ महाराज को नर्सो और अस्पताल का नाम सुनकर दिल पर सदमा सा हुआ अस्पताल के

नाम से दुखी हुए महाराजश्री ने इससे पहले कई वार डाक्टरों और भाइयों के कहने पर अस्पताल में ले जाने को इन्कार कर दिया था। कि मैं अस्पताल नहीं जाऊंगा यह असंयम है। भाइयों ने और डाक्टरों ने वहुत कहा लेकिन महाराजश्री ने इन्कार करदिया दो तीन दिन पहले महाराजश्री ने ऐसा कहा था कि अब मैं जिन्दा नहीं रहूँगा मुझे मर जाना है। ख्याल यही रहा कि २—२½ साल से तकलीफ चल रही है इस ओर ध्यान नहीं दिया महाराजश्री को सवा पांच वजे छाती और गले की मालिश साधुओं ने की क्योंकि निमोनिया होने का संदेह था क्योंकि रात को टट्टी के कारण कई वार उठना पड़ा था। सर्दी जोर की थी छाती में सर्दी भी लग गई थी। छाती पर मालिश करते-करते महाराजश्री की एक दम गर्दन लटक गई महाराजश्री को लिटा दिया फिर कुछ नहीं हुआ इसके बाद डाक्टर को वुलाया डाक्टर ने कहा प्राण निकल गए हैं। मैंने महाराज के शरीर पर हाथ फेरा महाराजश्री का पैरों से ऊपर तक सारा शरीर गर्म था। मैंने डाक्टर से कहा कि शरीर तो गर्म है हाथ पैर मुडने में कोई फर्क नहीं पड़ता उसने कहा कि प्राण अब रहे नहीं। महाराजश्री के प्राण निकलने के वाद दिव्य रूप से चेहरा खिल गया आँखें खुल गई मुंह भी खुल गया चेहरा वहुत खिल उठा मैंने आज तक मरे हुए आदमी का ऐसा चेहरा नहीं देखा महाराजश्री का चेहरा दमक उठा महाराजश्री का स्वर्गवास सवा पांच वजे शाम को जनवरी मंगलवार पोप पूर्ण मासी स्वाती नक्षत्र ८-१-७४ को हुआ।

(मेरा गुरू के प्रतिराग)

दिल्ली निवासियों ने महाराजश्री की सेवा में कोई कमी नहीं रखी तन मन धन से सेवा करते रहे इसके वाद यहां वहुत भाई आते रहे मेरे जीवन पर महाराजश्री के देव लोक होने का वहुत आघात हुआ क्योंकि मैं महाराजश्री की सेवा में दीक्षा लेकर ४० वर्ष रहा इन ४० वर्षों में दो तीन महीने भी जुदा नहीं रहा उन्हीं की सेवा में रहा मेरा उनके प्रति राग इतना रहा कि कभी माता-पिता भाईयों के साथ भी नहीं रहा महाराजश्री का भी मेरे पर इतना ही राग था जब मैं विचरने को कहता था महाराजश्री का दिल भारी हो जाता था। उनके मरने के वाद मेरी हालत पागलों जैसी हो गई मेरे को

साधु और भाई भी बहुत समझाते रहते हैं। कि इतनी तकलीफ न मानों मेरे को इतनी सम् वेदना होती है कि मेरा जी बार-बार भर आता है मैं रोकना भी चाहता हूं किन्तु दिल रुकता नहीं। यह पता नहीं महाराजश्री से मेरे कब के संस्कार मिले हुए हैं मैं यह भी जानता हूँ कि मोह और राग कर्म बन्ध के कारण हैं। मैं यह भी जानता हूँ कि जो मर चुका राग करने से उल्टा नहीं आता। यह भी याद है। संसार में भ्रमण करने के लिये २८ प्रकार का बादर पुद्गल परावर्तन है। २८ प्रकार का सूक्ष्म पुदगल परावर्तन है कुछ विद्वानों का ऐसा मत है कि सूक्ष्म पुद्गल परावर्त्तन नहीं होता किन्तु मेरे विचार में इसमें कोई बाधा नहीं क्योंकि जबकि जीवकी आदि नहीं इस पुदगल परावर्तन को स्मरण करके संसार का परिभ्रमण बड़ा भयंकर है। यह भी याद है कि भगवती सूत्र ११ शतक ११ वाँ उद्देशे में सुदर्शन सेठ भगवान् से प्रश्न करता है हे भगवान् पलों और सागरों के काल की निवृति कैसे होती है इसके उत्तर में भगवान ने उसके पूर्वभव का दृष्टान्त फरमाते हुए कहा हे सुदर्शन तू ने महाबल के रूप में करनी करके यहाँ से पाँचवें देवलोक में दस सागर की आयु पाई थी वहां तू दस सागर की आयु भोगकर यहां आया है। इतना कहने पर सुदर्शन को जाति स्मरण ज्ञान हुआ उसको देख कर वैराग्य उत्पन्न हुआ। फिर उसने भगवान से प्रश्न किया हे भगवन् काल कितने प्रकार का है। हे सुदर्शन काल चार प्रकार का है। प्रमाण काल, निवृत्ति काल, मरण काल, आधा काल, हे भगवन् प्रमाण काल कितने प्रकार का है? हे सुदर्शन दिन का काल, रात का काल, प्रश्न जिस समय सूर्य कर्क राशी के पहले मांडले में चलता है। उस समय कितने मूहूर्त का दिन होता है ?

और कितने मुहूर्त की रात्री होती है? भगवान् कहते हैं। हे सुदर्शन! जब सूर्य कर्क राशी में पहले मांडले पर चलता है। उस वक्त १८ मूहूर्त का दिन होता है। १२ मुहर्त की रात होती है। ४॥ मूहर्त की दिन की पौरसी होती है। ३ मुहूर्त की रात की पौरसी होती है।

सूर्य जब यहाँ से बाहर के मांडलों पर चलता है तब एक मूहूर्त के १२२ हिस्से करें उनमें से एक-एक भाग रोज का छोड़ता जाता है। मध्य के मांडले पर (आसौज) की पूर्णिमा को आता है। उस समय १५ मुहूर्त का दिन और

१५ मुहूर्त की रात, होती है। दिन की पौरसी ३।।। मुहूर्त की और रात की पौरसी भी ३।।। मुहूर्त की होती है। पोस की पूर्णिमा को अन्तिम मांडले में मकर राशि में आता है। १८ मुहूर्त की रात होती है १२ मुहूर्त का दिन होता है। ४।। मुहूर्त रात की पौरसी होती है ३ मुहूर्त की दिन की पौरसी होती है। जब एन बदल कर सूर्य अन्दर के मांडले पर आता है तब एक मुहूर्त के १२२ हिस्से करें जिनमें से एक-एक हिस्सा छोड़ते-छोड़ते मध्य के मांडले पर चैत्र की पूर्णिमा को आता है। उस समय १५ मूहूर्त का दिन १५ मुहूर्त की रात होती है ३।।। मुहूर्त की दिन की पौरसी और ३।।। मुहूर्त की रात की पौरसी होती है।

हे भगवन् निवृत्ति काल कितने प्रकार का होता है हे सुदर्शन चार प्रकार का! नरक का निवृत्ति काल तिर्यञ्च का निवृति काल, मनुष्य का निवृति काल, देव गति का निवृति काल। प्रश्न हे भगवन् मरण काल किसको कहते हैं? हे सुदर्शन शरीर से जीव का जुदा होना और जीव से शरीर का जुदा होना इसका नाम मरण काल है। यह अनन्त काल से चलता आ रहा है। प्रश्न भगवन् आधा काल किसे कहते हैं हे सुदर्शन समय, आविलका, दिन, रात, पक्ष, महिना वर्ष यावत सर्पणी उत्सर्पणी इस का नाम आधा काल है। आधे काल के माने आधा भूत आधा भविष्य इन दोनों के बीच का एक समय इसका नाम वर्तमान काल है। मैं यह भी जानता हूँ सुना भी है और पढ़ा है कि २४ तीर्थकरों के १४५२ गण धर थे वे भी जीवित नहीं रहे। तथा २८४८००० साधु थे। वह भी अपने रूप में नहीं रहे उनका भी परिवर्तन हुआ। ४८,७०,८०० साध्वी थी (२४ तीर्थ करों की) वह भी मरने से नहीं बचीं। जिन्दगी श्वासों श्वास पर निर्भर है। श्वासों श्वास गिनती के हैं। जो गिनती की चीज है। उसे खतम होना ही है शास्त्र कहता है कि एक मूहूर्त के ३७७३ श्वासों श्वास होते हैं एक महीने के ३३९५००० श्वास होते हैं। १०० वर्ष के ४,०७,४८,४०,००० श्वास होते हैं। चार अरब ७ करोड़ ४८ लाख ४० हजार होते हैं। ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की ७०० वर्ष की आयु थी जिसे उसने दुख रूप में भोगी और सुख रूप में भी भोगी ७०० वर्ष के श्वासो श्वास (२८) अरब, (५२) बावन करोड़, (३८) अड़तीस लाख (८०) अस्सी

हजार होते हैं। यहाँ भी ब्रह्मदत की आयु ७०० वर्ष की थी । सातवीं नरक में ३३ सागर की आयु है। लिखने वाले ऐसा लिखते हैं। यहाँ ब्रह्मदत्त के भव के सुख का एक श्वास और नरक के दुखों का एक-एक स्वांस के साथ ११,००००० पलयोपम, ५६००० पल्योपम, ६२५ पल्योपम, एक पल्योपम का तीसरा भाग होता है। एक-एक श्वास के साथ इतने लम्बे काल तक दुख भोगना पड़ेगा इतना समझते हुए भी राग द्वेश नहीं छूटता रागद्वेश के छोड़े विना संसार भ्रमण नहीं छूटता इन वातों का उपदेश करने वाले वहुतेरे हैं परन्तु इनको छोड़ने वाले वहुत कम लोग हैं।

(मैंने गुरु श्री पं० के० के जीवन में क्या देखा)

मैंने गुरु महाराजश्री पंजाव केसरी प्रेम चन्द जी म० के जीवन में मुख्य-रूप से दो बातें देखी हैं। महाराजश्री जिनधर्म के एक वफादार वहादुर निर्भीक सैनिक थे। उन्होंने आपत्ति और आक्रमण होने पर भी सत्य को नहीं छोड़ा और असत्य के आगे झुके नहीं। महाराजश्री की वाणी में शेर गर्जना ही नहीं थी अपितु वे शरीर और आत्मा से भी वलवान थे। एक वार महा-राजश्री अम्वाला शहर में सती मोहन देवी की वैरागिन को दीक्षा दे कर पटि-याला चातुर्मास करने के लिये जा रहे थे। मार्ग में वहादुरगढ़ के किले में पधारे वहां किले में एक वहुत ही विशाल वृक्ष था। उसके नीचे वहुत वड़े-वड़े तख्त पड़े हुये थे। तख्त वहुत भारी थे। इधर उधर अस्त व्यस्त से विछे हुये थे। महाराजश्री ने अकेले ही उस तख्त को उठाकर एक ओर कर दिया, कोई भी तकलीफ महसूस नहीं हुई। इसलिये महाराजश्री शरीर से भी वलवान थे। मैंने आचार्यश्री हस्ती मल जी म० के गुरु आचार्य श्री सुहागचन्द जी म० के जीवन चरित्र में पढ़ा है कि श्री सुहागचन्द जी म० इतने वलवान थे कि साधु किसी तख्त को उठाने लगे, तो उनसे नहीं उठ सका परन्तु अकेले श्री सुहाग चन्द जी म० ने तख्त उठा दिया किन्तु उन्हें तख्त उठाने के फलस्वरूप वहुत दिनों तक शारीरिक कष्ट उठाना पड़ा। पर महाराजश्री के विषय में तख्त उठाने के वाद ऐसी समस्या महाराजश्री के सम्मुख उपस्थित नहीं हुई।

रहा आत्मवल के विषय में महाराजश्री किसी भी आक्रमण के आगे नत-मस्तक नहीं हुये। वे आक्रमण किस प्रकार के तथा किस-किस की ओर से हुए आक्रमण स्व ओर पर दोनों ओर से हुये उन आक्रमणकारियों में एक भ्रष्टाचारी साधु वर्ग भी था। उनके आक्रमण का कारण यह भी था कि महाराजश्री भ्रष्टाचार के सख्त विरोधी थे। उन भ्रष्टाचारियों में दो मुखिया थे। जो षड्यन्त्र रचने और कपट जाल रचने में साक्षात् चाणक्य की उपमा रखते थे

और अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिये, साधुओं को भयभीत करने में बड़े पटु थे। उनके दर्शन समाज को भीनासर सम्मेलन में हो चुके हैं। उन में एक का भेष श्वेताम्बर और दूसरे का भगवा भेष था। इन के नाम क्रान्ति और अमृत थे, जो कि साधु जीवन से पतित हो चुके हैं। एक बार पंजाब में आचार्य पूज्यश्री कांसी राम जी म० के देवलोक होने के बाद उपाध्याय श्री आत्माराम जी म० को आचार्य की पदवी दी गई। इस में महाराजश्री का विशेष योग था। कुछ समय के पश्चात् महाराजश्री आचार्यश्री की सेवा में लुधियाना पधारे। वहां पहुंचने पर महाराजश्री ने आचार्यश्री से प्रार्थना की, कि इस समय साधुओं में भ्रष्टाचार बढ़ता जा रहा है। आचार्य श्री ने फरमाया कि आप का कहना तो ठीक है परन्तु मैं दूसरों की सहायता के बिना कुछ नहीं कर सकता। महाराजश्री ने पूछा आप किस२ की सहायता चाहते हैं ? आचार्य श्री ने फरमाया कि साधु वर्ग की और श्रावक वर्ग की भी। इस वार्तालाप के पश्चात् इस नतीजे पर पहुंचे थे कि सर्व प्रथम मुख्य-मुख्य श्रावकों को बुलाकर यह योजना रखनी चाहिए। इसके पश्चात् लुधियाना बिरादरी ने पंजाब के मुख्य-मुख्य श्रावकों को बुलाया और उनकी सभा हुई। श्रावकों ने सभा में यह निर्णय किया अमुक-अमुक तिथि को साधु और श्रावकों का एक सम्मेलन होना चाहिये। इसके पश्चात् साधु श्रावकों को इस विषय में सूचना दे दी गई। इस सूचना को सुन कर भ्रष्टाचारी साधुओं में घबराहट पैदा हो गई और उनके मन में यह बात घर कर गई कि आचार्यश्री तो नरम प्रकृति के हैं वे कुछ नहीं कर सकते किन्तु प्रेमचन्द जी म० लुधियाना विराजमान हैं अतः यह सारा कार्य वही करवा रहे हैं। भ्रष्टाचारियों ने महाराजश्री के विरुद्ध एक गुमनाम इस्तिहार निकाला, जिसमें उपाध्याय के पच्चीस गुण लिखे किन्तु महाराजश्री के विषय में पच्चीस गुणों के स्थान पर पच्चीस अवगुण लिखे। वह इस्तिहार उन्होंने बाहर क्षेत्रों में निकाला। इसके विषय में महाराजश्री ने अपनी ओर से कोई भी प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की इसके पश्चात् साधु और श्रावकों की सभा हुई। उस सभा में साधुओं पर परस्पर आरोप प्रत्यारोप लगाये गये जिस में कस्तूर चन्द जी म० के शिष्य अमृत मुनि के द्वारा

महाराजश्री पर दो आरोप लगाए गए। एक होशियारपुर में दीक्षा सम्बन्धी दूसरा पटियाला में ध्वनि यन्त्र सम्बन्धी।

स्मरण रहना चाहिये कि महाराजश्री पर लगाये गये दोनों ही आरोप मिथ्या थे। महाराजश्री इन आरोपों का स्पष्टीकरण तो सभा के मध्य ही कर देते लेकिन स्पष्टीकरण न करने का एक मुख्य कारण था कि उसमें आचार्यश्री का नाम भी आता था अतः महाराजश्री को मौन ही रहना पड़ा।

महाराजश्री ने होशियार पुर में जो दीक्षा दी थी। वह वैरागी की वहिन की आज्ञा लेकर दीक्षा दी थी। दूसरा पटियाला का आरोप था कि लुधियाना में ध्वनियंत्र खुल गया था किन्तु महाराजश्री ने ऐसा नहीं फरमाया था, महाराजश्री ने तो गणी जी महाराज के पत्र का उदाहरण देते हुए फरमाया था कि भविष्य में ध्वनियन्त्र के खुलने की संभावना है। इसके अलावा महाराजश्री ने और कोई शब्द नहीं कहा, फिर भी महाराजश्री का कथन सत्य सिद्ध हुआ क्योंकि ध्वनि यंत्र मीनासर सम्मेलन में खुल चुका अतः अमृत मुनि द्वारा लगाए गये दोनों आरोप असत्य सिद्ध हुए।

अमृतमुनि द्वारा महाराजश्री पर आरोप लगाने के पश्चात् एक मुनि अमृतमुनि से इतना प्रभावित हुआ कि वह अमृतमुनि की चापलूसी करने लगा। ऐसा वह अपनी किसी कमजोरी के कारण अथवा महाराजश्री से ईर्ष्याभाव के कारण करता था यह तो ज्ञानी ही जानें किन्तु वह अमृत मुनि से प्रभावित वहुत ही हुआ। अमृतमुनि के इस खुशामदी मुनि ने एक बार वहुत से साधु मुनिराजों के मध्य में अमृतमुनि के गुरु कस्तूर चन्द जी म० को कहा था कि आप का शिष्य वहुत योग्य है और समाज का चमकता हुआ सितारा है इत्यादि वाक्यों से उसका बड़ा यशोगान किया।

दूसरी ओर अमृत मुनि ने अपने चापलूसी मुनि के विषय में घोषणा की कि यह हमारा नेता है। महाराजश्री ने इस नाटक को अपनी आँखों से देखा और देखकर मन में विचार किया। थोड़ी देर वाद ही निर्णय भी कर लिया कि

ये करना क्या चाहते है। और महाराजश्री ने इनके आगे न झुकने का दृढ़ निश्चय कर लिया।

इसके पश्चात् एक कमेटी बनाई गई, जिसमें तीन मुनि और दो दृहस्थी सम्मिलित किये गये। पांच सदस्यों की कमेटी में उनका नेता भी सम्मिलित किया गया था। स्मरण रहे उस नेता को इस तथ्य का भी ज्ञान रहा होगा कि अमृत मुनि ने अपने गुरु कस्तूर चन्द जी म० को भरी सभा में नालायक और नासमझ कह कर सम्बोधित किया था और उस नेता को आगे चलकर इस बात का भी पता चला होगा कि जिसे उन्होंने समाज के चमकते हुए सितारे की और समाज के सपूत की पदवी दी थी। वही सपूत और समाज का चमकता सितारा करनाल में मैथुन अर्थात् भ्रष्टाचार के अपराध में करनाल जिले के शिशन जज को सौंपा गया और नेता जी ने यह भी सुना होगा कि आचार्यश्री जी म० ने घोषणा कर दी थी कि जैन समाज का अमृत मुनि के साथ किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं है।

इसके पश्चात् कमेटी की सभा बुलाई गई। महाराजश्री के पास इस कमेटी के दो सदस्य आये। एक थे बाबू हरजसराय अमृतसर वाले और दूसरे थे लाला त्रिभुवननाथ कपूरथले वाले। इन्होंने महाराजश्री से अर्ज करी कि आप अपने ऊपर लगाये गये आरोपों का स्पष्टीकरण करने के लिये सभा में पधारने की कृपा करें। इस पर महाराजश्री ने फरमाया मुझे कमेटी के आगे किसी प्रकार का स्पष्टीकरण करने की कोई आवश्यकता नहीं, यदि कमेटी के सदस्यों को कोई बात पूछनी हो तो वे मेरे पास आकर पूछ सकते हैं। अपने जीवन के विषय में मेरा ऐसा कोई भी गोपनीय कार्य नहीं है, जिसके स्पष्टीकरण करने के लिये मुझे कमेटी के सम्मुख उपस्थित होना पड़े। पुन: महाराजश्री ने फरमाया कि इस विषय में यदि आचार्यश्री म० मेरे को याद करें तो मैं उनकी सेवा में उपस्थित हो सकता हूँ।

इसके पश्चात् महाराजश्री ने रोपड़ चातुर्मास के लिये जाना था। अत: लुधियाने से विहार कर दिया। मार्ग में जाते हुये एक इस्तिहार मिला, जो

कि भ्रष्टाचारी साधुओं की ओर से निकाला गया था। उसमें लिखा था प्रेम चन्दजी महाराज कितने अभिमानी हैं। जो कमेटी द्वारा बुलाये जाने पर भी उपस्थित नहीं हुये। वास्तव में महाराजश्री में अभिमान नहीं था। हां अपने उच्च चरित्र के साथ अपना आत्म गौरव अवश्य रखते थे।

इसके पश्चात् चातुर्मास काल में लुधियाना से "एक पग" नाम की एक पुस्तक निकाली गई। उसमें महाराजश्री के विषय में लिखा था कि नाम मात्र का दोष। महाराजश्री ने इसे पढ़ लिया। पुनः कमेटी का सदस्य कृष्णकान्त महाराज के पास रोपड़ आया। वार्तालाप करते हुये महाराजश्री ने उससे कहा कि तुम्हारी ओर से "एक पग" नामक पुस्तक प्रकाशित हुई है, उसमें मेरे ऊपर नाम मात्र का दोष लगाया गया है किन्तु वह नाम मात्र का दोष क्या है? इसका कोई स्पष्टीकरण नहीं किया गया? इसका क्या कारण है? उस कमेटी के सदस्य ने महाराजश्री के इस प्रश्न का कोई भी उत्तर नहीं दिया। महाराजश्री ने पुनः उस सदस्य से कहा। यदि मेरे ऊपर गलत बयानी का दोष लगाया है तो मैं उसे नाम मात्र का दोष नहीं मानता अपितु मैं उसे दूसरे महाव्रत का घातक समझता हूं। यदि तुम लोगों को इस विषय में कोई शंका थी, तो तुम पटियाला की बिरादरी से पूछ सकते थे और दीक्षा के सम्बन्ध में आचार्यश्री से पूछ सकते थे। मैंने तो दीक्षा आचार्यश्री की आज्ञा से दी थी। इसके पश्चात् पुस्तक में जो महाराजश्री के विषय में नाम मात्र के दोष का उल्लेख था, उसे निकाल दिया गया। इस से इस तथ्य की पुष्टि हो गई कि जिन्होंने महाराजश्री के प्रति द्वेष बुद्धि के कारण नाम मात्र का दोष लगाया था, वह उनकी असत्य कल्पना ही थी। अन्ततोगत्वा सत्य-सत्य ही रहता है जहाँ ईर्ष्या द्वेष का सद्भाव होता है वहां सत्यासत्य की निर्धारिणी बुद्धि का अभाव होता है।

तरुण सन्तों के प्रचार में म० सहमत थे

महाराजश्री तरुणसन्तों के द्वारा धर्म प्रचार किये जाने के प्रबल समर्थक थे। धर्म वृद्धि के आठ कारण हैं, जिन्हें प्रभावना कहा जाता है। उन में एक यह भी है कि जिन प्रवचनों का वाणी से जनता में अधिक से अधिक प्रचा

प्रसार करना किन्तु प्रचार भी साधु मर्यादा, में रहते हुये ही करना चाहिये। वही प्रचार चिरस्थायी और धर्मवर्द्धक होता है और जो प्रचार साधु मर्यादा से बाहर होता है, वह फूंस की अग्नि और बरसाती नदी के समान होता है। इसी प्रकार मर्यादा रहित प्रचार चिरस्थायी नहीं रहता।

महाराजश्री छोटे साधुओं के और श्रावकों के सम्मान में अपना सम्मान समझते थे। जिस कार्य से दूसरों का अपमान हो, उस कार्य को उचित नहीं समझते थे।

सादड़ी सम्मेलन के बाद महाराजश्री का चातुर्मास रतलाम में था और सुशील मुनि का चातुर्मास इन्दौर में था। महाराजश्री को इन्दौर से सूचना मिली कि रतनलाल डोसी अपने सम्यगदर्शन में सुशील मुनि की बहुत आलोचना कर रहे हैं जिससे सुशील मुनि घबराये हुये हैं। कुछ दिनों के पश्चात् रतन लाल डोसी महाराजश्री की सेवा में रतलाम आये। महाराजश्री के साथ उनका वार्तालाप हुआ। महाराजश्री ने डोसी जी से पूछा कि क्या आप ने सुशील मुनि के विरुद्ध अपने पत्र में कोई लेख निकाला है? उत्तर में डोसी जी ने कहा हाँ निकाला था क्योंकि वे साधु मर्यादा के विरुद्ध चल रहे हैं। इस पर महाराजश्री ने फरमाया कि मैं भी साधु मर्यादा से बाहर जाने का सख्त विरोधी हूं किन्तु सुशील मुनि अभी धर्म प्रचार के क्षेत्र में प्रथम बार अग्रसर हो रहे हैं। अतः उनकी आलोचना करके उनका उत्साह भंग न करें अपितु उन्हें समझाने का प्रयास करें। इस विषय में वार्तालाप तो बहुत हुआ था किन्तु विस्तारभय से संक्षेप में ही लिखा गया है।

इसके पश्चात् महाराजश्री का चातुर्मास बम्बई कांदावाड़ी में हुआ और सुशील मुनि का बम्बई "विरले पारले" में हुआ। यहाँ सुशील मुनि की ओर से कोई ऐसी घटना नहीं हुई, जिस से उनकी आलोचना होती।

इसके बाद महाराजश्री का चातुर्मास राजकोट में हुआ और सुशील मुनि का चातुर्मास बम्बई कांदावाड़ी में हुआ। इस चातुर्मास में महाराजश्री को एक पत्र

मिला, जिस में लिखा था, "सुशील मुनि ऐसी प्रवृत्ति पर चल रहे हैं जो साधु वृत्ति से बाहर है। उत्तर में महाराजश्री ने सुशील मुनि को पत्र लिखवाया कि आप सर्व सम्मेलन के विषय में हिस्सा न लें क्योंकि जैन समाज इस सर्व सम्मेलन को उचित नहीं समझता और मैं भी इन प्रवृत्तियों को उचित नहीं समझता। इसके बाद महाराजश्री राजकोट से विहार करके जा रहे थे। मार्ग में सुशील मुनि का पत्र मिला, उसमें लिखा था। आपका पत्र मुझे मिल गया है, आप ने जो लिखा है, मैं भी उसके पक्ष में नहीं हूं किन्तु विरोधियों के मुकाबले के लिए ऐसा किया गया है। विरोधियों का मुकाबला करने के लिए किसी आडंबर की रचना करना यह भी उसकी आत्मा की कमजोरी है महाराजश्री के मुकामले के लिए विरोधियों ने अपने सिद्धान्त से पतित होकर भी कौन सा ऐसा आडंबर है जो उन्होंने न रचा हो? महाराजश्री ने उन सब को अपने आत्मबल से परास्त कर दिया। इसके बाद महाराज का चातुर्माश जोधपुर में था और सुशील मुनि का चातुर्मास उज्जैन नगर में था। एक दिन जोधपुर में महाराजश्री के पास रतलाम का भाई नथुलाल सेठिया आया और उसने महाराजश्री से प्रार्थना की कि मैं उज्जैननगर में गया था। मैंने उन्हें बहुत चिंतित और उदासीन देखा और वे तेला करके बैठे हुये हैं। इस पर महाराजश्री ने उससे पूछा कि इसका क्या कारण है? उत्तर में सेठिया ने कहा कि वहाँ पर एक स्थानीय समाचार पत्र निकलता है। वह सुशील मुनि के पक्ष में प्रचार कर रहा था। और विरोधियों की जड़ें काट रहा था। विरोधी पक्ष वालों ने एक चाल चली। समाचार पत्र वाले को लालच देकर अपने पक्ष में कर लिया। उसके पास सुशील मुनि के कुछ गोपनीय पत्र थे। उन्हें प्रकाशित कर दिया। जिससे सुशील मुनि के विरोधियों का पक्ष मजबूत हो गया। इस पर महाराजश्री ने सेठिया से फरमाया कि मैं तो पहिले भी सुशील मुनि को सर्व धर्म सम्मेलन के विषय में चेतावनी देता रहा हूँ और मैं स्वयं ऐसी प्रवृत्तियों को उचित नहीं समझता किन्तु अब यह प्रश्न केवल सुशील मुनि का ही न रह कर, समाज की प्रतिष्ठा का प्रश्न बन गया है। अतः अब आप लोगों को वही कदम उठाना चाहिये जिससे कि समाज का गौरव बना रहे और समाज को नीचा न देखना पड़े। इसके पश्चात् भीनासर सम्मेलन हुआ। उस सम्मेलन में साधुओं की सभा हो रही थी। उस सभा में एक प्रस्ताव रखा गया। जिसमें लिखा था कि सुशील मुनि यहाँ कलके दिन आ रहे हैं। वे मार्ग में साधु वृत्ति के प्रतिकूल प्रवृत्ति करते हुये आ रहे हैं। इसलिये जिस समय वे

यहां आयें, उनके स्वागत के लिये कोई भी साधु न जाये। यह बात सुन कर महाराजश्री विचारने लगे कि इस समय यहां पर चतुर्विध संघ एकत्रित है और वृहद् साधु सम्मेलन हो रहा है। यदि इस समय यह प्रस्ताव पास हो गया तो यह सुशील मुनि की मान हानि न होगी अपितु उसके लिए कलंक रूप भी बन जायेगा। किसी व्यक्ति का ऐसे समय पर अपमान करना उसके सामाजिक जीवन का अंत करना है। ऐसा विचार कर महाराजश्री खड़े हुये और फरमाया कि मैं संयम के विरुद्ध प्रवृत्तियों का समर्थक नहीं किन्तु ऐसे समय पर उचित नहीं कि सुशील मुनि का स्वागत न किया जाये। अतः मैं सुशील मुनि का स्वागत करने अवश्य ही जाने का विचार रखता हूँ। ऐसे समय पर किसी का भी तिरस्कार नहीं होना चाहिये। इसके पश्चात् वह प्रस्ताव रद्द हो गया और प्रातः काल सुशील मुनि का स्वागत किया गया। यह घटना तो नौ जवान मुनिराजों के विषय में थी। भिनासर वृहद् सम्मेलन चल रहा था कि एकदिन श्री छोटे लाल जी महाराज, महाराजश्री की सेवा में आये और महाराजश्री से अर्ज की कि सुशील मुनि के साथ संघ नहीं है और न ही उसका समाज पर प्रभाव है अतः सम्मेलन की कार्यवाही में जो कार्य चल रहा है उसे आप ही ठीक कर सकते है। महाराजश्री कभी अवसर चूकने वाले नहीं थे, अपनी प्रखर बुद्धि और समायोचितस्फूर्ण। से बिगड़ती हुई बात संभाल लेते थे। एक बार होशियारपुर में महाराजश्री के सान्निध्य में वेजि-टेरियन सोसायटियों के प्रतिनिधियों की जरनलमीटिंग होरही थी, जिसमें हजारों की संख्या में जनता इस कार्यवाही को सुनने आई हुई थी लाला वंशी लाल ने समय मांग कर बोलना प्रारम्भ किया। उनके मुख से ऐसा शब्द निकल गया कि जैनी तो मांस खाते नहीं अतः उन्हें वैजिटेरियन सोसायटी के फार्म भरने की क्या आवश्यकता है? स्मरण रहे कि इस वैजिटेरियन सोसायटी का कार्य केवल मांस भक्षण का निषेध करना ही नहीं अपितु इसके अलावा इस वेजीटोरियन सो० के चार नियम और भी थे अर्थात् वे नियम इस प्रकार हैं १. स्वयं वेजिटेरियन बनना दूसरों को बनाना। २. स्वयं सदाचारी बनना व दूसरों को सदाचारी बनाना। ३. विश्व में विश्व प्रेम की भावना जागृत करना। ४.

बिना किसी मत भेद के अहिंसा परमोधर्म का प्रचार करना। ५. दीन दुखियों की यथा शक्ति सहायता करना। उसके इतना कहते ही जैनेतर सदस्य उत्तेजित होकर खड़े हो गए। इससे पूर्व कि वे कुछ कहते महाराजश्री ने फरमाया कि देखो लाला जी आगे क्या कहते हैं ? इतने में लाला जी को संभलने का मौका मिल गया और उन्होंने अपना विषय बदल दिया। तत्पश्चात वे लोग शान्त हो गए। लाला वंशीलाल के कुछ साथी लाला मंसाराम और बाबू कृपा राम आदि शाम को स्थानक में महाराजश्री की सेवा में आये और बोले महाराजश्री आपने अपने बुद्धि बल से विशाल जनसमुदाय के मध्य लाला जी को अपमानित होने से बचा दिया। इसके साथ ही उन्होंने अत्यन्त विनय भाव से कृतज्ञता प्रकट की।

महाराजश्री सदैव उच्चकोटि के महापुरुषों का सम्मान और विनय करने में सदा संलग्न रहते थे। मतभेद होने पर भी उनकी विनय करना नहीं छोड़ते थे। कई प्रसंग तो ऐसे भी आये हैं कि पूज्यश्री आत्माराम जी म० को बदनाम करने की चेष्टा की गई। जैसे जापान के सर्व सम्मेलन में पूज्य श्री के लेख भेजने के विषय में। जो लेख आचार्यश्री की ओर से जापान के सर्व सम्मेलन में भेजा गया। उसका उत्तरदायित्व एवं जवाबदारी आचार्यश्री से माँगी गई। इसका उत्तर कांशीराम चावला से दिलाया गया किन्तु कांशीराम चावला के इस पत्र से समाज को संतोष न हुआ। अतः पुनः स्पष्टीकरण मांगा गया, जिसका उत्तर कांशीराम चावला के द्वारा दिया गया किन्तु कांशीराम चावला के द्वारा दिये गये पत्रों में परस्पर विरोधाभास था, जिसके कारण कुछ साधु इन पत्रों को सोजत सम्मेलन की मीटिंग में रखना चाहते थे परन्तु वर्तमान आचार्यश्री आनन्द ऋषि जी महाराज और महाराजश्री ने अपने प्रभाव से मीटिंग में उन पत्रों को न आने दिया। जैसे महाराजश्री को लुधियाना में पूज्यश्री आत्मा राम जी के कारण स्वयं निर्दोष होते हुये भी खामोश रहना पड़ा तथा उपाचार्यश्री गणेशीलाल जी म० और महाराजश्री के पत्र व्यवहार भी देखें कई बार पूज्य श्री आत्मारामजी म० से परस्पर मतभेद भी हुये तब भी महाराजश्री ने आचार्य श्री की विनय न छोड़ी। आचार्यश्री की महानता का और कृतज्ञता का भी एक उदाहरण प्रस्तुत किया जाता है। जिस समय पूज्य श्री आत्माराम जी म०

रोग शैया पर पड़े हुये थे। काल करने से लगभग दस दिन पूर्व महाराजश्री आचार्य श्री को प्रात: वन्दना करने गये, उस समय आचार्यश्री के पास ज्ञान मुनि भी था, आचार्यश्री ने ज्ञान मुनि से इस प्रकार फरमाया, ज्ञान मुनि! मेरे को जो आचार्य पदवी दिलाई है। यह प्रेम मुनि की देन है। आचार्य श्री के इस वाक्य में कितनी महानता प्रगट होती है। यद्यपि आचार्य श्री आत्माराम जी म० आचार्य के गुणों से सम्पन्न थे और इस पद के सर्व श्रेष्ठ अधिकारी थे। फिर भी उन्होंने अपने साथ किये गये सद्व्यवहार को भुलाया नहीं। वास्तव में आचार्य पद किसी के लेने देने वाली वस्तु नहीं है। तीस प्रकृतियाँ क्षयोपशम की हैं। जिनमें बीसवीं प्रकृति है आचार्य पदवी क्षयोपशम से आती है।

महाराजश्री के साधु जीवन में महाराजश्री के ऊपर पर पक्ष के द्वारा जो आक्रमण किया गया है। उस विषय में प्रथम विहार प्रचार में देखने का कष्ट करें प्रथम विहार प्रचार का द्वितीय संस्करण फगवाड़े वाले लाला टेक चन्द जी और भटिंडे वाले लाला रोशनलालजी द्वारा प्रकाशित हो चुका है किन्तु लाला टेक चन्द जी ने उस पुस्तक में अपना नाम नहीं दिया। उन्होंने कहा कि इस संस्करण के समाप्त होने पर फिर छपा सकते हैं। प्रथम विहार प्रचार मिलने का पता।

रोशन लाल भोज राज जैन ११६ वीर नगर जैन कलोनी दिल्ली।

महाराजश्री प्रेम चन्द जी लोगों की मिथ्या भ्राति मिटाने में सर्वथा तत्पर रहते थे। कोई भी व्यक्ति किसी प्रकार का भी प्रश्न लेकर आता बिना किसी संकोच के उसका निराकरण कर दिया करते थे। प्रश्न कर्ता का प्रश्न सुनते ही शीघ्र ही निर्णय करके उसका उत्तर अपनी उत्पात बुद्धि द्वारा दे दिया करते थे अर्थात् हाजिर जवाबी थे।

भ्रमण करते हुये महाराजश्री जब हरियाणा प्रान्त के भैसवाल ग्राम में पहुंचे। जहां आर्य समाज का प्रसिद्ध गुरुकुल भी है। अनेक आर्य समाजी

अपना सत्यार्थ प्रकाश ले ले कर चर्चा करने को आ गये। ईश्वर के होने न होने या कर्तृत्व के सम्बन्ध में चर्चा चली। सबके प्रश्नों का समाधान संतोष पूर्वक किया। प्रश्नकर्ता बड़े प्रसन्न हुये। सबने मिल कर महाराजश्री का सार्वजनिक व्याख्यान कराया। व्याख्यान सुन कर तोवे और भी गद् गद् हो गये। आर्य समाजी खड़े होकर महाराजश्री से बोले। "महाराजश्री! आप ऐसे बेधड़क शेर होकर इस कायर मत में क्यों रह रहे हो ? आप आर्य क्यों नहीं हो जाते।

महाराजश्री ने फरमाया कि आर्य किसे कहते हैं ? उत्तर में उन्होंने कहा। जो शराब, मांस चोरी, जुआ आदि दुर्गुणों से दूर रहने वाला हो। वही आर्य कहलाता है। महाराजश्री ने पुन: प्रश्न किया, कि उससे भी ऊंचे नियमों का पालन करने वाला क्या कहलायेगा ? महाआर्य महाराजश्री ने फरमाया। बस फिर मैं तो महाआर्य हूं, नाम मात्र का आर्य क्यों बनूं। पुन: प्रश्न किया आप इतने निर्भीक होते हुये भी ऐसी कायर कौम में क्यों रहते हो ? महाराजश्री ने उत्तर दिया, यह भी तुम्हारी भ्रान्ति है। क्योंकि अहिंसक कभी कायर नहीं होते। दो आदमी है, एक तो किसी को शस्त्र मारता है। और दूसरा उसके घावों की मरहम पट्टी कर रहा हैं। भयभीत हो कर भागेगा कौन ? मारने वाला ही भागेगा न कि मरहम पट्टी करने वाला ? मरहम पट्टी करने वाले को तो किसी प्रकार का भी भय नहीं।

आगे महाराजश्री ने सबके सामने अपना ध्येय बतलाते हुये सिंह गर्जना की कि लोभी लालची गुरुओं ने जो जैन धर्म के प्रति घृणित प्रचार किया हुआ है, उसे मैं निर्मूल करके ही छोड़ूंगा।

महाराजश्री जिस-जिस क्षेत्र में जाते हजारों लोगों के सामने ये बात प्रकट करते थे कि कुछ लोग जैन साधु के प्रति मिथ्या प्रचार करते हैं टट्टी जाकर शुचि नहीं करते हैं। स्नान नहीं करते। ग्लीज रहते हैं आदि-आदि। महाराज श्री फरमाते कि यह सब मिथ्या भ्रान्ति है। जैन शास्त्रों में तो लिखा है कि शुचि किये बिना साधु शास्त्र स्वाध्याय भी नहीं कर सकता। जो कहते हैं स्वयं

ग्लीज रहते हैं। उन्हें मेरा आह्वान है कि प्रति दिन साबुन और तेल लगाकर साफ सुथरे रहने वाले मेरे सम्मुख आयें और आकर तुलना करें कि वे साफ़ हैं या मैं साफ हूं। मैंने तो दीक्षा वाले दिन ही स्नान किया था। उसके पश्चात् आज दिन तक स्नान नहीं किया, फिर भी तुम्हारे से साफ हूँ। भैंस प्रायः नित्य पानी में ही लोटती रहती है किन्तु उसे कोई माता कह कर नहीं पुकारता गाय कभी स्नान नहीं करती उसे माता कहा जाता है। क्योंकि वह गंदगी से दूर ही रहती है।

इसीलिए ब्रह्मचारी के विषय में किसी संस्कृत के विद्वान् ने एक श्लोक में कहा है—

शुचिर्भु मिगतं तोयं, शुचिर्नारी पतिव्रता।
शुचि धर्म परोराजा, ब्रह्मचारी सदा शुचिः॥

साधु गाय के समान हैं क्योंकि वह विषय भोगों की गंदगी से दूर रहते हैं, स्नान करना सोलह शृंगारों में शृंगार माना गया है और शृंगार साधु के लिए वर्जनीय है।

अन्तगढ़ सूत्र का वाचन करते हुये महाराजश्री फरमाया करते थे कि श्री सुधर्मा स्वामी जी के विषय में लिखा है—ज्ञान में प्रधान, दर्शन में प्रधान, चरित्र में प्रधान, और शुचि में प्रधान थे शुचि भी दो प्रकार की है। द्रव्य शुचि और भाव शुचि। वे दोनों शुचियों में प्रधान थे।

एक वार महाराजश्री वड़ौदा से विहार करके एक गांव में आये। वह पुजेरों का क्षेत्र था। उनके साधु भी ठहरे हुये थे। महाराजश्री ने आहार पानी करके विहार कर दिया। जब मकान से नीचे उतरे तो एक पुजेरे साधु ने कहा कि आत्माराम जी म० तो स्थानक वासी साधु थे वे पुजेरे हो गये। दूसरे साधु ने कहा यदि पुजेरे हुये तो कुछ देख कर ही हुये होंगे। उनकी बात सुन कर महाराजश्री वहीं खड़े हो गये और उन से बोले कि जितने अधिकतर मुसलमान हुये हैं। ये हिन्दुओं से हुये हैं, तो वे भी कुछ देख कर ही हुये होंगे। यह बात सुन कर सभी मौन हो गये। आगे किसी का बोल तक नहीं निकला।

आचार्य सुव्रत ने शान्त भाव से उत्तर दिया हे नमूचि! हम अणगार निर्ग्रंथ हैं हमें आपके चक्रवर्ती बनने पर कोई प्रसन्नता नहीं और सात दिन के बाद आप चक्रवर्ती नहीं रहेंगे इसका भी हमें गम नहीं। हम सम्भावी है। स्व-पर कल्याण करना ही अपना धर्म है। गृहस्थों की तरह दरबार में जाकर बधाई देना अपना कल्प नहीं है। इसलिये क्रोधित होने की आवश्यकता नहीं है।

इतनी सरलता से उत्तर देने पर भी नमूचि का क्रोध शान्त नहीं हुआ अपितु और भी अधिक बढ़ गया और आग बबूला होकर बोला बस-बस मैं कोई भी बात सुनने को तैयार नहीं। तुम्हें मेरे राज्य में रहने की आवश्यकता नहीं है। आज ही राज्य छोड़ कर यहाँ से चले जाओ! इस पर आचार्य सुव्रत ने फिर कहा कि चातुर्मास में कहीं भी विहार करना हमारा कल्प नहीं है। अतः ऐसी आज्ञा हमारे लिये न दें। आचार्य के बारम्बार कहने पर भी नमूचि न माना और वापिस दरबार में चला गया।

इतना महान धर्म संकट आने पर भी आचार्य झुके नहीं अपनी मान मर्यादा पर दृढ़ रहे। तनिक भी घबराये नहीं इस धर्म संकट को दूर करने का उपाय सोच कर लब्धि धारी मुनि विष्णु कुमार द्वारा, क्या नमूचि और क्या महापद्म आदि सभी को झुका दिया यह है सच्ची साधुता।

दूसरी ओर आज के कुछ साधु और आचार्य हैं जो कि नये राष्ट्रपति बनने पर उनको बधाई व अभिनन्दन पत्र देने के लिये अपना कल्प तोड़ कर भी बधाई समारोह में सम्मिलित होते हैं। यह कितनी लज्जा की बात है और श्रमण संस्कृति के लिये बहुत घातक है।

राजकोट चातुर्मास के विषय में इससे पूर्व लिख चुके है। राजकोट के बाद महाराज श्री का चातुमास जोधपुर में हुआ उन दिनों महाराज श्री व्याख्यान में प्रश्नव्याकरण सूत्र सुना रहे थे प्रश्नव्याकरण में वर्णन आता है कि पांच प्रकार का संवर और पांच प्रकार का आश्रव। महाराज श्री ने फरमाया कि मन्दिर तथा चैत्यालय बनवाना यह आश्रव द्वार में आता है

शास्त्र पुकार कर कह रहा है कि जो लोग धर्म के नाम पर छ काय के जीवों की हिंसा करते हैं वह मन्द बुद्धि है ऐसे लोगों को वहुत काल तक संसार में परिभ्रमण करना पड़ेगा कुछ लोग ऐसा कहते हैं विद्याचरण और जंघा चरण धारी मुनिनंदी-स्वर द्वीपमें चैत्यालय के दर्शन करने जाते हैं कोई भी मुनि जंघा चरण अथवा विद्याचरण लब्धि से कहीं भी जायगा तो उसे लब्धि प्रयोग करने पर अपने दोषों की आलोचना करनी होगी और प्रायश्चित लेना पड़ेगा तब जाकर वह लब्धि का प्रयोग करने वाला मुनि आराधक होता है। अन्यथा वह मुनि विराधक होता है। ऐसी दशा में उसे चैत्यालय के दर्शन करने से किस फल की प्राप्ति हुई ? विराधक होकर संसार भ्रमण करना पड़ेगा एक दिन महाराज श्री व्याख्यान फरमा रहे थे कि एक भाई महाराज श्री के पास आया तथा कुछ भाईयों ने उसकी सिफारिस की, कि यह भाई आपके व्याख्यान के पश्चात अपने विचार व्यक्त करना चाहता है किन्तु महाराज श्री का पहले से यह सिद्धान्त था कि जो भी अनजान व्यक्ति बोलना चाहता है उसे अपने भाषण के पहले ही समय दिया करते थे क्यों कि कदाचित कोई व्यक्ति अपने सिद्धान्त के विरुद्ध बोल जावे तो उसका युक्ति युक्त उत्तर दे दिया करते थे परन्तु उस दिन भाई की सिफारिस से उस पुजेरे मूर्तिपूजक भाई को बोलने का समय दे दिया तो उस भाई मूर्ति पूजा के समर्थन में बोला और महाराज श्री से उसने प्रश्न किया कि क्या आप नौपदी पूजा स्वीकार नहीं करते ? महाराज श्री ने उसी समय उससे प्रश्न किया कि बत्तीस सूत्रों में से कौन से सूत्र में नौपदी पूजा का विधान उल्लिखित है ? उसने उत्तर दिया कि जिन वत्तीस सूत्रोंको आप मानते हैं इनमें नहीं है। इस पर महाराजश्री ने उससे प्रश्न किया कि जब इन हमारे वत्तीस शास्त्रों में उल्लेख नहीं तब इस प्रश्न को पूछने की क्या आवश्यकता थी ? अतः अन्त में वह भाई निरुत्तर होकर चला गया इसके वाद महाराज श्री का चातुर्मास व्यावर नगर में हुआ व्यावर के विषय में पहले ही उल्लेख कर चुके हैं कि वहां पर महाराज श्री का कितना प्रभाव था महाराज श्री ने व्यावर का चातुर्मास उठने पर वहां से विहार किया जिस समय महाराज श्री सड़क पर आए उस समय एक अजैन भाई ने महाराज

श्री से विनती की कि महाराज श्री यहां पर जो मकान बने हुये हैं इनमें मैं मिल खोलना चाहता हूँ अतः आप वहां पधार कर उस स्थान पर अपने चरण फेर कर मुझे मंगल पाठ सुनाने की कृपा करें महाराज श्री ने उस भाई को कहा कि मैंने तुम्हारे मकान यहीं से देख लिए हैं तुम मंगल पाठ यहीं पर सुनलो और इसके बाद कसाई खाने से पांच बकरों को छुड़ाकर अभयदान दे दो इसके बाद वह व्यक्ति मंगल पाठ सुनकर और पांच बकरों को अभयदान देने का वायदा करके चला गया महाराज श्री आरम्भ के कार्यों में दखल नहीं देते थे उस समय महाराज श्री के साथ चौथमलजी महाराज के श्रावक श्री देवराज जी सुराणा आदि जा रहे थे तो वह परस्पर में चर्चा कर रहे थे कि यहां पर श्री चौथमलजी महाराज के कई चातुर्मास हुये हैं परन्तु जो प्रभाव पंजाब केसरी श्री प्रेमचन्द जी महाराज का हुआ वह उनका भी नहीं हुआ महाराज श्री की व्याख्यान शैली अतीव विलक्षण है। महाराज श्री एक बार दिल्ली चान्दनी चौक में विराजमान थे वहां पर समायिक करने वाले भाईयों ने जिकर किया कि यहां पर तपस्वी रोशन लालजी महाराज का चातुर्मास था उन दिनों रात को एक संस्कृत का पंडित आया और उसने श्री रोशनलाल जी महाराज से संस्कृत में बातचीत शुरू की किन्तु वह उसके प्रश्नों का उत्तर न दे सके उस पंडित ने महाराज श्री रोशन लालजी के प्रति अयोग्य शब्दों का प्रयोग किया जिससे हमें बहुत नीचा देखना पड़ा वही पंडित एक दिन अचानक रात में महाराज श्री के पास में भी आया और वार्तालाप करने लगा उसने संस्कृत के इस वाक्य से वार्तालाप प्रारम्भ किया "कर्मणा शूद्रो भवति" उस पंडित के इतना कहने पर महाराज श्री ने श्री उत्तराध्ययन जी शास्त्र के पचीस वें अध्ययन की एक पूरी गाथा संस्कृत में कहदी "कमर्णा ब्राह्मणों भवति, कर्मणा भवति क्षत्रियो" वैश्यः कमर्णा भवति, शूद्रो भवति कमर्णा" महाराज श्री से गाथा के इस संस्कृत रूपान्तर को सुनकर वह पंडित अतीव प्रसन्न एवं प्रभावित हुआ तथा बोला कि मैंने एक पद कहा था आपने चारों पद कह डाले। इसके साथ ही उसने विनय पूर्वक महाराज श्री से प्रार्थना की, कि आप मुझे भी आत्म कल्याण के लिये कुछ शिक्षा देने की कृपा करें उस पंडित की विनय पूर्ण

जिज्ञासा को सुन कर महाराज श्री ने उसे आत्मबोध रूपशिक्षा दी इसके बाद उसने अपने दोषों की आलोचना की और महाराज श्री का विशेष श्रद्धालु भक्त बना और महाराज श्री के दर्शनों को समय समय पर आता रहा।

नाम कर्म की आठ प्रकृति हैं उनमें से एक प्रकृति का नाम पराघात नाम प्रकृति है। पराघात नाम उस प्रकृति को कहते हैं जिस प्रकृति वाला मनुष्य अपने प्रभाव से दूसरे के तेज और प्रभाव को दबा दे अर्थात् पस्त करके उस पर अपना प्रभाव स्थापित करदे तथा उसे अपनी ओर आकर्षित करदे। और आचार्य की आठ संपदाए बतलाई हैं। इनमें प्रथम आचार संपदा, दूसरी सूत्र संपदा, तीसरी शरीर संपदा, चौथी वांचना संपदा, पांचवी वचन संपदा, छठी संग्रह संपदा, सातवीं मति संपदा, आठवीं प्रयोग संपदा, जिसमें यह आठ संपदाएं विद्यमान हों वह साधक आचार्य पद के योग्य होता है यह उपर्युक्त आठ संपदाएं महाराज श्री के जीवन में प्राय: करके घटित होती थीं, शास्त्रों में पुण्योदय से शुभ चाल का वर्णन आया है वह भी महाराज श्री पर पूर्णतया घटित होती थी प्रथम विहार प्रचार दिल्ली से प्रारम्भ हुआ था और दिल्ली में ही समाप्त हुआ।

इस विहार प्रचार का दिल्ली से प्रारम्भ होना और दिल्ली में ही पूर्ण होना स्वभाविक था क्योंकि महाराज श्री का भौतिक शरीर दिल्ली में ही समाप्त हुआ यह विहार प्रचार महाराज श्री के देवलोक होने के ६ या ७ दिन बाद लिखवाना प्रारम्भ कर दिया था अनुमानत: यह विहार प्रचार मूल रूप से सवा महीने में पूर्ण होगया था किन्तु बाद में भी कुछ बातें नोट की गईं। संपादन के लिये लाला श्री रतनचंद जी की सुपुत्री तथा श्री मोती लाल जी स्यालकोट के सुपुत्र श्रीसागरचन्द जी की धर्म पत्नी सत्यावती बाई अपने पति के साथ दर्शनों के लिये करोल बाग स्थानक में आई उस समय यह द्वितीय विहार प्रचार की एक कापी लिखी चा चुकी थी उस बाई ने पूछा कि क्या आप यह महाराज श्री का जीवन चरित्र लिख रहे हैं ? उत्तर में मैंने कहा कि महाराज श्री का विहार प्रचार लिखा जा रहा है। यह सुनकर उस बाई ने अर्ज की कि

इसका संपादन मैं करुंगी मैंने कहा कि आप परिवार वाली हो इसके संपादन करने में काफी समय लग सकता है इस पर वाई ने कहा कि मैं अप्रेल के महिने तक इसके संपादन का कार्य पूर्ण करदूंगी मैंने कहा कि इसे शीघ्र छपवाने का विचार है अतः आप एक कोपी का संपादन शीघ्र करदें जिससे छपना प्रारम्भ हो जाय ऊसने उत्तर दिया कि मैं पहले सारा संपादन करलूं वाद में ही छपवाना उचित रहेगा। इसके वाद उसे संपादन करने के लिये कापी देदी। और उसने संपादन का कार्य प्रारम्भ कर दिया किन्तु उसके आगे कई ऐसी समस्याएं आईं जैसे वाई की वुवा बीमार हो गई तथा पुस्तक का शास्त्र सम्वन्वी सूक्ष्म विषय आया जिसके कारण वाई लिखने में आगे प्रगति न कर सकी, अप्रैल के महीने के समाप्त होने तक बाई ने आधा कापी से कुछ अविक सम्पादन कर दिया था अनुमानतः ९२ पृष्ट संपादन किए, यह संख्या छपे पृष्टों की है। उसके वाद रावलपिण्डी वाले लाला श्री वाडाशाह के सुपुत्र श्री धनदेव से संपादन के विपय में संपर्क किया गया उन्होंने विश्वास दिलाया कि जो सत्यावती देवी ने सम्पादन किया है मैं उसका संशोवन करदूंगा और शेप सभी का सम्पादन भीं करदूंगा अतः इस विहार प्रचार पुस्तक का सम्पादन मास्टर श्री वनदेव रावलपिण्डी वाले कर रहे हैं। मास्टर श्री धनदेव ने लगभग १७५ पृष्ठों का संपादन किया यह संख्या छपे पृष्ठों की है जिसमें उन्हें अनुमानतः ५ या ६ महीने लगे, प्रेस को यथा समय पर संपादित लेख न मिल सकने के कारण संपादन का शेष कार्य व्यावर के भाई जगदीश सोलंकी से कराया गया उसनें अनुमानतः १० या १२ दिन में सारा कार्य पूर्ण करदिया।

महाराजश्री की शिष्य संपदा

श्री बनवारी मुनि ।

श्री तुलसी मुनि ।

श्री शान्ति मुनि ।

श्री दया मुनि ।

श्री ओम् मुनि ।

श्री जिनदास मुनि ।

और एक अनु शिष्य है, पार्श्व मुनि, कोई ऐसा कहे कि शान्ति मुनि इस समय आचार्य श्री की नेश्राय में विचर रहा है परन्तु उसका पिछले चातुर्मास में पत्र आया था, लिखा था कि मैं आपका शिष्य हूँ और आपका ही शिष्य रहूँगा और आप श्री से अपने पिछले अपराधों की क्षमा चाहता हूं। मैंने महाराजश्री से पूछा था कि उसने पत्र में शान्ति मुनि लिखा था या शान्ति ऋषि ? महाराजश्री ने फरमाया शान्ति मुनि लिखा है इस कारण से उसका नाम लिखवाया गया है। शान्ति मुनि को महाराजश्री का शिष्य लिखवाया है, इस विषय में कोई ऐसा कह सकता है कि शान्ति मुनि तो इस समय पूज्य श्री आनन्द ऋषि जी महाराज की आज्ञा में विचर रहा है। जहाँ तक आज्ञा का सवाल है उसमें कोई आपत्ति नहीं क्योंकि श्री आनन्द ऋषिजी महाराज वर्तमान में श्रमण संघ के आचार्य हैं सारा श्रमण संघ उनकी आज्ञा में ही विचरता है आपत्ति केवल इतनी ही है कि शान्त मुनि के स्थान पर शान्ति ऋषि लिखना प्रारम्भ कर दिया गया यह शब्द सांप्रदायिकता का द्योतक है। श्री आनन्द ऋषि जी महाराज को पूर्व संप्रदाय के नाम से संबोधित किया जाता है, इस विषय में चर्चा भिनासर सम्मेलन में भी चली थी यह जो सांप्रदायिकता का वाचक शब्द है इसे हटा दिया जाय परन्तु इसको हटाने को सहमत न हुये मेरी स्मृति में ऐसा है। शान्ति मुनि मूल रूप से पंजाब केसरी श्री प्रेमचन्दजी महाराज के ही शिष्य हैं शान्ति मुनि के विषय में पूर्व वृतान्त लिखा जाता है पूज्य

श्री आनन्द ऋषि जी महाराज उन दिनों श्रमण संघ के प्रधान मंत्री थे श्रमण संघ के अन्तर्गत विचरने वाले साधुओं को प्रायश्चितादि देने का अधिकार उन्हीं के पास था, शान्ति मुनि को प्रायश्चित आता था अतः शान्ति मुनि उनके पास गये उन्होंने शान्ति मुनि को प्रायश्चित देकर अपने पास ही रख दिया वि० सं० २०१२ में भिनासर सम्मेलन से पूर्व साधु संघ व्यावर में एकत्रित हुआ जिनमें वर्तमान आचार्यश्री आनन्द ऋषि जी महाराज दिवाकर शिष्य श्री प्यारचन्द जी महाराज मरुधर केसरी महाराज, पंजाव केसरी श्री प्रेम चन्दजी महाराज आदि अनुमानतः पेंतीस-छत्तीस साधु विराजमान थे उस समय शान्तिमुनि प्रधान मंत्री के साथ ही था श्री प्यार चन्द जी महाराज ने प्रधान मंत्री जी महाराज को कहा कि आपको प्रायश्चित देने का अधिकार है प्रायश्चित देकर अपने पास रखने का नहीं आपने शान्ति मुनि को प्रायश्चित देकर अपने पास रखा हुआ है। आपको इसे पंजाव केसरी को सौंप देना चाहिये इस पर उन्होंने शान्ति मुनि को महाराजश्री को सौंप दिया इसके पश्चात साधु भिनासर सम्मेलन में सामिल होने के लिये व्यावर से विहार करना चाहते थे उस समय शान्ति मुनि ने महाराजश्री से अर्ज की मैं इस समय चलने में असमर्थ हूं अतः कुछ समय के लिये मुझे यहीं छोड़ दिया जाए इस पर महाराजश्री ने उसको फरमाया कि मैं इस विषय में विचारूंगा उस समय यहां पर पूज्य श्री अमोलक ऋषि जी महाराज के अनशिष्य, भानुऋषि अध्ययन के लिये व्यावर में ही थे महाराजश्री ने भानु ऋषि को अपने पास बुलाया और भानु ऋषि को फरमाया कि कुछ समय के लिये शान्ति मुनि यहां रहना चाहता है यदि हमारा व्यावर में चातुर्मास हुआ तो हमारे यहाँ आने तक इसका पूरा-पूरा ध्यान रखना ! इसे यदि कोई विशेष कार्य करना हो तो इसे आप लोगों की आज्ञा लेनी चाहिये मेरे यहां आने तक इसका पूर्ण दायित्व आपके ऊपर है। इसके पश्चात महाराजश्री ने दिवाकर श्री चौथमल जी के श्रावक श्री देवराज सुराणा को महराजश्री ने याद किया उसने उपस्थित होकर महाराजश्री से अर्ज की मुझे क्या आज्ञा है ? महाराजश्री ने उसे फरमाया मैं शान्ति मुनि को यहाँ छोड़ कर जा रहा हूं मेरे यहां वापिस आने तक शान्तिमुनि की सार संभाल

आपको रखनी होगी इसे मैं आप लोगों की जुम्मेवारी पर यहाँ छोड़ कर जा रहा हूँ इस पर उन्होंने कहा कि महाराज जैसा आपने फरमाया वैसा ही होगा इसके पश्चात महाराजश्री भिनासर सम्मेलन में पधारे, भिनासर सम्मेलन की समाप्ति के पश्चात् महाराजश्री के पास ब्यावर से तार और एक पत्र आया महाराजश्री ने इनका कोई उत्तर नहीं दिलाया यहां से ब्यावर की तरफ विहार कर दिया रास्ते में ब्यावर के देवराज सुराणा आदि बहुत से भाई महाराजश्री के दर्शनों को आए और उन्होंने महाराजश्री से पूछा कि महाराजश्री आपको एक तार और एक पत्र मिल गया? महाराजश्री ने फरमाया कि हां मिल गया! यह तार और पत्र हमने शान्ति मुनि के कहने पर आपको भेजे उनका कहना था कि मैं गुरु महाराज की सेवा में जाना चाहता हूं महाराजश्री ने फरमाया कि इस समय तो हम ब्यावर की तरफ ही आ रहे हैं रास्ते में आने की कोई आवश्यकता नहीं इसके बाद महाराजश्री चातुर्मास बैठने के लिये ब्यावर पहुंचे वहां पधारने पर भानुऋषि महाराजश्री के पास आए और महाराजश्री से अर्ज की कि आप शान्ति मुनि को हमारे पास छोड़ गए थे हमने अपनी जुम्मेवारी ठीक प्रकार से निभाई यहां पर चम्पा लाल जी महाराज पधारे थे जिस समय चम्पा लाल जी महाराज यहां से विहार करने लगे उस समय शान्ति मुनि ने हमसे ऐसा कहा कि मैं श्री चम्पालाल जी महाराज के साथ कुछ दिन विचर आऊं और महाराजश्री के यहां पधारने से पूर्व ही मैं यहां पहुंच जाऊंगा उसके वापिस आने के विश्वास दिलाने पर हमने उसे जाने की स्वीकृति दे दी अतः वह श्री चम्पा लाल जी महाराज के साथ विचरने को चला गया कुछ समय तक श्री चम्पा लाल जी महाराज के साथ रह कर विना हमें सूचित किए उपाध्याय श्री आनंद ऋषि जी महाराज के साधु के पास चला गया और अब वापिस आने को इनकार करता है इसके पश्चात् भानु ऋषि ने एक पत्र उपाध्यायश्री आनन्द ऋषि जी महाराज को लिखा कि पंजाव केसरी शान्ति मुनि को हमारी जुम्मेवारी पर यहां छोड़ गये थे शान्ति मुनि हमें वापिस आने का आश्वासन देकर श्री चम्पा लाल जी महाराज के साथ विचरने गया था अब वह चम्पालाल जी

महाराज को छोड़ हमें आपके शिष्यों के साथ मिला अतः आप शान्ति मुनि को शीघ्रतया पंजाब केसरी के पास वापिस भेजदें ऐसा करके उसने हमारे साथ विश्वास घात किया है अतः शान्ति मुनि को अपने पास रखना आपको नहीं कल्पता ऐसा ही एक-पत्र उपाध्यायश्री आनन्द ऋषि जी महाराज को देवराज सुराणा ने लिखा और एक पत्र प्रधान मंत्री श्री मदन लाल जी महाराज ने भी लिखा मेरा ऐसा ख्याल है कि एक पत्र श्री उपाचार्य श्री गणेशी लाल जी महाराजने भी लिखा है और महाराजश्री ने अनुमानत तीन पत्र लिखे महाराज श्री ने अपने पत्र में लिखा कि शान्ति मुनि आपके पास जो आया है वह अवैधाानिक रूप से आया है सैद्धान्तिक रूप से न तो आप उसे रख सकते हैं और न ही मैं उसे आपके पास रहने की आज्ञा दे सकता हूँ यदि वह जाना चाहे तो वह लुधियाना में आचार्यश्री आत्मारामजी म० की सेवामें पहुंच जाए। अथवा मुणक में तपस्वी श्री फकीरचंदजी महाराज के पास चला जाए किन्तु आप उसे अपने पास न रखें इन पत्रों के उत्तरों में उपाध्यायश्री की ओर से गोल-मोल उतर आते रहे ऐसा विश्वास है कि आनन्द ऋषि जी महाराज की ओर से जैसे उत्तर महाराजश्री को प्राप्त हुये वैसे ही अन्य पत्रों का भी उत्तर दिया गया होगा। इस विषय में पृष्ठ ५२ पर १६वें प्रश्न का उत्तर देखें। यह पत्र व्यवहार महाराजश्री के पास काफी दिनों तक रहा किन्तु महाराजश्री ने इन पत्रों का राग द्वेष की वृद्धि का कारण समझ कर उन्हें समाप्त कर दिया यदि आचार्यश्री उचित समझें और वे पत्र उनके पास मौजूद हों तो उन पत्रों को जैन प्रकाश आदि पत्रों में प्रकाशित करा सकते हैं जिससे समाज को इस विषय में पूर्ण जानकारी हो सके इस काण्ड के बाद पूज्यश्री आनन्द ऋषि जी महाराज अनेकों बाद महाराजश्री से मिले लेकिन उन्होंने महाराजश्री से इस विषय में कोई खिमत खिवोना नहीं किया। यहां पर मैंने इस बात का वर्णन प्रसंग वश किया किसी की अशातना की भावना से नहीं इससे भी अधिक विवादास्पद प्रसंग आचार्य श्री हस्तीमलजी महाराज के साथ रतन मुनि के विषय में चला था परन्तु जब महाराजश्री सादड़ी संमेलन में भाग लेने जा रहे थे उस समय अजमेर में अनुमानत तीस चालीस साधु एक-

त्रित हुए थे उस समय आचार्य श्री हस्तीमलजी महाराज ने बहुत ही विनम्र भाव से महाराजश्री से रतन मुनि के विषय में माफी मांगी और महाराजश्री ने उन्हें क्षमा कर दिया था इसलिये उस प्रसंग का यहां उल्लेख करने की आवश्यकता न थी किन्तु शान्ति मुनि का प्रसंगवशात् उल्लेख किया गया है वैमनस्य भाव से नहीं इस विहार प्रचार पुस्तक में बहुत से महापुरुषों के नाम प्रसंगवश आयेंगे इससे यदि किन्ही महानुभावों को कष्ट हो तो मैं सब महापुरुषों से क्षमा चाहता हूँ।

महाराजश्री का साहित्य प्रकाशित करने वाले महानुभावों के नाम—

१. प्रेम संदेश—लाला कर्म चंद अग्रवाल सियालकोट

२. सत्यासत्य निर्णय—भक्त चुन्नीलाल पन्ना लाल जी

३. प्रेम वाणी—श्री चुनी लाल भाई नागजी वोरा तथा साँकनी बाई वोरा धर्म दा ट्रस्ट फंड राजकोट

४. प्रेम सुधा—सेठ नाथू लाल जी सेठिया मालिक फर्म भीमराज हीरा लाल रतलाम

५. प्रेम सुधा—श्रीमती नगीना देवी धर्म पत्नी श्री किशन चंद चौरडिया २२५८ गली आनंद दिल्ली

(द्वितीय भाग द्वितीय संस्करण) नगीनादेवी की आज्ञा से उनके दामाद श्री जिनेन्द्र कुमार वकील ने लिखा हुआ है।

६. प्रेम सुधा—श्री वर्धमान स्था० जैन श्रावक संघ ब्यावर

७. प्रेम सुधा—सनमति ज्ञान पीठ लोहा मंडी आगरा

८. प्रेम सुधा—श्री इन्द्र सैन जैन मालिक कुमार ब्रादर्स केमिस्ट चांदनी चौक दिल्ली

९. प्रेम सुधा—सेठ मुन्ना लाल जैन पार्टनर शिवनाथ राय रामधारी नया बाजार दिल्ली

१०. प्रेम सुधा—मिखीमल विशम्बर सहाय सराय लोहारा जिला मेरठ

११. प्रेम सुधा—श्री हंसराज मदनलाल जैन
गुजरांवाला जालन्धर

१२. प्रेम सुधा—दानी गुप्त नाम
(प्रेम साहित्य जैन भंडार)
जालन्धर

१३. प्रेम सुधा—दानी गुप्तदान
(प्रेम साहित्य जैन भंडार)

१४. प्रेम सुधा—राजाराम एण्ड सन्स मोटर पार्टस डीलर्स
अमृतसर

१५. प्रेम सुधा—श्री इन्द्र सैन जैन मालिक कुमार ब्रादर्स तथा ड्रगडील
कारपोरेशन चांदनी चौक दिल्ली

१६. प्रेम सुधा—गुप्त दानी
(प्रेम साहित्य जैन भंडार)
जसवन्त सिंह मीकी वाला जालंधर

१. विहार और प्रचार—श्री इन्द्र सेन जैन कुमार ब्रादर्स कैमिस्ट
व ड्रगडील कार्पोरेशन
चाँदनी चौक दिल्ली

२. प्रेम सुधा—विनय कुमारी जैन सुपुत्री नगीना देवी
जैन दिल्ली वाली जोधपुर
(द्वितीय आवृत्ति)

पाठकों की सुविधा हेतु जालंधर नगर में एक कमेटी बनी हुई थी, प्रेमसुधा आदि साहित्य को प्रकाशित करना एवं पाठकों तक पहुंचाना तथा संचित साहित्य की देख भाल करना उसका कार्य था। पांचवें भाग से लेकर तेरहवें भाग तक उनके पास थे और प्रथम चार भागों में से दूसरा भाग समाप्त हो गया था, प्रथम भाग और तीसरे भाग का प्राप्ति स्थान ब्यावर था। चौथे भाग का प्राप्ति स्थान सन्मति ज्ञानपीठ आगरा था उपर्युक्त

कमेटी प्रेम सुधा के सभी भागों को ग्राहकों तक पहुंचाती थी वर्तमान में यह क्रम चल रहा है अथवा नहीं इसका मुझे ज्ञान नहीं मुझे इस विषय में भी ज्ञान नहीं कि इस कमेटी ने अब तक कितनी पुस्तकें वितरित कीं और कितनी वेचीं, और प्रेमसुधा पुस्तकों के कितने भाग इनके पास हैं ? और कितने नहीं, और जो समाप्त हो चुकीं उन्हें प्रकाशित करेंगे या नहीं इस कमेटी के दो सदस्य ला० दौलतरामजी श्री रतन लाल किताबों वाला स्वर्गवासी हो गए, मुझे यह भी ज्ञान नहीं कि वर्तमान में इस कमेटी में कितने सदस्य हैं ? और वे सदस्य कौन कौन हैं ?

(शवयात्रा)

महाराज श्री की शव यात्रा के विषय में मुझे विशेष जानकारी नहीं और न मैं इस विषय में जानकारी करने का इच्छुक हूं। ऐसा सुनने में आया कि महाराज श्री की शव यात्रा में हाथी, घोड़े, ऊंट आदि भी थे और लाला श्री पाल के मुख से सुना कि शव यात्रा में लाखों की संख्या में जनता थी और फगवाड़े वाले ला० टेकचंद के मुख से ऐसा सुना कि इससे पूर्व मैंने अपने जीवन में किसी शव यात्रा में इतना जनसमूह नहीं देखा। और ऐसा भी सुनने में आया कि पंजाब से हजारों लोग शव यात्रा में शामिल होने के लिये आना चाहते थे किन्तु उस दिन पंजाब में बसों की हड़ताल के कारण दिल्ली नहीं आ सके, और वे समय पर न पहुँच सके।

महाराजश्री के अन्तिम दर्शन किये और मैंने दर्शन, करके लाभ उठाया और नमस्कार किया इन वाक्यों के महाराजश्री विरोधी थे। महाराजश्री फरमाया करते थे कि जैसे भगवान् की मूर्ति को नमस्कार किया ऐसे ही किसी साधु के शव को नमस्कार कर लिया मूर्ति भी जड़ है और साधु का शव भी जड़ हैं चेतनता दोनों में नहीं है। हाँ इतना अन्तर है कि मूर्ति दूसरे पुद्गलों से बनाई जाती है और वह ऐकन्द्रिय का शव है। और शव उसी का शरीर है जो कुछ समय पूर्व पूजा का अधिकारी था। महाराजश्री ऐसा फरमाया करते थे कि पूजा

तो गुणों की है शरीर की नहीं। जैसे आज पांच महाव्रती साधु है वह सम्मान और नमस्कार का अधिकारी है यदि वह साधु व्रतों को छोड़ देता है और साधु वृत्ति से पतित हो जाता है तब उसको कौन नमस्कार करता है। अर्थात् कोई नहीं करता। जिसने साधुत्व को छोड दिया उसका शरीर भी वही है और आत्मा भी वही है फिर उसे नमस्कार क्यों नहीं किया जाता? उसको नमस्कार इस लिये नहीं किया जाता कि उसमें जो पांच महाव्रत रूप गुण थे वे नहीं रहे अतः वह नमस्कार का पात्र नहीं। किन्तु साधु का जो शव है उसमें तो उसकी आत्मा भी नहीं और न हीं पांच महाव्रत रूपगुण हैं फिर उसे नमस्कार कैसे किया जाय? साधु के शव के विषय में शास्त्रों में दो बातें चली हैं निहारी और अ-निहारी। निहारी का अर्थ होता है कि उसके शव का संस्कार करना जैसे वर्त्तमान चल ही रहा है। और दूसरा अनिहारी उसे कहते है जैसे कोई साधु पर्वत आदि पर जाकर संथारा कर दें सेवा के लिये कुछ साधु उसके साथ चले जाते हैं जब तक जीवित रहता है तब तक उसकी सेवा करते हैं जब उसका स्वर्गवास होजाता है तब उसका भंडोउपकरण लेकर साधु वापिस आजाते हैं फिर साधु के उस मृतक शरीर को चाहे पशु पक्षी खाएं या किसी भी स्थिति में रहे इसका नाम अनिहारी है।

इसके विषय में एक लेख श्री रतनचंद डोसी के सम्यग्दर्शन में तब देखने में आया था हम जब बम्बई में थे उस लेख में ऐसा वर्णन था कि सैलाना का कोई भाई कालकर गया था इसके बाद सैलाना से बाहर के किसी भाई ने सैलाना आकर उस मरे हुए भाई के शव के अन्तिम दर्शनों का लाभ लिया। उन दिनों महाराजश्री के पास सैलाना का कोई भाई दर्शनों के लिये आया उस समय महाराजश्री ने उस भाई से कहा कि सम्यग्दर्शन में ऐसा लेख पढने में आया है। इसके बाद श्री डोसी जी ने महाराज श्री के पास पत्र भेजकर इस विषय पर अपनी ओर से स्पष्टी-करण दिया, इस विषय में मेरी स्मृति में तो भाव इतना ही है न्यूनाधिक भी हो सकता है।

हमने ऐसा भी सुना है कि महाराज श्री की शव यात्रा के समय लाला इन्द्र

सैन ने (इक्कावन हजार) ५१,००० रुपये बोले और ऐसा भी सुना है कि बड़सट निवासी सेठ बलदेव दास के सुपुत्र मेघ कुमार और आनन्द कुमार ने (ढाई लाख) २,५०,००० रुपये बोले हैं और ऐसा भी सुनने में आया है कि दो लाख, पौने दो लाख रुपया इकठा भी हुआ। अनुमानत यह पांच लाख रुपये किस कार्य में प्रयोग में आयेंगे ? कुछ लोगों के मुख से ऐसा सुनने में आया है कि "महाराज श्री की शवयात्रा के समय जिन महानुभावों ने धन-राशि के दान की घोषणा की है वह केवल नाम के लिये की गई हैं देने के लिये नहीं) महाराजश्री के भक्तों के प्रति ऐसी शंका करना उचित प्रतीत नहीं होती। महाराजश्री के भक्तों के प्रति लोगों की ऐसी धारणा सुनने में आई है कि वे महाराज श्री के संकेत मात्र से दश, पंद्रह लाख रुपये तक दान देने को तत्पर रहते थे कहा भी है कि जिसका मन ऊंचा उसका सब कुछ ऊंचा, जिसका मन नीचा, उसका सब कुछ नीचा, महाराजश्री फरमाया करते थे कि—ऊंचा तो ऊंची मजे, नीची मजे अनजान। जो ऊंचा नीची भजे, होवे अणचिन्ती हान। अत: महाराजश्री के भक्तों के प्रति ऐसी शंका नहीं होनी चाहिए। ऐसा सुनने में आया कि जैनभूषण पंजाबकेसरी श्री प्रेम चन्द जी महाराज के नाम से अस्पताल खोलना चाहते हैं इस समय अस्पताल आदि खोलने में या न खोलने में महाराज श्री की आत्मा को कोई लाभ हानि नहीं, महाराज श्री ने अपने जीवन में जो संयम आदि का पालन किया दीन दुखी विधवाओं के लिये जो अनुकंपा भाव से उपदेश दिया उसका फल उनकी आत्मा के साथ रह सकता है। महाराज श्री अपने जीवन में अपने करुणामय उपदेशों से महाराज श्री के नाम से जो श्री वैजिटेरियन सोसायटी खुली हुई थी उसमें यह भी एक नियम था कि यथा शक्ति दीन दुखी विधवा अनाथ आदि की सेवा करना जिससे हजारों दीन दुखी विधवाओं की इस कमेटी के माध्यम से सेवा की गई और महाराज श्री के नाम से कई स्थानों पर औषधालय खुले जैसे सयालकोट गुजरां वाले, गुरु के जंडियाले में अब भी महाराज श्री के नाम से होम्यो पैथिक औषधालय चल रहा है और वहां पर प्रतिवर्ष दो सौ ढाई सौ लोगों की आखों के ओपरेशन इन

कमेटी की ओर से किये जाते हैं इसी प्रकार आंखों के उपचार का कार्यक्रम इस कमेटी के माध्यम से मलेर कोटले में प्रति वर्ष चलाया जाता है इस लिए इस समय महाराज श्री के नाम से जो अस्पताल आदि खोलने के विचार रखते हैं यह भाईयों की महाराज श्री के प्रति श्रद्धा का प्रतीक है। किसी महापुरुष के नाम से दीन दुखी जीवों को सहायता और शान्ति पहुँचे और उनका दुख। दूर हो ऐसा कार्य करने वाले पुण्य के भागी होते हैं क्यों कि पुण्य और पाप के बन्ध के तीन-तीन कारण होते है मन, वचन, काया। यह तीनों शुभ पुण्य रूप हैं और अशुभ पाप रूप हैं। शास्त्रों में पुण्य नौ प्रकार का बताया गया है और दान दस प्रकार का बताया गया है उनका समावेश इन्हीं में हो जाता है।

(मुझे खेद है)

एक बात यहां बड़े खेद के साथ लिखवानी पड़ती है कि श्रावकों को साधुओं के वचनों पर विश्वास नहीं रहा, क्योंकि आजकल साधुओं से भी हस्ताक्षर करवाये जाते हैं ऐसा किसी भी शास्त्र में देखने को नहीं आया कि साधु गृहस्थियों को विश्वास दिलाने के लिये अपने हस्ताक्षर कर दे। साधु के तो वचन ही हस्ताक्षरों से अधिक मूल्य रखते हैं क्यों कि यदि साधु एकबार वचन दे कर पीछे हटता है तो उसका दूसरा महाव्रत खण्डित हो जाता है। फिर उसमें साधु भाव नहीं रहता शास्त्र ऐसा कहता है कि मोह कर्म के उदय होने के कारण ब्रह्मचर्य व्रत से भ्रष्ट होने पर पुनः मोहकर्म के उपशान्त होने पर वह साधु बन सकता है और उसे आचार्य उपाध्याय आदि ६ पदवीयों में से किसी पदवी की प्राप्ति हो सकती है परन्तु इरादातन झूठ बोलने वाले को कोई पदवी नहीं आती।

साधुओं के हस्ताक्षर करने की प्रथा पहले नहीं थी इस प्रथा का प्रारम्भ सादड़ी सम्मेलन से हुआ सादड़ी सम्मेलन में साधुओं से हस्ताक्षर करवाये गये थे कि हम श्रमण संघ के वफादार रहेंगे "मेरा ख्याल ऐसा है कि इस विषय पर साधुओं से हस्ताक्षर करवाये गये थे इससे पूर्व कोई भी क्रिया पात्र साधु अपने हस्ताक्षर करके नहीं देता था उस समय भी कितनें साधु सतीयों ने अपने हस्ताक्षर नहीं किये थे। आजकल तो छोटी-छोटी बातों पर साधुओं से हस्ताक्षर

करवाये जाते हैं जो श्रमण संघ को छोड़ गये उन्होंने क्या हस्ताक्षर नहीं किये थे? यदि किये थे तो श्रमणसंघ क्यों छोड़ा ? जो तीनों ही सम्मेलनों के अध्यक्ष एवं संरक्षक रहे क्या वे श्रमण संघ में रहे ? महाराजश्री के सन्मुख तो किसी को ऐसी बात करनेका साहस नहीं पड़ना था मैंने अपने कानों से सुनाकि व्यावर में महाराज श्री एक कमरें में अलग बैठे हुये थे उस समय कविजी महाराज के पास पांच-छ श्रावक बैठे हुये थे वे श्रावक कविजी से बोले कि हम पंजाब केसरी श्री प्रेमचंद जी महाराज से कुछ बात करना चाहते है किन्तु उनसे बात करने का साहस नहीं हो रहा है इस पर कविजी महाराज ने उनसे कहा कि आप लोग उनसे बात करने में घबराएं नहीं क्यों कि साधु सबके हितैषी होते हैं। एक बार शक्ति नगर दिल्ली में कविजी महाराज पधारे हुए थे बातचीत के लिये स्थानक में एकत्रित हुये थे जिनमें आचार्य श्री आनंद ऋषिजी महाराज जैन भूषण पंजाब केसरी श्री प्रेमचंद जी महाराज उपाध्याय श्री कविजी महाराज उनके साथ श्री अमोलकचन्द जी महाराज और मैं भी था श्री सुशील मुनि, श्री ज्ञान मुनि सदर वाले यहां पर परस्पर में वार्त्तालाप चल रहा था महाराज श्री ने सामान्य रूप से प्रश्न किया कि ज्योतिषियों के बीस भेद हैं यदि ज्योतिषियों को न माना जाय तो जीवके ५६३ भेदों में से ५४३ भेद शेष रह जाते हैं इस पर कविजी महाराज तो मौन रहे किन्तु अमोलक चन्द जी महाराज को क्रोध सा आ गया कवि महाराज उन्हें रोकने लगे इस पर महाराज श्री उनसे पूछने लगे कि क्या बात है इसपर श्री सुशील मुनि बोले कि उनको ब्लड प्रेसर चढ़ जाता है इस पर महाराज श्री हंसकर बोले कि इन्हें गोली देनी चाहिये।

आचार्य सुव्रत ने शान्त भाव से उत्तर दिया हे नमूचि! हम अणगार निर्ग्रंथ हैं हमें आपके चक्रवर्ती बनने पर कोई प्रसन्नता नहीं और सात दिन के बाद आप चक्रवर्ती नहीं रहेंगे इसका भी हमें गम नहीं। हम सम्भावी है। स्व-पर कल्याण करना ही अपना धर्म है। गृहस्थों की तरह दरबार में जाकर बधाई देना अपना कल्प नहीं है। इसलिये क्रोधित होने की आवश्यकता नहीं है।

इतनी सरलता से उत्तर देने पर भी नमूचि का क्रोध शान्त नहीं हुआ अपितु और भी अधिक बढ़ गया और आग बबूला होकर बोला बस-बस मैं कोई भी बात सुनने को तैयार नहीं। तुम्हें मेरे राज्य में रहने की आवश्यकता नहीं है। आज ही राज्य छोड़ कर यहाँ से चले जाओ! इस पर आचार्य सुव्रत ने फिर कहा कि चातुर्मास में कहीं भी विहार करना हमारा कल्प नहीं है। अतः ऐसी आज्ञा हमारे लिये न दें। आचार्य के बारम्बार कहने पर भी नमूचि न माना और वापिस दरबार में चला गया।

इतना महान धर्म संकट आने पर भी आचार्य झुके नहीं अपनी मान मर्यादा पर दृढ़ रहे। तनिक भी घबराये नहीं इस धर्म संकट को दूर करने का उपाय सोच कर लब्धि धारी मुनि विष्णु कुमार द्वारा, क्या नमूचि और क्या महापद्म आदि सभी को झुका दिया यह है सच्ची साधुता।

दूसरी ओर आज के कुछ साधु और आचार्य हैं जो कि नये राष्ट्रपति बनने पर उनको बधाई व अभिनन्दन पत्र देने के लिये अपना कल्प तोड़ कर भी बधाई समारोह में सम्मिलित होते हैं। यह कितनी लज्जा की बात है और श्रमण संस्कृति के लिये बहुत घातक है।

राजकोट चातुर्मास के विषय में इससे पूर्व लिख चुके है। राजकोट के बाद महाराज श्री का चातुमास जोधपुर में हुआ उन दिनों महाराज श्री व्याख्यान में प्रश्नव्याकरण सूत्र सुना रहे थे प्रश्नव्याकरण में वर्णन आता है कि पांच प्रकार का संवर और पांच प्रकार का आश्रव। महाराज श्री ने फरमाया कि मन्दिर तथा चैत्यालय बनवाना यह आश्रव द्वार में आता है

करवाये जाते हैं जो श्रमण संघ को छोड़ गये उन्होंने क्या हस्ताक्षर नहीं कि थे? यदि किये थे तो श्रमणसंघ क्यों छोड़ा ? जो तीनों ही सम्मेलनों के अध्य एवं संरक्षक रहे क्या वे श्रमण संघ में रहे ? महाराजश्री के सन्मुख तो किसे को ऐसी बात करनेका साहस नहीं पड़ता था मैंने अपने कानों से सुनाकि व्याव में महाराज श्री एक कमरें में अलग बैठे हुये थे उस समय कविजी महाराज वे पास पांच-छ श्रावक बैठे हुये थे वे श्रावक कविजी से बोले कि हम पंजाब केसरी श्री प्रेमचंद जी महाराज से कुछ बात करना चाहते है किन्तु उनसे बात करने का साहस नहीं हो रहा है इस पर कविजी महाराज ने उनसे कहा कि आप लोग उनसे बात करने में घबराएं नहीं क्यों कि साधु सबके हितैषी होते हैं। एक बार शक्ति नगर दिल्ली में कविजी महाराज पधारे हुए थे बातचीत के लिये स्थानक में एकत्रित हुये थे जिनमें आचार्य श्री आनंद ऋषिजी महाराज जैन भूषण पंजाब केसरी श्री प्रेमचंद जी महाराज उपाध्याय श्री कविजी महाराज उनके साथ श्री अमोलकचन्द जी महाराज और मैं भी था श्री सुशील मुनि, श्री ज्ञान मुनि सदर वाले यहां पर परस्पर में वार्त्तालाप चल रहा था महाराज श्री ने सामान्य रूप से प्रश्न किया कि ज्योतिषियों के बीस भेद हैं यदि ज्योतिषियों को न माना जाय तो जीवके ५६३ भेदों में से ५४३ भेद शेष रह जाते हैं इस पर कविजी महाराज तो मौन रहे किन्तु अमोलक चन्द जी महाराज को क्रोध सा आ गया कवि महाराज उन्हें रोकने लगे इस पर महाराज श्री उनसे पूछने लगे कि क्या बात है इसपर श्री सुशील मुनि बोले कि उनको ब्लड प्रेसर चढ़ जाता है इस पर महाराज श्री हंसकर बोले कि इन्हें गोली देनी चाहिये।

कुछ देर के बाद श्री सुशील मुनि बोले कि मेरे लिये विदेशों से निमंत्रण पत्र आये हुये हैं इस पर महाराज श्री हंसकर बोले कि अगर तुम्हें विदेश जाना है तो टिकट का इन्तजाम मैं करवा दूंगा पंजाब में एक कहावत प्रसिद्ध है कि मुण्डा चढा घोड़ी यह भी स्यापा मुका इसपर सब हंस पड़े। दिनांक १२-१२-७५ को नवभारत टाइम्स में पढ़ने को मिला कि आचार्य देशभूषण जी महाराज ने सुशील मुनि को विदेश जाने की आज्ञा देते हुए फरमाया है कि ऐसा करने से

आचार्य सुव्रत ने शान्त भाव से उत्तर दिया हे नमूचि! हम अणगार निर्ग्रंथ हैं हमें आपके चक्रवर्ती बनने पर कोई प्रसन्नता नहीं और सात दिन के बाद आप चक्रवर्ती नहीं रहेंगे इसका भी हमें गम नहीं। हम सम्भावी है। स्व-पर कल्याण करना ही अपना धर्म है। गृहस्थों की तरह दरबार में जाकर बधाई देना अपना कल्प नहीं है। इसलिये क्रोधित होने की आवश्यकता नहीं है।

इतनी सरलता से उत्तर देने पर भी नमूचि का क्रोध शान्त नहीं हुआ अपितु और भी अधिक बढ़ गया और आग बबूला होकर बोला बस-बस मैं कोई भी बात सुनने को तैयार नहीं। तुम्हें मेरे राज्य में रहने की आवश्यकता नहीं है। आज ही राज्य छोड़ कर यहाँ से चले जाओ! इस पर आचार्य सुव्रत ने फिर कहा कि चातुर्मास में कहीं भी विहार करना हमारा कल्प नहीं है। अत: ऐसी आज्ञा हमारे लिये न दें। आचार्य के बारम्बार कहने पर भी नमूचि न माना और वापिस दरबार में चला गया।

इतना महान धर्म संकट आने पर भी आचार्य झुके नहीं अपनी मान मर्यादा पर दृढ़ रहे। तनिक भी घबराये नहीं इस धर्म संकट को दूर करने का उपाय सोच कर लब्धि धारी मुनि विष्णु कुमार द्वारा, क्या नमूचि और क्या महापद्म आदि सभी को झुका दिया यह है सच्ची साधुता।

दूसरी ओर आज के कुछ साधु और आचार्य हैं जो कि नये राष्ट्रपति बनने पर उनको बधाई व अभिनन्दन पत्र देने के लिये अपना कल्प तोड़ कर भी बधाई समारोह में सम्मिलित होते हैं। यह कितनी लज्जा की बात है और श्रमण संस्कृति के लिये बहुत घातक है।

राजकोट चातुर्मास के विषय में इससे पूर्व लिख चुके है। राजकोट के बाद महाराज श्री का चौतुमास जोधपुर में हुआ उन दिनों महाराज श्री व्याख्यान में प्रश्नव्याकरण सूत्र सुना रहे थे प्रश्नव्याकरण में वर्णन आता है कि पांच प्रकार का संवर और पांच प्रकार का आश्रव। महाराज श्री ने फरमाया कि मन्दिर तथा चैत्यालय बनवाना यह आश्रव द्वार में आता है

शास्त्र पुकार कर कह रहा है कि जो लोग धर्म के नाम पर छ काय के जीवों की हिंसा करते हैं वह मन्द बुद्धि है ऐसे लोगों को बहुत काल तक संसार में परिभ्रमण करना पड़ेगा कुछ लोग ऐसा कहते हैं विद्याचरण और जंघा चरण धारी मुनिनंदी-स्वर द्वीपमें चैत्यालय के दर्शन करने जाते हैं कोई भी मुनि जंघा चरण अथवा विद्याचरण लब्धि से कहीं भी जायगा तो उसे लब्धि प्रयोग करने पर अपने दोषों की आलोचना करनी होगी और प्रायश्चित लेना पड़ेगा तब जाकर वह लब्धि का प्रयोग करने वाला मुनि आराधक होता है। अन्यथा वह मुनि विराधक होता है। ऐसी दशा में उसे चैत्यालय के दर्शन करने से किस फल की प्राप्ति हुई ? विराधक होकर संसार भ्रमण करना पड़ेगा एक दिन महाराज श्री व्याख्यान फरमा रहे थे कि एक भाई महाराज श्री के पास आया तथा कुछ भाईयों ने उसकी सिफारिस की, कि यह भाई आपके व्याख्यान के पश्चात अपने विचार व्यक्त करना चाहता है किन्तु महाराज श्री का पहले से यह सिद्धान्त था कि जो भी अनजान व्यक्ति बोलना चाहता है उसे अपने भाषण के पहले ही समय दिया करते थे क्यों कि कदाचित कोई व्यक्ति अपने सिद्धान्त के विरुद्ध बोल जावे तो उसका युक्ति युक्त उत्तर दे दिया करते थे परन्तु उस दिन भाई की सिफारिस से उस पुजेरे मूर्तिपूजक भाई को बोलने का समय दे दिया तो उस भाई मूर्ति पूजा के समर्थन में बोला और महाराज श्री से उसने प्रश्न किया कि क्या आप नौपदी पूजा स्वीकार नहीं करते ? महाराज श्री ने उसी समय उससे प्रश्न किया कि बत्तीस सूत्रों में से कौन से सूत्र में नौपदी पूजा का विधान उल्लिखित है ? उसने उत्तर दिया कि जिन बत्तीस सूत्रोंको आप मानते हैं इनमें नहीं है। इस पर महाराजश्री ने उससे प्रश्न किया कि जब इन हमारे बत्तीस शास्त्रों में उल्लेख नहीं तब इस प्रश्न को पूछने की क्या आवश्यकता थी ? अत: अन्त में वह भाई निरुत्तर होकर चला गया इसके बाद महाराज श्री का चातुर्मास व्यावर नगर में हुआ व्यावर के विषय में पहले ही उल्लेख कर चुके हैं कि वहां पर महाराज श्री का कितना प्रभाव था महाराज श्री ने व्यावर का चातुर्मास उठने पर वहां से विहार किया जिस समय महाराज श्री सड़क पर आए उस समय एक अजैन भाई ने महाराज

श्री से विनती की कि महाराज श्री यहां पर जो मकान बने हुये हैं इनमें मैं मिल खोलना चाहता हूं अतः आप वहां पधार कर उस स्थान पर अपने चरण फेर कर मुझे मंगल पाठ सुनाने की कृपा करें महाराज श्री ने उस भाई को कहा कि मैंने तुम्हारे मकान यहीं से देख लिए हैं तुम मंगल पाठ यहीं पर सुनलो और इसके बाद कसाई खाने से पांच बकरों को छुड़ाकर अभयदान दे दो इसके बाद वह व्यक्ति मंगल पाठ सुनकर और पांच बकरों को अभयदान देने का वायदा करके चला गया महाराज श्री आरम्भ के कार्यों में दखल नहीं देते थे उस समय महाराज श्री के साथ चौथमलजी महाराज के श्रावक श्री देवराज जी सुराणा आदि जा रहे थे तो वह परस्पर में चर्चा कर रहे थे कि यहां पर श्री चौथमलजी महाराज के कई चातुर्मास हुये हैं परन्तु जो प्रभाव पंजाब केसरी श्री प्रेमचन्द जी महाराज का हुआ वह उनका भी नहीं हुआ महाराज श्री की व्याख्यान शैली अतीव विलक्षण है। महाराज श्री एक बार दिल्ली चान्दनी चौक में विराजमान थे वहां पर समायिक करने वाले भाईयों ने जिकर किया कि यहां पर तपस्वी रोशन लालजी महाराज का चातुर्मास था उन दिनों रात को एक संस्कृत का पंडित आया और उसने श्री रोशनलाल जी महाराज से संस्कृत में बातचीत शुरु की किन्तु वह उसके प्रश्नों का उत्तर न दे सके उस पंडित ने महाराज श्री रोशन लालजी के प्रति अयोग्य शब्दों का प्रयोग किया जिससे हमें बहुत नीचा देखना पड़ा वही पंडित एक दिन अचानक रात में महाराज श्री के पास में भी आया और वार्त्तालाप करने लगा उसने संस्कृत के इस वाक्य से वार्त्तालाप प्रारम्भ किया "कर्मणा शूद्रो भवति" उस पंडित के इतना कहने पर महाराज श्री ने श्री उत्तराध्ययन जी शास्त्र के पचीस वें अध्ययन की एक पूरी गाथा संस्कृत में कहदी "कमर्णा ब्राह्मणों भवति, कर्मणा भवति क्षत्रियो" वैश्यः कमर्णा भवति, शूद्रो भवति कमर्णा" महाराज श्री से गाथा के इस संस्कृत रूपान्तर को सुनकर वह पंडित अतीव प्रसन्न एवं प्रभावित हुआ तथा बोला कि मैंने एक पद कहा था आपने चारों पद कह डाले। इसके साथ ही उसने विनय पूर्वक महाराज श्री से प्रार्थना की, कि आप मुझे भी आत्म कल्याण के लिये कुछ शिक्षा देने की कृपा करें उस पंडित की विनय पूर्ण

जिज्ञासा को सुन कर महाराज श्री ने उसे आत्मबोध रूपशिक्षा दी इसके बाद उसने अपने दोषों की आलोचना की और महाराज श्री का विशेष श्रद्धालु भक्त बना और महाराज श्री के दर्शनों को समय समय पर आता रहा।

नाम कर्म की आठ प्रकृति हैं उनमें से एक प्रकृति का नाम पराघात नाम प्रकृति है। पराघात नाम उस प्रकृति को कहते हैं जिस प्रकृति वाला मनुष्य अपने प्रभाव से दूसरे के तेज और प्रभाव को दबा दे अर्थात् पस्त करके उस पर अपना प्रभाव स्थापित करदे तथा उसे अपनी ओर आकर्षित करदे। और आचार्य की आठ संपदाए बतलाई हैं। इनमें प्रथम आचार संपदा, दूसरी सूत्र संपदा, तीसरी शरीर संपदा, चौथी वांचना संपदा, पांचवी वचन संपदा, छठी संग्रह संपदा, सातवीं मति संपदा, आठवीं प्रयोग संपदा, जिसमें यह आठ संपदाएं विद्यमान हों वह साधक आचार्य पद के योग्य होता है यह उपर्युक्त आठ संपदाएं महाराज श्री के जीवन में प्रायः करके घटित होती थीं, शास्त्रों में पुण्योदय से शुभ चाल का वर्णन आया है वह भी महाराज श्री पर पूर्णतया घटित होती थी प्रथम विहार प्रचार दिल्ली से प्रारम्भ हुआ था और दिल्ली में ही समाप्त हुआ।

इस विहार प्रचार का दिल्ली से प्रारम्भ होना और दिल्ली में ही पूर्ण होना स्वभाविक था क्योंकि महाराज श्री का भौतिक शरीर दिल्ली में ही समाप्त हुआ यह विहार प्रचार महाराज श्री के देवलोक होने के ६ या ७ दिन बाद लिखवाना प्रारम्भ कर दिया था अनुमानतः यह विहार प्रचार मूल रूप से सवा महीने में पूर्ण होगया था किन्तु बाद में भी कुछ बातें नोट की गईं। संपादन के लिये लाला श्री रतनचंद जी की सुपुत्री तथा श्री मोती लाल जी स्यालकोट के सुपुत्र श्रीसागरचन्द जी की धर्म पत्नी सत्यावती बाई अपने पति के साथ दर्शनों के लिये करोल बाग स्थानक में आई उस समय यह द्वितीय विहार प्रचार की एक कापी लिखी जा चुकी थी उस बाई ने पूछा कि क्या आप यह महाराज श्री का जीवन चरित्र लिख रहे हैं ? उत्तर में मैंने कहा कि महाराज श्री का विहार प्रचार लिखा जा रहा है। यह सुनकर उस बाई ने अर्ज की कि

इसका संपादन मैं करुंगी मैंने कहा कि आप परिवार वाली हो इसके संपादन करने में काफी समय लग सकता है इस पर बाई ने कहा कि मैं अप्रेल के महिने तक इसके संपादन का कार्य पूर्ण करदूंगी मैंने कहा कि इसे शीघ्र छपवाने का विचार है अतः आप एक कोपी का संपादन शीघ्र करदें जिससे छपना प्रारम्भ हो जाय ऊसने उत्तर दिया कि मैं पहले सारा संपादन करलूं वाद में ही छपवाना उचित रहेगा। इसके वाद उसे संपादन करने के लिये कापी देदी। और उसने संपादन का कार्य प्रारम्भ कर दिया किन्तु उसके आगे कई ऐसी समस्याएं आईं जैसे वाई की वुवा वीमार हो गई तथा पुस्तक का शास्त्र संम्बन्धी सूक्ष्म विषय आया जिसके कारण बाई लिखने में आगे प्रगति न कर सकी, अप्रैल के महीने के समाप्त होने तक बाई ने आधा कापी से कुछ अधिक सम्पादन कर दिया था अनुमानतः ९२ पृष्ट संपादन किए, यह संख्या छपे पृष्टों की है। उसके वाद रावलपिण्डी वाले लाला श्री वाडाशाह के सुपुत्र श्री धनदेव से संपादन के विषय में संपर्क किया गया उन्होने विश्वास दिलाया कि जो सत्यावती देवी ने सम्पादन किया है मैं उसका संशोधन करदूंगा और शेष सभी का सम्पादन भीं करदूंगा अतः इस विहार प्रचार पुस्तक का सम्पादन मास्टर श्री धनदेव रावलपिण्डी वाले कर रहे हैं। मास्टर श्री धनदेव ने लगभग १७५ पृष्ठों का संपादन किया यह संख्या छपे पृष्ठों की है जिसमें उन्हें अनुमानतः ५ या ६ महीने लगे, प्रेस को यथा समय पर संपादित लेख न मिल सकने के कारण संपादन का शेष कार्य व्यावर के भाई जगदीश सौलंकी से कराया गया उसने अनुमानतः १० या १२ दिन में सारा कार्य पूर्ण करदिया।

महाराजश्री की शिष्य संपदा

श्री वनवारी मुनि ।

श्री तुलसी मुनि ।

श्री शान्ति मुनि ।

श्री दया मुनि ।

श्री ओम् मुनि ।

श्री जिनदास मुनि ।

और एक अनु शिष्य है, पार्श्व मुनि, कोई ऐसा कहे कि शान्ति मुनि इस समय आचार्य श्री की नेश्राय में विचर रहा है परन्तु उसका पिछले चातुर्मास में पत्र आया था, लिखा था कि मैं आपका शिष्य हूँ और आपका ही शिष्य रहूँगा और आप श्री से अपने पिछले अपराधों की क्षमा चाहता हूं। मैंने महाराजश्री से पूछा था कि उसने पत्र में शान्ति मुनि लिखा था या शान्ति ऋषि ? महाराजश्री ने फरमाया शान्ति मुनि लिखा है इस कारण से उसका नाम लिखवाया गया है। शान्ति मुनि को महाराजश्री का शिष्य लिखवाया है, इस विषय में कोई ऐसा कह सकता है कि शान्ति मुनि तो इस समय पूज्य श्री आनन्द ऋषि जी महाराज की आज्ञा में विचर रहा है। जहाँ तक आज्ञा का सवाल है उसमें कोई आपत्ति नहीं क्योंकि श्री आनन्द ऋषिजी महाराज वर्तमान में श्रमण संघ के आचार्य हैं सारा श्रमण संघ उनकी आज्ञा में ही विचरता है आपत्ति केवल इतनी ही है कि शान्त मुनि के स्थान पर शान्ति ऋषि लिखना प्रारम्भ कर दिया गया यह शब्द सांप्रदायिकता का द्योतक है। श्री आनन्द ऋषि जी महाराज को पूर्व संप्रदाय के नाम से संबोधित किया जाता है, इस विषय में चर्चा भिनासर सम्मेलन में भी चली थी यह जो सांप्रदायिकता का वाचक शब्द है इसे हटा दिया जाय परन्तु इसको हटाने को सहमत न हुये मेरी स्मृति में ऐसा है। शान्ति मुनि मूल रूप से पंजाब केसरी श्री प्रेमचन्दजी महाराज के ही शिष्य हैं शान्ति मुनि के विषय में पूर्व वृतान्त लिखा जाता है पूज्य

श्री आनन्द ऋषि जी महाराज उन दिनों श्रमण संघ के प्रधान मंत्री थे श्रमण संघ के अन्तर्गत विचरने वाले साधुओं को प्रायश्चितादि देने का अधिकार उन्हीं के पास था, शान्ति मुनि को प्रायश्चित आता था अतः शान्ति मुनि उनके पास गये उन्होंने शान्ति मुनि को प्रायश्चित देकर अपने पास ही रख दिया वि० सं० २०१२ में भिनासर सम्मेलन से पूर्व साधु संघ ब्यावर में एकत्रित हुआ जिनमें वर्तमान आचार्यश्री आनन्द ऋषि जी महाराज दिवाकर शिष्य श्री प्यारचन्द जी महाराज मरुधर केसरी महाराज, पंजाब केसरी श्री प्रेम चन्दजी महाराज आदि अनुमानतः पेंतीस-छत्तीस साधु विराजमान थे उस समय शान्तिमुनि प्रधान मंत्री के साथ ही था श्री प्यार चन्द जी महाराज ने प्रधान मंत्री जी महाराज को कहा कि आपको प्रायश्चित देने का अधिकार है प्रायश्चित देकर अपने पास रखने का नहीं आपने शान्ति मुनि को प्रायश्चित देकर अपने पास रखा हुआ है। आपको इसे पंजाब केसरी को सौंप देना चाहिये इस पर उन्होंने शान्ति मुनि को महाराजश्री को सौंप दिया इसके पश्चात साधु भिनासर सम्मेलन में सामिल होने के लिये ब्यावर से विहार करना चाहते थे उस समय शान्ति मुनि ने महाराजश्री से अर्ज की मैं इस समय चलने में असमर्थ हूँ अतः कुछ समय के लिये मुझे यहीं छोड़ दिया जाए इस पर महाराजश्री ने उसको फरमाया कि मैं इस विषय में विचारूंगा उस समय यहां पर पूज्य श्री अमोलक ऋषि जी महाराज के अनशिष्य, मानुऋषि अध्ययन के लिये ब्यावर में ही थे महाराजश्री ने मानु ऋषि को अपने पास बुलाया और मानु ऋषि को फरमाया कि कुछ समय के लिये शान्ति मुनि यहां रहना चाहता है यदि हमारा ब्यावर में चातुर्मास हुआ तो हमारे यहाँ आने तक इसका पूरा-पूरा ध्यान रखना ! इसे यदि कोई विशेष कार्य करना हो तो इसे आप लोगों की आज्ञा लेनी चाहिये मेरे यहाँ आने तक इसका पूर्ण दायित्व आपके ऊपर है। इसके पश्चात महाराजश्री ने दिवाकर श्री चौथमल जी के श्रावक श्री देवराज सुराणा को महराजश्री ने याद किया उसने उपस्थित होकर महाराजश्री से अर्ज की मुझे क्या आज्ञा है ? महाराजश्री ने उसे फरमाया मैं शान्ति मुनि को यहाँ छोड़ कर जा रहा हूँ मेरे यहां वापिस आने तक शान्तिमुनि की सार संभाल

कमेटी प्रेम सुधा के सभी भागों को ग्राहकों तक पहुंचाती थी वर्तमान में यह क्रम चल रहा है अथवा नहीं इसका मुझे ज्ञान नहीं मुझे इस विषय में भी ज्ञान नहीं कि इस कमेटी ने अब तक कितनी पुस्तकें वितरित कीं और कितनी बेचीं, और प्रेमसुधा पुस्तकों के कितने भाग इनके पास हैं ? और कितने नहीं, और जो समाप्त हो चुकीं उन्हें प्रकाशित करेंगे या नहीं इस कमेटी के दो सदस्य ला० दौलतरामजी श्री रतन लाल किताबों वाला स्वर्गवासी हो गए, मुझे यह भी ज्ञान नहीं कि वर्तमान में इस कमेटी में कितने सदस्य हैं ? और वे सदस्य कौन कौन हैं ?

(शवयात्रा)

महाराज श्री की शव यात्रा के विषय में मुझे विशेष जानकारी नहीं और न मैं इस विषय में जानकारी करने का इच्छुक हूं। ऐसा सुनने में आया कि महाराज श्री की शव यात्रा में हाथी, घोड़े, ऊंट आदि भी थे और लाला श्री पाल के मुख से सुना कि शव यात्रा में लाखों की संख्या में जनता थी और फगवाड़े वाले ला० टेकचंद के मुख से ऐसा सुना कि इससे पूर्व मैंने अपने जीवन में किसी शव यात्रा में इतना जनसमूह नहीं देखा। और ऐसा भी सुनने में आया कि पंजाब से हजारों लोग शव यात्रा में शामिल होने के लिये आना चाहते थे किन्तु उस दिन पंजाब में बसों की हड़ताल के कारण दिल्ली नहीं आ सके, और वे समय पर न पहुँच सके।

महाराजश्री के अन्तिम दर्शन किये और मैंने दर्शन, करके लाभ उठाया और नमस्कार किया इन वाक्यों के महाराजश्री विरोधी थे। महाराजश्री फरमाया करते थे कि जैसे भगवान् की मूर्ति को नमस्कार किया ऐसे ही किसी साधु के शव को नमस्कार कर लिया मूर्ति भी जड़ है और साधु का शव भी जड़ हैं चेतनता दोनों में नहीं है। हाँ इतना अन्तर है कि मूर्ति दूसरे पुद्गलों से बनाई जाती है और वह ऐकन्द्रिय का शव है। और शव उसी का शरीर है जो कुछ समय पूर्व पूजा का अधिकारी था। महाराजश्री ऐसा फरमाया करते थे कि पूजा

तो गुणों की है शरीर की नहीं। जैसे आज पांच महाव्रती साधु है वह सम्मान और नमस्कार का अधिकारी है यदि वह साधु व्रतों को छोड़ देता है और साधु वृत्ति से पतित हो जाता है तव उसको कौन नमस्कार करता है। अर्थात् कोई नहीं करता। जिसने साधुत्व को छोड दिया उसका शरीर भी वही है और आत्मा भी वही है फिर उसे नमस्कार क्यों नहीं किया जाता? उसको नमस्कार इस लिये नहीं किया जाता कि उसमें जो पांच महाव्रत रूप गुण थे वे नहीं रहे अतः वह नमस्कार का पात्र नहीं। किन्तु साधु का जो शव है उसमें तो उसकी आत्मा भी नहीं और न हीं पांच महाव्रत रूपगुण हैं फिर उसे नमस्कार कैसे किया जाय? साधु के शव के विषय में शास्त्रों में दो बातें चली हैं निहारी और अ-निहारी। निहारी का अर्थ होता है कि उसके शव का संस्कार करना जैसे वर्त्तमान चल ही रहा है। और दूसरा अनिहारी उसे कहते है जैसे कोई साधु पर्वत आदि पर जाकर संथारा कर दें सेवा के लिये कुछ साधु उसके साथ चले जाते हैं जब तक जीवित रहता है तब तक उसकी सेवा करते हैं जब उसका स्वर्गवास होजाता है तव उसका भंडोउपकरण लेकर साधु वापिस आजाते हैं फिर साधु के उस मृतक शरीर को चाहे पशु पक्षी खाएं या किसी भी स्थिति में रहे इसका नाम अनिहारी है।

इसके विषय में एक लेख श्री रतनचंद डोसी के सम्यग्दर्शन में तब देखने में आया था हम जब बम्बई में थे उस लेख में ऐसा वर्णन था कि सैलाना का कोई भाई कालकर गया था इसके बाद सैलाना से बाहर के किसी भाई ने सैलाना आकर उस मरे हुए भाई के शव के अन्तिम दर्शनों का लाभ लिया। उन दिनों महाराजश्री के पास सैलाना का कोई भाई दर्शनों के लिये आया उस समय महाराजश्री ने उस भाई से कहा कि सम्यग्दर्शन में ऐसा लेख पढने में आया है। इसके बाद श्री डोसी जी ने महाराज श्री के पास पत्र भेजकर इस विषय पर अपनी ओर से स्पष्टी-करण दिया, इस विषय में मेरी स्मृति में तो भाव इतना ही है न्यूनाधिक भी हो सकता है।

हमने ऐसा भी सुना है कि महाराज श्री की शव यात्रा के समय लाला इन्द्र

सैन ने (इक्कावन हजार) ५१,००० रुपये बोले और ऐसा भी सुना है कि बड़सट निवासी सेठ बलदेव दास के सुपुत्र मेघ कुमार और आनन्द कुमार ने ने (ढाई लाख) २,५०,००० रुपये बोले हैं और ऐसा भी सुनने में आया है। कि दो लाख, पौने दो लाख रुपया इकठा भी हुआ। अनुमानत यह पांच लाख रुपये किस कार्य में प्रयोग में आयेंगे ? कुछ लोगों के मुख से ऐसा सुनने में आया है कि "महाराज श्री की शवयात्रा के समय जिन महानुभावों ने धन-राशि के दान की घोषणा की है वह केवल नाम के लिये की गई हैं देने के लिये नहीं) महाराजश्री के भक्तों के प्रति ऐसी शंका करना उचित प्रतीत नहीं होती। महाराजश्री के भक्तों के प्रति लोगों की ऐसी धारणा सुनने में आई है कि वे महाराज श्री के संकेत मात्र से दश, पंद्रह लाख रुपये तक दान देने को तत्पर रहते थे कहा भी है कि जिसका मन ऊंचा उसका सब कुछ ऊंचा, जिसका मन नीचा, उसका सब कुछ नीचा, महाराजश्री फरमाया करते थे लि—ऊंचां तो ऊंची मजे, नीची मजे अनजान। जो ऊंचा नीची भजे, होवे अणचिन्ती हान। अतः महाराजश्री के भक्तों के प्रति ऐसी शंका नहीं होनी चाहिए। ऐसा सुनने में आया कि जैनभूषण पंजाबकेसरी श्री प्रेम चन्द जी महाराज के नाम से अस्पताल खोलना चाहते हैं. इस समय अस्पताल आदि खोलने में या न खोलने में महाराज श्री की आत्मा को कोई लाभ हानि नही, महाराज श्री ने अपने जीवन में जो संयम आदि का पालन किया दीन दुखी विधवाओं के लिये जो अनुकंपा भाव से उपदेश दिया उसका फल उनकी आत्मा के साथ रह सकता है। महाराज श्री अपने जीवन में अपने करुणामय उपदेशों से महाराज श्री के नाम से जो श्री वैजिटे रियन सोसायटी खुली हुई थी उसमे यह भी एक नियम था कि यथा शक्ति दीन दुखी विधवा अनाथ आदि की सेवा करना जिससे हजारों दीन दुखी विधवाओं की इस कमेटी के माध्यम से सेवा की गई और महाराज श्री के नाम से कई स्थानों पर औषधालय खुले जैसे सयालकोट गुजरां वाले, गुरु के जंडियाले में अब भी महाराज श्री के नाम से होम्यो पैथिक औषधालय चल रहा है और वहां पर प्रतिवर्ष दो सौ ढाई सौ लोगों की आखों के ओपरेशन इ[illegible]

कमेटी की ओर से किये जाते हैं इसी प्रकार आंखों के उपचार का कार्यक्रम इस कमेटी के माध्यम से मलेर कोटले में प्रति वर्ष चलाया जाता है इस लिए इस समय महाराज श्री के नाम से जो अस्पताल आदि खोलने के विचार रखते हैं यह भाईयों की महाराज श्री के प्रति श्रद्धा का प्रतीक है। किसी महापुरुष के नाम से दीन दुखी जीवों को सहायता और शान्ति पहुँचे और उनका दुख। दूर हो ऐसा कार्य करने वाले पुण्य के भागी होते हैं क्यों कि पुण्य और पाप के बन्ध के तीन-तीन कारण होते हैं मन, वचन, काया। यह तीनों शुभ पुण्य रूप हैं और अशुभ पाप रूप हैं। शास्त्रों में पुण्य नौ प्रकार का बताया गया है और दान दस प्रकार का बताया गया है उनका समावेश इन्हीं में हो जाता है।

(मुझे खेद है)

एक बात यहां बड़े खेद के साथ लिखवानी पड़ती है कि श्रावकों को साधुओं के वचनों पर विश्वास नहीं रहा, क्योंकि आजकल साधुओं से भी हस्ताक्षर करवाये जाते हैं ऐसा किसी भी शास्त्र में देखने को नहीं आया कि साधु गृहस्थियों को विश्वास दिलाने के लिये अपने हस्ताक्षर कर दे। साधु के तो वचन ही हस्ताक्षरों से अधिक मूल्य रखते हैं क्यों कि यदि साधु एकबार वचन दे कर पीछे हटता है तो उसका दूसरा महाव्रत खण्डित हो जाता है। फिर उसमें साधु भाव नहीं रहता शास्त्र ऐसा कहता है कि मोह कर्म के उदय होने के कारण ब्रह्मचर्य व्रत से भ्रष्ट होने पर पुनः मोहकर्म के उपशान्त होने पर वह साधु बन सकता है और उसे आचार्य उपाध्याय आदि ६ पदवीयों में से किसी पदवी की प्राप्ति हो सकती है परन्तु इरादातन झूठ बोलने वाले को कोई पदवी नहीं आती।

साधुओं के हस्ताक्षर करने की प्रथा पहले नहीं थी इस प्रथा का प्रारम्भ सादड़ी सम्मेलन से हुआ सादड़ी सम्मेलन में साधुओं से हस्ताक्षर करवाये गये थे कि हम श्रमण संघ के वफादार रहेंगे "मेरा ख्याल ऐसा है कि इस विषय पर साधुओं से हस्ताक्षर करवाये गये थे इससे पूर्व कोई भी क्रिया पात्र साधु अपने हस्ताक्षर करके नहीं देता था उस समय भी कितने साधु सतीयों ने अपने हस्ताक्षर नहीं किये थे। आजकल तो छोटी-छोटी बातों पर साधुओं से हस्ताक्षर

करवाये जाते हैं जो श्रमण संघ को छोड़ गये उन्होंने क्या हस्ताक्षर नहीं किये थे? यदि किये थे तो श्रमणसंघ क्यों छोड़ा ? जो तीनों ही सम्मेलनों के अध्यक्ष एवं संरक्षक रहे क्या वे श्रमण संघ में रहे ? महाराजश्री के सन्मुख तो किसी को ऐसी बात करनेका साहस नहीं पड़ता था मैंने अपने कानों से सुनाकि व्यावर में महाराज श्री एक कमरें में अलग बैठे हुये थे उस समय कविजी महाराज के पास पांच-छ श्रावक बैठे हुये थे वे श्रावक कविजी से बोले कि हम पंजाब केसरी श्री प्रेमचंद जी महाराज से कुछ बात करना चाहते है किन्तु उनसे बात करने का साहस नहीं हो रहा है इस पर कविजी महाराज ने उनसे कहा कि आप लोग उनसे बात करने में घबराएं नहीं क्यों कि साधु सबके हितैषी होते हैं। एक बार शक्ति नगर दिल्ली में कविजी महाराज पधारे हुए थे बातचीत के लिये स्थानक में एकत्रित हुये थे जिनमें आचार्य श्री आनंद ऋषिजी महाराज जैन भूषण पंजाब केसरी श्री प्रेमचंद जी महाराज उपाध्याय श्री कविजी महाराज उनके साथ श्री अमोलकचन्द जी महाराज और मैं भी था श्री सुशील मुनि, श्री ज्ञान मुनि सदर वाले यहां पर परस्पर में वार्त्तालाप चल रहा था महाराज श्री ने सामान्य रूप से प्रश्न किया कि ज्योतिपियों के बीस भेद हैं यदि ज्योतिपियों को न माना जाय तो जीवके ५६३ भेदों में से ५४३ भेद शेष रह जाते हैं इस पर कविजी महाराज तो मौन रहे किन्तु अमोलक चन्द जी महाराज को क्रोध सा आ गया कवि महाराज उन्हें रोकने लगे इस पर महाराज श्री उनसे पूछने लगे कि क्या बात है इसपर श्री सुशील मुनि बोले कि उनको ब्लड प्रेसर चढ़ जाता है इस पर महाराज श्री हंसकर बोले कि इन्हें गोली देनी चाहिये।

जैनागमों की मर्यादाओं का उल्लंघन नहीं होता। स्मरण रहे कि दिगम्बर सिद्धान्तानुसार जबतक साधक वस्त्रें रहित नहीं हो जाता तब तक वे उसे मुनि ही नहीं मानते। वे उसे गृहस्थियों की श्रेणीमें मानते हैं। स्मरण रहे कि मुनित्व के गुरू तो आत्मा में प्रगट होते हैं वस्त्रों से कोई संबन्ध नहीं वस्त्र रहित तो अनन्ता जीव हैं उन्हें कौन बुद्धिमान मुनि मान सकता है? जिसका जीवन गृहस्थियों से भी अधिक आरम्भमय होवे तो क्या वह मुनि है? यदि आचार्य श्री सुशील को अपने समान ही मुनि मानते हैं तो कृपा कर अपने शिष्य श्री विद्यानन्द जी को भी सुशील मुनि के साथ विदेश भेजें क्योंकि दोनों ही प्रचारक हैं और दोनों की जोड़ी बन जाएगी त्याग का नमूना भी प्रकाश में आजाएगा। इसप्रकार आचार्यश्री की मान्यतानुसार प्रभावना हो सकती है। दूसरे दिन शक्ति नगर स्थानक में व्याख्यान हुआ व्याख्यान के बाद सब उठकर जाने लगे तो अमोलक चंदजी महाराज मेरे पास खडे थे बोले कि कल महाराजश्री ने हमें डरा दिया महाराज श्री किसी को भय-भीत नहीं करते थे वास्तव में उनका स्वाभाविक तेज था इस लिये हर एक गृहस्थी या साधु उनके सामने आगे बढ़ कर नहीं बोल सकता था। परन्तु मेरे जैसे गरीब साधु को तो गृहस्थी अपना रौब दिखाना चाहते हैं महाराज श्री के देव लोक होने के पन्द्रह बीस दिन बाद में पंजाब सभा के पांच छ प्रतिनिधि मेरे पास आए मैंने पूछा आप कैसे आए? उन्होने कहा कि हम पंजाब प्रान्त के लिये नये प्रवर्तक को निश्चित करने के लिये साधुओं के पास घूम रहे हैं और हमारे घूमने का अभिप्राय यह है कि जिस साधु के विषय में सर्व सम्मति हो जाय प्रवर्तक के लिये उसके नाम की घोषणा आचार्य श्री करदें इस विषय में चार पांच सिघाड़ों के प्रमुखों ने तो हस्ताक्षर कर दिये इस लिये अब आपके पास आए हैं। आप भी हस्ताक्षर करदें हम सबके हस्ताक्षरों को आचार्य श्री के पास भेज देंगे और वह प्रवर्त्तक की घोषणा कर देंगे इस पर मैंने उनसे पूछा कि आचार्य श्री दो बार पहले भी घोषणा कर चुके हैं तब उनकी घोषणा का क्या फल निकला? अब कौन सी नई बात है? कि उनकी घोषणा का पालन किया जायगा? इस पर उन्होंने उत्तर दिया कि हमारी यह पंजाब सभा पहले कमजोर थी इस लिये हम पालन नहीं करवा सके किन्तु अब हम दृढ़ता से उनकी घोषणा का पालन करवाएंगे इस पर मैंने कहा कि इस विषय में महाराज श्री ने मुझसे कुछ नहीं फरमाया और न कभी इस विषय पर कभी प्रसंग चला और न मैंने कभी इस विषय पर विचारा है इस समय तो मैं एक अनाथ के समान हूं इस समय मेरे को मार्ग दर्शन देने वाला मेरे पास कोई नहीं है। हां मैं इतना कह सकता हूं कि जो सर्व सम्मति से प्रवर्त्तक चुना जायेगा मैं उसी की आज्ञा मंगालूंगा। मैंने उनसे कहा कि मेरे वचन और हस्ताक्षरों में कोई अन्तर नहीं है अतः मैं हस्ताक्षर नहीं कर सकता उन्होंने कहा कि हमने हस्ताक्षर करवा कर आचार्य

श्री के पास भेजने हैं इसलिये हस्ताक्षर करवाने आवश्यक हैं मैंने उनसे कहा कि आपलोग आचार्य श्री से अर्ज करदें वे यदि इस विषय पर मुझ से पूछना चाहगें तो मैं उनका उत्तर दूंगा किन्तु उन्होंने अपना हस्ताक्षर करवाने का आग्रह नहीं छोड़ा वे कहते थे कि हम हस्ताक्षरों के बिना आचार्य श्री को विश्वास कैसे दिलायेंगे ? इस पर मैंने स्पष्ट उत्तर दिया कि मैं हस्ताक्षर नहीं करुंगा। मैंने उनसे कहा कि यहां पर तुम पत्र लिखलो कि महाराज ऐसा कहते हैं कि जो भी सर्व सम्मति से प्रवर्त्तक चुना जायेगा मैं उसकी आज्ञा मंगा लूंगा। इस पर उन्होंने पत्र लिख दिया और पत्र लिख कर फिर मेरे सामने कर दिया कि आप हस्ताक्षर करदें इसपर मैंने उनसे कहा कि आप बार-बार ऐसा आग्रह क्यों कर रहे हैं इसपर उनमें से कुछ सदस्य ऊंचे स्वरों में बोलने लगे इसपर मैंने उनसे कहा कि अब अधिक बोलने की आवश्यकता नहीं इसके बाद वह एक दूसरे से हस्ताक्षर करवाने लगे कि महाराज जी ने ऐसा कहा इसपर मैंने उनको कहा कि आप लोग आपस में हस्ताक्षर क्यों करवा रहे हैं कि महाराज ने सब सदस्यों के सामने वचन दिया है इसपर मैंने उनके पत्र उन्हें लौटा दिये और उनसे पूछा कि क्या आप लोगों ने मेरे ऊपर मुकदमा चलाना है ? जो आप आपस में हस्ताक्षर कर रहे हो ? इसके बाद वे उठकर जाने लगे मैंने उनसे कहा कि भाइयों इस बातचीत के दौरान यदि मेरी कोई बात आप लोगों को कटु लगी हो तो मैं आप सब लोगों से क्षमा चाहता हूँ महाराज श्री के स्वर्गवास के बाद यह प्रथम अवसर है कि मैंने अपने साथ भाइयों का ऐसा व्यवहार देखा क्योंकि कमजोर समझकर मेरे पर रौब जमाना चाहते थे यही लोग महाराज श्री से बात करने से भी डरते थे।

साधुओं के प्रति गृहस्थियों का अविश्वास ही समाज के लिये घातक है और साधु का अपने वचन से पीछे हटना यह उससे भी अधिक घातक है। क्योंकि ताले चोरों के लिये नहीं होते ताले तो साधारण के लिये होते हैं क्योंकि चोर तो ताले तोड़ने का इन्तजाम अपने पास काफी रखते हैं जो साधु अपने वचनों से पीछे हटते हैं वे हस्ताक्षर करके भी उनसे मुकर सकते हैं उनके पास मुकरने की प्रयाप्त युक्तियां होती है किन्तु साधु का तो वचन ही काफी है अ-साधु को चाहे कागज पर लिटादो फिर भी उसका कुछ परिणाम नहीं निकलता यहां इस प्रसंग को लिखने की आवश्यकता नहीं थी किन्तु शिक्षा के रूप में लिखा गया है कि श्रावक वर्ग को हस्ताक्षर करवाने की क्यों आवश्यकता पड़ी ?

शोक प्रस्ताव

स्थानक वासी समाज की महान क्षति पंजाव केसरी जैन धर्म भूपण श्री प्रेमचन्द जी महाराज का स्वर्ग गमन।

नई दिल्ली ८ जनवरी १९७४ सायं ५-१५ पर पंजाव केसरी पंडितरत्न जैन धर्म भूपण श्री १००८ श्री प्रेमचन्द जी महाराज का उनकी ७४ वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। आप पिछले कई वर्षों से अस्वस्थ थे तथा करौल वाग स्थानक में रोग शैय्या पर पड़े थे। महाराजश्री का जन्म नाहन राज्य की श्री पोंटा साहव तहसील के अन्तर्गत तारवाल ग्राम में हुआ था किन्तु आपका पालन पोषण नालागढ़ राज्य के अन्तर्गत दगोटा नामक ग्राम में आज से ७४ वर्ष पूर्व सन् १९०० में सैनी राजपूत श्री चौधरी गेन्दामल जी के घर हुआ था। आपकी माता श्रीमती साहव देवी वड़ी धर्म परायण एवं आदर्श महिला थी तथा आपका वचपन का नाम वाबूराम था।

सतलुज नदी से तट पर रोपड़ नगरी में संयोगवश आपका जाना हुआ। उस समय वहां पर महातपस्वी मुनिराज गोविन्दराम जी महाराज वृद्धावस्था के कारण स्थानापति के रूप में विराजमान थे और उस वर्ष संयोग प्रस्म सहयोग वना। श्री वृद्धिचंदजी, महाराजश्री कुंवर सेन जी महाराजश्री मामचन्द जी महाराज ठाणा ३ का रोपड़ में चातुर्मास हुआ। वहीं पर आपके मन में वैराग्य की प्रवल भावना जागृत हुई और परिणामस्वरूप पन्द्रह वर्ष की अल्पायु में आप ने मुनिराज श्री वृद्धि चंदजी म० के निश्राय में दीक्षा ग्रहण करली। अपनी दीक्षा के पच्चीस वर्ष वाद आपने वड़े भाई तुलसी रामजी को भी दीक्षा दे दी। इस प्रकार उन्होंने अपने परिवार वालों को भी आत्म मार्ग पर चलने को उन्मुख करते हुए क्रियात्मक उदाहरण प्रस्तुत किया। श्री प्रेम चन्द जी महाराज ने अंग्रेजी की इस उक्ति को Charity Begins at Home पूर्ण रूप से चरितार्थ कर दिखाया। महाराजश्री वज्र से कठोर और

कुसुम से भी कोमल थे। उनके महान जीवन की व्याख्या इससे अधिक नहीं हो सकती। महाराजश्री ने अपने जीवन काल में जो भी काम अपने हाथ में उठा लिया उसे करके छोड़ा। महाराजश्री ने समाज और धर्म की रक्षा के लिये जो गुजरात और पंजाब में कार्य किये हैं वह किसी से छिपे हुये नहीं हैं। महाराजश्री जी के करीब पन्द्रह चातुर्मास उनके गुरुदेव श्री वृद्धिचंदजी महाराज के साथ में हुये। चातुर्मास हो या विहार महाराजश्री सतत साधना में तत्पर रहे। महाराजश्री ने अपनी अस्वस्थता में भी जो काम कर दिखाया वह एक मिशाल है। भगवान् महावीर की पच्चीसवीं निर्वाण शताब्दी समारोह तक अखिल भारतीय स्वेताम्बर स्थानक वासी जैन कान्फेरेन्स के प्रधान मन्त्री श्री आनन्दराज जी सुराणा द्वारा २५०० गायों को अभय दान देने के संकल्प की पूर्ती हेतु आपने इस रोगावस्था में भी प्रेरणा देकर करीब २५० गायों को अभयदान दिलाया।

आपकी वाणी में बहुत ओज था। आपकी सिंह जैसी गर्जना से व्याख्यान हाल गूंजा रहता था। समाज के उत्थान एवं संगठन के प्रति आपने अनेक प्रयत्न किए जिसे स्थानक वासी समाज कभी भूल नहीं सकती श्रमण संघ के आप प्राण रहे। श्रमण संघ के अन्दर रह कर आपने समाज की जो सेवा की यह स्तुत्य है। जैन जगत के गगन से एक चमकता हुआ नक्षत्र अस्त हो गया। उनके स्वर्गारोहण के समाचार सुन कर समाज एक गहरे शोक में डूब गया और जैसे ही रेडियो से प्रसारण हुआ अनेक छोटे बड़े शहरों से जन समुदाय उनके दर्शनों के लिये उमड़ पड़ा। अपने गुरु के प्रति अन्तिम श्रद्धांजलि अर्पित करने आंखों में आंसू लिये हजारों नर-नारी करौलबाग जैन स्थानक (प्रेम भवन) पर एकत्रित होकर अन्तिम दर्शनों का लाभ लेकर अपने आपको धन्य मान रहे थे।

जैन समाज के अलावा अन्य समाजों में भी आपके प्रति बहुत श्रद्धा व गुरु भावना थी। ऐसे महान संत के निर्वाण पर चारों तरफ शोक की लहर छा गई।

ज्योतिमर्य पुरुष का महा प्रस्थान श्रद्धेय प्रवर्त्तक पंजाब केसरी श्री प्रेम चंद जी महाराज का देवलोक गमन।

यद्यपि मंगल वार को मंगल दिन माना जाता है परन्तु यूरोपीय लोग आठ के अंक को बुरा मानते हैं। मंगल के दिन ८ जनवरी १९७४ को ऐसा दुर्योग आया जिसने मंगलमूर्ति प्रवर्त्तक श्री प्रेमचन्द जी महाराज को हमसे छीन लिया।

पंजाब केसरी श्री प्रेमचन्द जी महाराज विगत चार वर्षों से दिल्ली के करौल बाग क्षेत्र में अजमल खां पार्क के निकट प्रेम भवन में अपनी शिष्य मण्डली सहित विराजमानथे। वे निरन्तर रोग भोग के द्वारा कर्म निर्जरा करते हुए तपोलीन थे।

उनके देवलोक गमन का समाचार पाते ही जनता उनके अन्तिम दर्शनों के लिए उमड़ पड़ी। बुद्ध वार को भी दर्शनार्थियों का तांता लगा रहा।

१० तारीख गुरु वार को ११-३० पर उनका शव विमान सजाया गया ठीक उस समय जबकि उनकी आत्मा देव विमानों में बैठकर देवलोक की यात्रा कर रही थी।

इस शव यात्रा में शोभा के लिए हाथी घोड़े और ऊंटों को भी सजाया गया। बैन्ड बाजों की तो कोई गणना ही नहीं थी। दिल्ली, लुधियाना जालंधर मेरठ और एस एस जैन सभा पंजाब की ओर से अलग-अलग बैन्ड बाजे मंगवाये गये थे। जो जीवन भर दुशालों से दूर रहे उनके भौतिक शरीर को पचासों दुशालों से ढक दिया गया।

शव यात्रा का जलूस माडल बस्ती, सीदी पुरा बाड़ा हिन्दुराव, बाराटूटी, सदर बाजार, खारी बावली, चान्दनी चौक होता हुआ निगम बोध घाट की ओर बढ़ रहा था। भजन मंडलियों के पावन संकीर्तनों एवं श्री प्रेम चन्द जी महाराज़ के जय घोषों से सारे मार्ग गूंज उठे थे।

लगभग ५-३० पर उनके भौतिक शरीर को अत्यन्त सम्मान के साथ

अग्नि के समर्पित कर दिया गया। उनका भौतिक शरीर हमारी आंखों से ओझल हो गया है परन्तु उनका यश युग-युग तक अमर रहेगा।

देव लोक वासित देव ! मेरी शत-शत श्रद्धांजलियां स्वीकार कीजिये।

तिलकधर शास्त्री

सम्पादक आत्मरश्मि

पंजाब केसरी जैन भूषण बाल ब्रह्मचारी व्याख्यान वाचस्पति जैनधर्म-दिवाकर पूज्य श्री स्वामी प्रेम चन्द जी महाराज के स्वर्गवास हो जाने पर हृदय को जो दुःख हुआ है उसे शब्दों द्वारा प्रकट नहीं किया जा सकता।

सर्वगुण संपन्न श्री प्रेम चन्द जी महाराज स्थानकवासी श्रमणसंघ में ही नहीं अपितु समस्त जैन तथा अजैन समाज में सम्मानित महा पुरुष थे। उनके प्रभाव शील एवं निर्भीक होकर दिये गये प्रवचनों के कारण वे व्याख्यान वाचस्पति एवं पंजाब केसरी कहलाते थे। आप शास्त्रों के ज्ञाता नाम और यश की अभिलाषाओं से दूर प्रकाण्ड विद्वान तितिक्षा की साकार मूर्ति थे। महाराजश्री जी का जीवन सदा ही दूसरों के लिये रहा।

आपने तपस्या से अपने जीवन को तपाया और आजीवन संयम में पूरी तरह दृढ़ रहे। आपने पंजाब प्रान्त में स्थान स्थान पर घूम कर शाकाहारी सोसायटियाँ स्थापित की और लाखों मनुष्यों को मांसाहारी से शाकाहारी बनाया। माँस और शराब की त्याग कराया।

वह अकेले ही चले थे जानिबे मंजिल। लोग साथ आते गये और कारवाँ पर बनता गया। महाराजश्री हमें निराधार निराश्रय मंझ धार में छोड़ चले गये।

महाराजश्रीजी स्थानक वासी श्रमण संघ के पंजाब प्रान्त प्रवर्तक पद को सुशोभित कर रहे थे। उनके जाने से जो क्षति श्रमण संघ और जैन समाज की हुई है वह पूरी नहीं हो सकेगी।

यही जीने का मकसद था यही थी आरजु उनकी। जिगर निकले तो मुल्कों

अग्नि के समर्पित कर दिया गया । उनका भौतिक शरीर हमारी आंखों से ओझल हो गया है परन्तु उनका यश युग-युग तक अमर रहेगा ।

देव लोक वासित देव ! मेरी शत-शत श्रद्धांजलियां स्वीकार कीजिये ।

तिलकधर शास्त्री
सम्पादक आत्मरश्मि

पंजाब केसरी जैन भूषण बाल ब्रह्मचारी व्याख्यान वाचस्पति जैनधर्म-दिवाकर पूज्य श्री स्वामी प्रेम चन्द जी महाराज के स्वर्गवास हो जाने पर हृदय को जो दुःख हुआ है उसे शब्दों द्वारा प्रकट नहीं किया जा सकता ।

सर्वगुण संपन्न श्री प्रेम चन्द जी महाराज स्थानकवासी श्रमणसंघ में ही नहीं अपितु समस्त जैन तथा अजैन समाज में सम्मानित महा पुरुष थे । उनके प्रभाव शील एवं निर्भीक होकर दिये गये प्रवचनों के कारण वे व्याख्यान वाचस्पति एवं पंजाब केसरी कहलाते थे । आप शास्त्रों के ज्ञाता नाम और यश की अभिलाषाओं से दूर प्रकाण्ड विद्वान तितिक्षा की साकार मूर्ति थे । महाराजश्री जी का जीवन सदा ही दूसरों के लिये रहा ।

आपने तपस्या से अपने जीवन को तपाया और आजीवन संयम में पूरी तरह दृढ़ रहे । आपने पंजाब प्रान्त में स्थान स्थान पर घूम कर शाकाहारी सोसायटियाँ स्थापित की और लाखों मनुष्यों को मांसाहारी से शाकाहारी बनाया । माँस और शराब की त्याग कराया ।

वह अकेले ही चले थे जानिबे मंजिल । लोग साथ आते गये और कारवाँ पर बनता गया। महाराजश्री हमें निराधार निराश्रय मंझ धार में छोड़ चले गये ।

महाराजश्रीजी स्थानक वासी श्रमण संघ के पंजाब प्रान्त प्रवर्त्तक पद को सुशोभित कर रहे थे । उनके जाने से जो क्षति श्रमण संघ और जैन समाज की हुई है वह पूरी नहीं हो सकेगी ।

यही जीने का मकसद था यही थी आरजु उनकी । किगर निकले तो मुल्कों

है नहीं है नहीं सचमुच अज है नहीं लक्खा दिलांदा अज ओह प्रेम है नहीं।

केडा गज्जेगा आके मैदान अन्दर प्रसिद्ध वक्ता जादू बयान अज ओह प्रेम है नहीं।

प्रेम वाजों चमन वीरान हो या जैन समाज की शान अज ओह प्रेम है नहीं।

सुसी सरल स्वभाव तपस्वी ब्रह्मचारी प्राणी मात्र लेई हीरा कोह नीर सी तूं।

प्रेम करनाई जापदासी तेरा सेवा सदा प्रेम बीच रह दां चूर सी तूं।

बतीस शास्त्र जबानी सी याद तैनूं ते शास्त्रीय ज्ञान दे बीच मख मूर सी तूं।

तेरे तप आगे मस्तक झुक जांदा आलम वा अमल वाश हू सी तूं।

सदाचारी पर उपकारी ते समाज हितैषी राग द्वेष प्रपंच तो दूर सी तूं।

आया कदे न कोल क्रोध तेरे कीता कदे पीन गरूर सीतूं।

पूज्य माया राम जी दे बाग फुल सुन्दर सदा जगते कर्म कमांवदे रहे।

दीन दुखी गरीबां दे आज-जांदे दर्दी बन के दर्द वंडावदे रहे।

सत धर्म अहिंसा तेप्यार वाली महक प्रेम दे नाल खिडावदे रहे।

जी ओ आप त दूजे नूं जीने दओ कल्ले-कल्ले नूं पाठ पढावदे रहे।

गुरु वृद्धि चन्द जी दी कृपा जैसी बबर शेर वागरांएं ललकार दे रहे।

धन-धन साहवां देवी माता दे लाल सोहणे देश कौम दोनों चमकांवदे रहे।

पचतर साल देश दी कर सेवा जैन कोमदानाद बजा गया ए।

जगत भुषण जगत दे विच आके सुत्ती कौम नूं ए जगा गया ए।

करौल बाग दिल्ली दे विच रह के ओहनूं तीर्थ स्थान बना गया ए।

सहन शीलता दी सुन्दर मूरती ए तीर विछोड़े दा सानू लागया ए।

पांति से ऊंचा उठकर मानव समाज की महान सेवा आध्यात्मिक—धर्म परायण के मार्ग पर चलने का मार्ग दर्शन—देकर मानव का कल्याण कर रहे हैं।

भगवान् महावीर का चिन्ह सिंह है और क्षत्रिय सिंह होता है वास्तव में पूज्य महाराज साहब तो सिंह ही थे जब दहाड़ते थे तो धरती पर शान्त वातावरण हो जाता था।

महात्मा की पहचान के लिये एक महापुरुष कहते हैं—

होते, होते हैं साधु ऐसे जैन मुनि जग मांय।
पंखा करे न, करे न सवारी, चलते जीव बचाय,
मधुकरसी है चरिया जिन की सब जीवां सुखदाय॥

वास्तव में जैनधर्म जाति पांति को कतई नहीं मानता जैनधर्म के अनुयायी हिन्दू जाति की अनेक जातियां ही वास्तव में जैन धर्मावलम्बियों की जाति मानव जाति है और मानव का धर्म जिन धर्म या मानव धर्म है।

भारत का प्रयेत्क सैनी राजपूत आपको नत मस्तक होकर प्रणाम करता है और वीर प्रभु से विनय करता है कि स्वर्गीय महान आत्मा को शाश्वत शान्ति दे यही भावना है।

जगदीश सिंह सोलंकी
"पत्रकार"

श्री प्रेम चन्दजी महाराज के चरणों में श्रद्धांजलि

दिल रोंदाए ते काल जा कंपदा ए जिवे देख दाहां अज ओह प्रेम है नहीं।
मुजस्मा प्रेम दा प्रेम दी ओह मूरत पुजारी प्रेम दा अज ओह प्रेम है नहीं।
प्रेम वेजिटेरियन सोसायटी दा जन्म दाता सुबह शाम वाला अज ओह प्रेम है नहीं।

है नहीं है नहीं सचमुच अज है नहीं लक्खा दिलांदा अज ओह प्रेम है नहीं।

केडा गज्जेगा आके मैदान अन्दर प्रसिद्ध वक्ता जादू बयान अज ओह प्रेम है नहीं।

प्रेम वाजों चमन वीरान हो या जैन समाज की शान अज ओह प्रेम है नहीं।

तुसी सरल स्वभाव तपस्वी ब्रह्मचारी प्राणी मात्र लेई हीरा कोह नौर सी तूं।

प्रेम करनाई जापदासी तेरा सेवा सदा प्रेम वीच रह दा चूर सी तूं।
बत्तीस शास्त्र जवानी सी याद तैनूं ते शास्त्रीय ज्ञान दे वीच मश नूर सी तूं।

तेरे तप आगे मस्तक झुक जांदा आलम वा अमल वाश हू सी तूं।
सदाचारी पर उपकारी ते समाज हितैषी राग द्वेष प्रपंच तों दूर सी तूं।

आया कदे न कोल क्रोध तेरे कीता कदे पीन गरूर सीतूं।
पूज्य माया राम जी दे बाग फुल सुन्दर सदा जगते कर्म कमांवदे रहे।
दीन दुखी गरीबां दे आज-जांदे दर्दी बन के दर्द वंडावदे रहे।
सत धर्म अहिंसा तेप्यार वाली महक प्रेम दे नाल खिडावदे रहे।
जी ओ आप त दूजे नूं जीने दओ कल्ले-कल्ले नूं पाठ पढावदे रहे।
गुरु वृद्धि चन्द जी दी कृपा जैसी बबर शेर बागरांएं ललकार दे रहे।
धन-धन साहवां देवी माता दे लाल सोहणे देश कौम दोनों चमकांवदे रहे।

पचतर साल देश दी कर सेवा जैन कौमदानाद वजा गया ए।
जगत भुषण जगत दे विच आके सुत्ती कौम नूं ए जगा गया ए।
करोल बाग दिल्ली दे विच रह के ओहनूं तीर्थ स्थान बना गया ए।
सहन शीलता दी सुन्दर मूरती ए तीर विछोड़े दा सानू लागया ए।

ओह भगवान हस्ति हुन अमर हो गई विच ज्योति दे ज्योतिसमाग या ए।

विलायती राम जोड़ के हत्थ कहदां ए रहती दुनिया तक नाम चमका गया ए।

विलायती राम जैन

रतलाम की ओर से शोक सभा

मालव रत्न गुरु देव श्री कस्तूर चंद महाराज, सा० के सानिध्य में १०-१-७४ को प्रात नीम चौक जैन स्थानक में श्रद्धांजलि जिसमें श्री हस्ती मल जी मुनि, मधुर वक्ता श्री मूल चन्द जी महाराज सती प्रभावती जी, कपूर चंद सुराणा, मानक लाल जी वकील, सागर मल जी चतर डा० प्रेम सिंह जी श्री दलीप चन्द जी आदि ने शोकोदगार व्यक्त किए। सन् १९५२ में आपका चौमासा यहां हुआ था। निधनस्थ मुनिवर के सम्मान में चार लोगस्स का पाठ मौन ध्यान किया देदीप्य मान नक्षत्र सम निर्भीक वक्ता ओजस्वी तेजस्वी संत पंजाब केसरी एक अनूठी प्रभा और संगठन चेतना के प्रतीक थे। मुनि समाज के एक अधिकारी विशिष्ठ मुनि भी थे। ५०१ रु० तत्कालिक चन्दा करके गरीबों को भोजन कराया कोटा-बरनाला चन्डीगढ़ में भी शोक सभाएं हुई। गुलाब पुरा (राजस्थान) से शोक सभाएं की गई।

जालन्धर से स्वर्गीय जैन मुनि का जीवन तप त्याग और सुदृढ़ अनुशासन का जीवन था लगभग ६० वर्ष तक आपने भारत के एक कोने से दूसरे कोने तक भगवान महावीर के सत्य अहिंसा शान्ति और अपरिग्रह के अमर सिद्धान्तों को जन-जन तक पहुंचाया आपकी सिंह गर्जना को सुनकर लाखों व्यक्तियों ने मांस शराब तथा अन्य कुरीतियों और कुविचारों का त्याग किया। आप एक महान कर्मठ त्यागी संत और अहिंसा सत्य जप तप वैराग्य तथा प्रेम भाव आदि गुणों के भंडार थे। आपसी प्रेम प्रचार फलस्वरूप सम्प्रदाय वाद से दूर बिना मत भेद हर जाति के नर नारी आपके श्रद्धालु थे

आपके आध्यात्मिक वाद की अमृत रस उपदेशों द्वारा पान करके लोग इतने प्रभावित हुये थे कि आप सबके हृदय सम्राट बन गये थे। परम श्रद्धेय जैन भूषण स्वामी श्री प्रेम चन्द जी महाराज का जन्म हिमाचल प्रदेश में नाहन के समीप कस्वा ताख्वाल में सन् १९०० में हुआ था आप सैनी राजपूत थे बचपन का नाम बाबूराम था। ताख्वाल गांव में आपके पिता चौधरी गैंदा मल एक प्रमुख व्यक्ति थे और माता साहिब देवी धार्मिक विचारों से ओत-प्रोत महिला थीं १५ वर्ष की अल्प आयु में ही आपका मन संसार से उचाट हो गया तथा आपश्री वृद्धिचन्दजी महाराज से दीक्षा स्वीकार करके जैन मुनि के कठिन पथ पर चलने लगे। आपने जीवन भर आत्म कल्याण के साथ-साथ लाखों प्राणियों को सत्य पथ पर लगाकर उनके जीवन को सार्थक किया।

रतलाम

दिनांक १० जनवरी १९७४ को एक बहिन से पता चला कि दिल्ली में विराजित पंजाब केसरी श्री प्रेम चन्दजी महाराज देवलोक की ओर प्रस्थान कर गये हैं। यह समाचार पाते ही यहाँ विराजित मुनि जगदीश चन्द्र जी महाराज श्री दर्शन मुनि जी महाराजश्री देवेन्द्र मुनि जी महाराज आदि ठाणे चार को हार्दिक खेद हुआ उनके वियोग से हमें ही नहीं समस्त सन्त संघ तथा जैन समाज की बहुत क्षति हुई है उनके तप त्याग तथा प्रवचनों से जैन समाज भली भांति परिचित है उनकी व्याख्यान शैली इतनी अच्छी थी कि श्रोतागण दुनियां के झंझटों को छोड़ कर अपने आप में मग्न हो जाते थे इसका जिन्दा सबूत यह है। एक समय लाहौर में एक जलसे में उन्हें बोलने का शुभ अवसर मिला अपार जन समूह था बोलने से पहले स्पीकर आगे रखा गया पर आपने कहा मुझे इसकी आवश्यकता नहीं लाउड स्पीकर के बिना पन्द्रह मिनट तक इस तरह बोले कि सभी मन्त्र मुग्ध हो गये। आपने पंजाब हरियाणा हिमाचल प्रदेश महाराष्ट्र तथा राजस्थान की भूमियों का पर्यटन करके जैन धर्म का खूब प्रचार किया और दिल्ली की भूमि को तो अपने प्रवचनों द्वारा इतना आकर्षित किया कि उसने इन्हें अन्य कहीं जाने न दिया श्रद्धेय श्री प्रेम-चन्द जी महाराज आज हम से दूर चले गये हैं। पर उनकी प्रवचन ध्वनि चिर

स्मरणीय रहेगी भव्य आत्माओं प्रभु के साथ जोडने के लिये आप गाया करते थे। सुबह शाम जिसको तेरा ध्यान होगा, बड़ा भाग्यशाली वह इन्सान होगा। उसी को तो हरदम लगन तेरी होगी, कि जिसका भी पुण्य उदयमान होगा।

अभी समाज को उनकी बहुत आवश्यकता थी पर कर्म विधान के समक्ष सब नत मस्तक हैं अस्तु वे जहां भी हैं उनकी आत्मा को सुख शान्ति मिले इसी शुभ भावना के साथ।

मुनि कमल किशोर
२० जनवरी १९७४

श्रद्धेय प्रवर्त्तक पंजाब केसरी श्री प्रेमचन्दजी महाराज के स्वर्गारोहण पर श्रद्धांजलियां लुधियाना में—

दिनांक ९ जनवरी १९७४ को प्रातः काल ९-३० बजे जैन स्थानक में पंजाब केसरी श्रद्धेय श्री प्रेमचन्द जी महाराज के देवलोक वास के उपलक्ष में विद्वान् रत्न श्री पं० हेमचन्द्र महाराज के सानिध्य में एक शोक सभा हुई। सर्व प्रथम व्याख्यान वाचस्पति श्री क्रान्ती मुनि जी महाराज ने श्री प्रेम चन्दजी महाराज के उज्जवल तेजोमय जीवन पर प्रकाश डालते हुये कहा कि उन्होंने छोटी सी आयु में ही साधुत्व पथ अपनाया और थोड़े ही समय में वे अपनी विद्वत्ता आध्यात्मिक दृढ़ता संयम की श्रेष्ठता धर्म प्रभावना और प्रचार के क्षेत्र में प्रसिद्ध हो गये। उनकी सिंह गर्जना को सुनकर बड़े-बड़े तार्किकों के होश उड़ जाते थे। भगवान् महावीर का चिन्ह शेर है। श्री प्रेमचन्द जी महाराज को भी जनता पंजाब का शेर कहती थी परन्तु वे ऐसे शरीरी थे जो अहिंसा का प्रचार करने वाले थे। उनके रिक्त स्थान की पूर्ति असम्भव नहीं तो अशक्य अवश्य है। वे महान थे। मैं उनके महान व्यक्तित्त्व के चरणों में अपनी श्रद्धांजलि समर्पित करता हूं।

श्रद्धेय श्री फूलचन्द जी श्रमण महाराज ने कहा श्री प्रेमचन्दजी महाराज जैन संस्कृति के विशाल उद्यान में महकने वाले पुष्प थे। पुष्प सुगन्धि का

भंडार होता है। श्री प्रेम चन्द जी महाराज भी संयम सौरभ के अक्षय भंडार थे। पुष्प को जिधर ले जाया जाय वह उधर के वातावरण को भी सुगन्धित कर देता है श्री प्रेम चन्द जी महाराज भी जिधर जाते थे वे उधर ही संयम-सत्य-प्रेम की सुगन्ध फैला देते थे। उनके उपदेश प्रेम सुधा के रूप में प्रकाशित हैं। यह बहुत बड़ा सत्य है। कि उनकी वाणी श्रद्धालुओं के लिये प्रेमामृत ही बरसाया करती थी, अब वे चले गये हैं जनता प्रेमामृत से वंचित हो गई है। अब इस दिव्यात्मा के लिये हम श्रद्धांजलियाँ ही अर्पित कर सकते हैं और क्या करें। श्री पं० हेमचन्द्र जी महाराज ने भी उनकी संयम—साधना—प्रबल प्रचार भावना और स्पष्ट वादिता पर प्रकाश डाला।

एस० एस० जैन सभा पंजाब और एस० एस० जैन बिरादरी लुधियाना के प्रधान श्री टी० आर० जैन ने कहा पंजाब में दो ही शेर हुये हैं राजनैतिक क्षेत्र में लाजपत राय जी एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में श्रद्धेय प्रवर्त्तक श्री प्रेमचन्द जी महाराज। श्री प्रेम चन्द जी महाराज वाणी से भी शेर थे। शरीर से भी शेर थे और संयम साधना के भी शेर थे। पंजाब केसरी श्री प्रेम चन्दजी महाराज के देव लोक गमन से जैन जगत की महान् क्षति हुई है। मैं एस० एस० जैन सभा पंजाब और एस० एस० जैन बिरादरी लुधियाना के समस्त सदस्यों की ओर से उस दिव्यात्मा के चरणों में अपनी श्रद्धांजलि समर्पित करता हूँ।

हंसराज जैन
मंत्री एस० एस० जैन बिरादरी
लुधियाना

पूज्य पंजाब केसरी जी महाराज का स्वर्गवास

दिनांक ९-१-७४ को दिल्ली से तार मिला कि जैन भूषण पंजाब केसरी प्रेम चन्द जी महाराज साहब स्वर्गवास हो गये। इसके पूर्व ८-१-७४ की रात्रि को ही कुछ बन्धुओं ने रेडियो से ये शोक समाचार सुन लिये थे। दिनांक ९ प्रातः काल संघ को यह दुखद संवाद दिया गया तो सर्वत्र शोक छा गया

बाजार बंद हो गया और आपके गुण गान श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए ध्यान किया गया।

पूज्य पंजाब केसरी जी म० सा० का सन् १६५२ का चातुर्मास रतलाम में था। चातुर्मास समाप्ति के कुछ दिन पूर्व सैलाना संघ आपको सैलाना पधारने की विनती करने गया था। आप श्री ने खाच रौद आदि अन्य क्षेत्रों की विनतियां होते हुये भी सैलाना को प्राथमिकता प्रदान की और नवम्बर ५२ प्रथम सप्ताह में सैलाना पधारे। सैलाना में ही सहज राम जी को ८-११-५२ को आपने दीक्षा प्रदान की। वह दीक्षा बड़े हर्ष और उल्लास पूर्वक हुई। श्री सहज मुनि जी महाराज पंजाब में विचरते रहे हैं और एक अच्छे तपस्वी सन्त हैं। आप प्रति वर्ष बड़ी-बड़ी तपस्याएं करते हैं।

श्रमणों में व्याप्त मर्यादाहीनता स्वच्छन्दता और दुराचार से आप खिन्न रहा करते थे। स्वास्थ्य की प्रतिकूलता के कारण पिछले ८-१० वर्ष से आप दिल्ली विराजे। मानहानि केस के निमित्त से मेरा दिल्ली जाना होता तब आपके दर्शन होते और वार्त्तालाप होता और आप अपने हृदयोदगार व्यक्त करते। मुकद्दमे की पेशी के लिये मैं ६-१-६७ को दिल्ली पहुंचा। वहां मालूम हुआ कि सदर के स्थानक में श्री अभिनन्दन जी के ६१ की तपस्या का पूर कल ८-१-६७ को हुआ। उस तपोत्सव पर दिल्ली के बड़े-बड़े बेंड स्थानक पर बजाए गये। बड़ा भारी जलसा हुआ। वहां के संतों और श्रावक संघ के अग्रेसरों ने दिल्ली में रहे हुए अन्य सन्तों को भी इस उत्सव में आमंत्रित किया था। श्री सुशील कुमार जी आदि तो सम्मिलित हो गये किन्तु पूज्य पंजाब केसरी जी म० सा० सम्मिलित नहीं हुये और आडम्बर के विरुद्ध उदगार व्यक्त किये।

आचार्य सम्राट के अम्बाला आदि में अभूत पूर्व और महान आडम्बर पूर्ण स्वागत के प्रति आपने तीव्र विरोध स्पष्ट शब्दों में आचार्य सम्राट को भेजा था। दिल्ली में हो रहे शताब्दि उत्सव के विषय में आपको सहमत करने के प्रयास हुए किन्तु सभी प्रयास व्यर्थ हुये।

एक बार आपने मुझे चान्दनी चौक के स्थानक में फरमाया था कि आगरे से आकर यहाँ बराबर के कमरे में तीन संत ठहरे थे मैं उनके आचार विचार के विषय में सुन चुका था मैंने देखा कि वे लघुनीत आदि परठने के लिये बाहर नहीं गए तो मैंने उनसे पूछा उन्होंने कहा हमने मोरी में ही परठ दिया आगरे में हम वैसा ही करते थे। नल का पानी और पाखाने का उपयोग करना भी उन्होंने स्वीकार कर लिया था। साधुओं में भ्रष्टता कितनी बढ़ गई है।

आपके वियोग से स्थानक वासी जैन समाज ने महान् संत खो दिया है। ऐसे महान संतों की क्षति पूरी होना असंभव है। मैं दर्शन की बहुत अभिलाषा रखता था परन्तु अन्तराय के उदय से और स्वास्थ्य आदि की प्रतिकूलता के कारण वंचित ही रहा। आपकी आत्मा शाश्वत सुख प्राप्त करे यही भावना है।

रतन लाल डोसी
सम्पादक-सम्यग दर्शन
सैलाना मध्य प्रदेश

समाचारी विषयक प्रश्नावली

प्रश्न १—आचार्य या सामान्य विख्यात साधु के उपदेश श्रवणार्थ मंडुआ (पंडाल) का बनाना, वहां की विषम भूमि को सम बनाना वहां का कूड़ा कचरा परिमार्जित करना, दरी आदि की बिछायत करना अधिक जनता के सुनने की सुविधा के लिये ध्वनिवर्धक यंत्र का प्रवन्ध करना आदि क्रियाओं का संबंध केवल गृहस्थों से ही है, या पूर्वोक्त सभी क्रियाओं का संबंध व्याख्यानदाता मुनिओं से भी है ?

प्रश्न २—देवताओं की चर्चा सावद्य है या निर्वद्य ? देवता तीर्थंकरों के, अतिशयों में सहायक होते हैं, और समवशरण की रचना करते हैं। उनकी वह चर्चा सावध है या निर्वद्य है ?

प्रश्न ३—कोई महान् आचार्य या सामान्य सुविख्यात विद्वान विख्याता मुनि के दर्शनार्थ गृहस्थ लोग मोटर, तांगा, बैल गाडी या पादचारी रूप से बड़े समारोह के साथ आते हैं क्या इसे भी पूर्वोक्त व्यक्तियों का अतिशय माना जा सकता है ? क्या दर्शनार्थियों के गमनागमनादि क्रियाओं का पूर्वोक्त मुनियों से भी कोई संबध है क्या उन्हें भी दोष लगता है ?

प्रश्न ४—जो सम्यग् दृष्टि मनुष्य या देवता भगवान के वचनों का प्रसार और धर्म की प्रभावना करने के लिये पूर्वोक्त क्रियायें करते हैं या इनमें सहयोग देते हैं तो उनके भाव सावध हैं या निर्वद्य हैं ?

प्रश्न ५—बादर वायु काया का पर्याप्त अधोलोक, उर्ध्वलोक और तिरछे लोक में कहां तक है ? भगवती सूत्र शतक १६, अग्नि हवा के बिना प्रचलित नहीं होती।

प्रश्न ६—पीतल का गोला आदि-आदि गोले अन्दर से पोले हों और ऊपर से इस तरह बन्द हों कि कोई सूक्ष्म से सूक्ष्म छेद भी न हो तो उसमें बादर वायु का पर्याप्त बाहर से प्रवेश कर सकता है या नहीं ? अगर कर सकता है तो उसमें बादर तेउ काया का पर्याप्त जीवित रह सकता है या नहीं ?

प्रश्न ७—पांचवें आरे के आखरी चौथे पहर में तेउ काया का नष्ट होना माना है। क्या उस समय की वर्त्तमान तेउ काया का नष्ट होना माना है, या उस समय के अग्नि उत्पादक पदार्थों की अग्नि उत्पादक शक्ति का भी नाश हो जाता है ?

प्रश्न ८—"तथा पगारे" शब्द सिर्फ सजातीय वस्तु में उपयोग किया जा सकता है या विजातीय वस्तु में भी ?

प्रश्न ९—उतराध्ययन-सूत्र अध्ययन २८ वाँ मोक्षमार्ग जिसमें शीत, उष्ण, वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, प्रभा, छाया, ताप आदि पुद्गल के लक्षण बताये गये हैं और भगवती सूत्र का १५ वां शत्तक जिसमें तापस की तेजो लेश्या भगवान् महावीर की शीतल लेश्या और भगवती सूत्र सातवां शत्तक दसवां उद्देसा में प्रश्न किया है कि सचित्त पुद्गल भासते हैं या अचित्त पुद्गल भासते हैं ? उत्तर में भगवान फरमाते हैं कि सचित्त पुद्गल भी भासते हैं और अचित्त पुद्गल भी भासते हैं अर्थात् प्रकाश करते हैं और जलाते हैं जैसे कि तेजोलेश्या कि लब्धि के पुद्गल। तो अचित तेजोलेश्या पुद्गल में ऊष्णता और संदग्वता दोनों बातें पाई जाती है तो क्या इस आधार पर वह सचित्त मानी जा सकती है?

प्रश्न १०—यह बात प्रत्यक्ष है कि बिजली (Electric) ठंडी भी होती है और उष्ण भी। क्या कहीं बादर तेउकाया के लिये या आकाश की बिजली के लिये भी ऐसा कोई पाठ सूत्र में आया है कि इनमें भी शीत और उष्ण दोनों धर्म हों ?

प्रश्न ११—इलेक्ट्रिक रगड़ से या बिना रगड़ से दोनों प्रकार से उत्पन्न होती है। क्या बादर तेउकाया भी ऐसे ही उत्पन्न होती है ?

प्रश्न १२—इलेक्ट्रिक में प्रकाश होता है मगर धुआँ नहीं होता है क्या बादर तेउकाया में भी ऐसा होता है ?

प्रश्न १३—इलेक्ट्रिक से पुद्गलों की शक्ति लेकर प्रकाश होता है उनकी राख नहीं होती सिर्फ उनकी शक्ति खींचती है। क्या बादर तेउकाया में ऐसा होता है ?

प्रश्न १४—इलेक्ट्रिक खींचती भी है और धक्का भी देती है। बादर तेउकाया में यह दोनों चीज हैं या नहीं ?

प्रश्न १५—इलेक्ट्रिक सूखी लकड़ी में रह सकती है, उसे भस्म नहीं करती। क्या बादर तेउकाया भी सूखी लकड़ी को बिना लकड़ी को जलाये रह सकती है ?

प्रश्न १६—इलेक्ट्रिक मनुष्य, पशु-पक्षी आदि को बिना किसी दाग के लगाये बेजान कर सकती है। क्या बादर तेउकाया से भी ऐसा ही होता है ?

प्रश्न १७—इलेक्ट्रिक उष्ण को शीतल भी कर सकती है और शीतल को उष्ण भी कर सकती है क्या बादर तेउकाया भी ऐसा कर सकती है ?

प्रश्न १८—इलेक्ट्रिक काँच के बल्ब के अन्दर रह कर प्रकाश देती है उसमें हवा के लिये कोई सुक्ष्म स्थान भी नहीं होता। जरा भी छेद होने से प्रकाश नही हो सकता। क्या बादर तेउकाया ऐसे बल्ब मे जिसमें हवा का प्रवेश होने को स्थान न हो जिन्दा रह सकती है ?

इन प्रश्नों के उत्तर दशवें कालिक सूत्र के चौथे अध्ययन में जो अग्नि की किस्में बताई है या पन्नवणा सूत्र में अग्नि की किस्में बताई हैं उन सब पाठों से घटा देने की कृपा करें।

प्रश्न १९—जिस गच्छ या संघ मे श्रद्धा या परूपणा की विषमता हो वह शास्त्र के अनुसार कितने दिन तक चल सकता है ?

प्रश्न २०—सचित्त और अचित्त के विश्वास विषय का प्रश्न अल्पमत या बहु-मत से पास हो सकता है क्या ?

प्रश्न २१—एक संघ के साधु संभोगी कुछ तो खाने पीने की कितनीक वस्तुओं को सचित्त मानते हैं और कुछ अचित्त मानते हैं। आपस में मतभेद होते हुए क्या सचित्त मानने वाले उस वस्तु को ग्रहण कर सकते हैं ? इसका उत्तर सुत्र के पाठ से देने की कृपा करें।

प्रश्न २२—संघ की एकता के लिये श्रद्धा-परूपणा की विषमता मिटाने के लिये, जिन वस्तुओं में मतभेद है और जो पिछली संप्रदायों की मान्यता है उनका त्याग करने में लाभ है या नहीं ?

प्रश्न २३—क्याचौमासी दंड लेने से टूटा हुआ महाव्रत ठीक हो सकता है ?

प्रश्न २४—जिस आचार्य ने ऐसी टीका लिखी हो "पंच महाव्रती साधु वृक्ष (पेड़) से पक्का फल तोड़ कर खाले और चौमासी दंड ले ले" उसकी यह वाणी सावद्य है या निर्वद्य ?

प्रश्न २५—क्या विना फूल और विना बीज के कोई फल होता है ? यदि होता है तो वह कौन सा फल होता है ? क्या सूत्रों में ऐसा कोई पाठ है ?

प्रश्न २६—यदि कोई वृक्ष से टूटे ताजा फल और फूल को अचित्त मानते हैं तो उनकी मान्यता सावद्य है या निर्वद्य ? क्या उनकी टीका सर्व रूप से मान्य हो सकती है ?

प्रश्न २७—जिन आचार्यों ने टीकाओं में मन्दिर बनाना, मूर्ति का पूजन करना, मूर्ति को स्नान कराना, पुष्पादि चढ़ाना फल चढ़ाना बताया है उनकी वाणी सावद्य है या निर्वद्य है ? मंदिर के ऊपर कोई वृक्ष आदि उग जाये तो साधु जतना के साथ निकाल देवे। यह वाणी सावद्य है या निर्वद्य है ?

प्रश्न २८—मूर्ति पूजकों का कहना है कि यदि स्थानकवासी टीकाओं और चूर्णि

को मान लें तो इन्हें मूर्ति पूजन करना पड़े उनकी ऐसी धारणा उचित है ?

प्रश्न २९—जो साधु कपड़े पर या माँडले पर विना पात्र के ही आहार की ढेरी लगाकर खाते हैं तो जीव जन्तु और कीड़ी आदि की अयत्ना होती है या नहीं ? मांडले पर आहार रखने से कपड़ा चिकना होने पर उसका क्षार घास लेट (मिट्टी का तेल) आदि से धोने की कोशिश की जाती है इसमें निष्प्रयोजन आरम्भ है या नहीं ?

प्रश्न ३०—गर्म ईंट और रेता साधु सेक देने के उपगोग में लाते हैं। अधिक गर्म ईंट और रेता कपड़े में रखने से कपड़ा जलने लग जाता है या उसमें दाग लग जाता है ? उसमें सचित्त अग्नि है या नहीं ? रायप्रसेणी सूत्र में जीव की सिद्धि के लिये लोहे के गोले में अग्नि प्रवेश का दृष्टांत दिया है। जिस प्रकार उस गोले में अग्नि प्रवेश करती है उसी प्रकार ईंट में भी अग्नि प्रवेश करती है या नहीं ? उसका सेक करना साधु को कल्पता है या नहीं ?

प्रश्न ३१—अनेक फाऊन्टेन पेन आदि धातु-युक्त वस्तुयें जो सूर्यास्त के पहले किसी गृहस्थ को मोड़ दी जाती हैं? क्या गृहस्थ उन वस्तुओं को जो साधु रखते हैं क्या वे वस्तुएं गृहस्थ किसी अपने उपयोग में ला सकता है या दूसरे को दे सकता है ? या उनको बेच सकता है ? यदि ऐसा नहीं कर सकता तो क्या वह वास्तव में साधु के नेश्राय की वस्तु ही नहीं गिनी जायगी ?

प्रश्न ३२—क्या साधु गृहस्थ की पीठ थपथपा सकता है या सिर पर हाथ फेर सकता है ? क्या गृहस्थ का हाथ पकड़ कर खींच सकता है ? या बच्चे को गोद में लेकर खिला सकता है ? ये क्रियायें शास्त्र के आधार पर कल्पनीय हैं या अकल्पनीय ?

प्रश्न ३३—सूतक और पातक जो साधु टालते हैं और टालने में किसी सूत्र की गाथा का हवाला देते हैं तो उनका यह सिद्धान्त सही है या गलत ?

प्रश्न ३४—जिन क्षेत्रों में साधुओं को दस या बीस साल विचरते हो गये हों लम्बे सफर और परदेश को छोड़ कर शेष समय में वैतनिक आदमी रखना या उसे द्रव्यादिकी सहायता दिलाना या पडवाई भ्रष्टाचारी को साथ में रखना उसको द्रव्यादि की सहायता दिलवानी यह साधु के लिये कलंक रूप हैं नहीं हैं ? या अपने पास आदमी रखकर उसके द्वारा खुद धन एकत्रित करना क्या यह उचित है ?

प्रश्न ३५—वायु काया की हिंसा शब्द से होती है या मुखसे निकली हुई वायु से होती है ? मुख वस्त्रिका किस लिये लगाई जाती है ? एक तो नंगे मुंह बोलता है और एक पट्टी पर सूत्र रख कर उसे व्याख्यान में ऊंचा-ऊंचा उछालता है तो अधिक हिंसा किस में है ?

प्रश्न ३६—जो तीर्थंकर मोक्ष में चले गये उनके लिये ऐसा कहना "आओ महावीर स्वामी या आओ शांतिनाथ भगवान" आदि शब्द भजनों और स्त्रोत्रों में जैन सिद्धान्तों के विरुद्ध है या नहीं ऐसे शब्द बड़े-बड़े आचार्यों एवं सुप्रसिद्ध विद्वानों तक के मुंह से सुने जाते हैं। क्या यह उचित है ?

प्रश्न ३७—जिन-जिन देशों के मुख्य श्रावक या साधारण श्रावक अपने को स्थानक वासी कहलाते हुये जड तीर्थों की यात्रा करने के लिये और वर्षी तप आदि के पारणे करने के लिये मन्दिरादि में मूर्तियों के दर्शनार्थ जाते हैं, मूर्तियों को वन्दना करते हैं, माला, पुस्तक, पट्टे आदि को माथा टेकते हैं और शरीर पर माला रगड़ते हैं। ऐसे भ्रम कहीं-कहीं साधु वर्ग में भी सुने जाते हैं। जब उनको यह कहा जाता है कि ये कर्म स्थानकवासी संस्कृति के विरुद्ध हैं तो जवाब मिलता है कि हमें तो किसी से राग-द्वेष नहीं है। क्या जड पूजा, जड़ तीर्थों की यात्रा, मूर्ति को वन्दना आदि स्थानकवासी होने के नाते इनमें मिथ्यात्व मानते हैं या नहीं? मिथ्यात्व में राग-द्वेष की सीमा है। इस प्रकार जो श्रावक वर्ग मिश्रपंथी हो रहा है वह क्या श्रावक की कमजोरी है या इसमें साधु भी कारणभूत है? यदि

ऐसा नहीं तो पंजाब में ऐसा क्यों नहीं वहाँ ६६ फी सदी ऐसे स्थानकवासी हैं जो ऐसे मिथ्यात्व में नहीं पड़ते।

प्रश्न ३८—हस्तलिखित सूत्र, रंगे हुये पात्र, वस्त्रादि साधुओं द्वारा गृहस्थी के यहाँ धरोहर रूप से रखना गृहस्थियों से उठवाना, अलमारी वगैरा में अपनी नेश्राय का सामान रख कर ताला लगवाना यह चीजें क्या साधुओं के कल्प में है या कल्प से बाहर हैं ?

प्रश्न ३९—हम सोजत से चलते हुये आ रहे थे। सोजत जाते समय तो कई जगह केले के लिये विनती की गई और देखने में भी आया पर आते वक्त जब कभी मैं गोचरी गया कहीं केला दिखाई नहीं दिया और न किसी ने विनती ही की। इसका भी कोई कारण होना चाहिये। यहां बम्बई में आकर केला देखने में आया। इकट्ठे गुच्छे के गुच्छे हरे रंग के छिलके सहित जिनमें देखने पर पीलापन प्रतीत नहीं होता था। गृहस्थियों से सुना गया कि ये सूजते हैं। साधु इनको लेते हैं तो क्या इन में असंख्याता जीव होने की शंका नहीं है ? और रास्ते में एक चीज देखने में आई कि खरबूजे वगैरा के टुकड़ों के ऊपर थोड़ी शक्कर डाली हुई पाई। उसकी विनती की गई उन में भी कुछ कतले अधपके नजर आये। सेन्धवा से आगे तो शक्कर भी नहीं डाली होती थी और नीचे से कुछ पके होते थे और ऊपर से बाकी कच्चे ही, इस प्रकार कच्चे पक्के नजर आये। गृहस्थी यदि साधु के लिये रखे तो पक्के देख कर रख सकता है लेकिन साधु को तो अपने लिये रखी वस्तु लेनी नहीं है। यदि उसने अपने लिये रखे हैं तो उसके लिये कच्चेपक्के का सवाल ही नहीं उठता, उनको तो मीठा और खाने लायक होना चाहिये। एक फल कच्चा भी मीठा होता है और एक फल पकने पर भी मीठा नहीं होता है। किसी फल का गुदा तो मीठा होता है और बीज कडवे होते हैं। किसी फल का गुदा भी कडवा होता है चाहे वह अध

कचरा ही हो। मैं दो चीजों को प्रासुक समझने की कोशिश कर रहा था। एक पो पक्के हुये आम की फांकें और एक खरबूजे का पणा। एक जगह कुछ साधु खरबूजे का पणा लाये! मैंने उसमें से एक कतला उठा कर देखा तो वह कच्चा नजर आया। ऐसी हालत में ऐसी चीजों को साधु ले तो क्या वह मिश्र काम नहीं हो सकता जितने भी मीठे फल हैं क्या मीठा डालने [शक्कर] से अचित्त हो सकते हैं? जैसे मिट्टी से धोये हुये बरतनों का धोवन साधु नहीं लेते क्योंकि मिट्टी और पानी का मेल है उससे देश घात हो सकती है लेकिन सर्व घात नहीं हो सकती। इसी तरह मीठे फलों के लिये जिनमें कच्चे पक्के की शंका है मीठा डालने से क्या वे अचित्त हो जाते हैं? मीठे के साथ मीठे का मेल होता है ऐसी हालत में उसको शस्त्र परिणित कहना चाहिये? ऐसी हालत में सचित्त के त्यागी साधु को वह लेना चाहिये या नहीं?

प्रश्न ४०—ऐसा देखने-सुनने में आता है कि जो फल बेचने के लिये किसी शहर आदि में ले जाये जाते हैं उनको पूरी तौर से पकने नहीं देते क्योंकि उनको अधिक दिन हो जाने पर खराब हो जाने का डर रहता है तरबूज में बीज गूदे के अन्दर तक छिपे हुये रहते हैं और निकाल देने पर भी कभी-कभी मुंह में आ जाते हैं और ऊपर से एक अंगुल से अधिक कच्चा होने की सम्भावना रहती है। इसी प्रकार खरबूजे में त्वचा के ऊपर से अन्दर तक जो लकीरें पड़ी होती हैं उस लकीर में ऊपर से नीचे तक कच्चेपन की सम्भावना रहती है। गृहस्थ वर्ग तो अपने लिये कच्चा पक्का बना लेगा। इस प्रकार उसमें कच्चापन रह जायगा और साधु के लिये खास-तौर से बनाया जाय तो वह साधु को लेना नहीं कल्पता। क्या इस प्रकार के फल लेना कल्पनीय है? और साधु इस प्रकार का

प्रश्न ४१—गृहस्थी अपने सुनने के लिये लाउड स्पीकर लगाते हैं साधु उसमें बोलते हैं। साधु का भगवती सूत्र में ९ कोटी पच्चक्खाण बतलाया है। मोल लेना, लिवाना, लेने का अनुमोदन करना, स्वयं पचन पाचन करना, कराना, और करने का अनुमोदन करना। जीवों का हनन करना कराना करते हुओं का अनुमोदन करना। लाउडस्पीकर में बोलने वाले को इन ९ कोटी पच्चक्खाणों में से किस पच्चक्खाण में दोष लगा और जो मोल की चीज सदोष और सचित्त-अचित्त मिश्र वस्तु का इस्तेमाल करते हैं तो ९ कोटी पच्चक्खाण में से कौन सा पच्छक्खाण बाकी रहा।

प्रश्न ४२—एक महाव्रती साधु रेल गाड़ी में बैठ कर सफर करे और एक नौ दस गृहस्थियों को साथ में रख कर गृहस्थियों के द्वारा उठाई हुई डोली में सफर करे तो इनमें विशेष अन्तर क्या है। कल्प के अन्दर कौन सा है कल्प के अन्दर कौन सा नहीं है ?

प्रश्न ४३—भगवती सूत्र में छटे गुण ठाणे के दो भेद किये हैं। आरंभी और निरारंभी, पात्रों के संबंध में वृक्ष कटने से लेकर पात्र तैयार होने तक आरम्भ होता है विशेष साधुओं को लक्ष में रखकर बनते हैं यानि साधुओं के निमित्त बनते हैं और प्रेस में पुस्तक शास्त्र इत्यादि छपवाने में आरम्भ होता है वह दोनों प्रकार के आरम्भ जो छठे गुण ठाणे का पहले भेद से आरम्भ किया है वह उसमें समाविष्ट होते हैं अथवा नहीं? होते, हैं तो मूल गुणों की हानि करते हैं या उत्तर गुणों की हानि करते हैं ? समाचारी विषयक १९५३ में मैंने बम्बई से अनुमानतः ४७ प्रश्न सामाजिक समाचार पत्रों में निकलवाये थे उन सभी प्रश्नों का समुच्चे रूप से किसी की भी ओर से उत्तर नहीं मिला किन्तु जोधपुर के तरुण समाचार पत्र में उन दिनों कितने समय तक यदा कदा दो चार आधार रहित और मनोकल्पित उत्तर छपते रहे। सन् १९७० में चांदनी चौक से

ऐसी चर्चा सुनी गई कि एक मुनि के पास बिजली आदि को सचित्त साबित करने के लिये प्रचुर मात्रा में सामग्री एकत्रित की हुई है और कुछ श्रावकों को सुनाई भी गई है अतः यह प्रश्न पुस्तक में दिये जा रहे हैं कोई भी विद्वान मुनि इन प्रश्नों का समूह रूप से सिद्धान्त के आधार पर समाधान कर दे तो बहुत दिनों से उलझी हुई गुत्थी सुलझ जाय। अब रहा विषय ध्वनि यंत्र पर बोलने का। इस विषय में सचित्त या अचित्त पूछने की आवश्यकता नहीं रही क्योंकि जैन समाज की चार शाखायें हैं स्थानकवासी, तेरापंथी, मूर्तिपूजक, पुजेरे, मूर्तिपूजक दिगम्बरी। प्रायः करके सभी ध्वनि यंत्र का प्रयोग करते हैं व्यक्ति गत बात अलग है स्मरण रहे कि जिस समय ई० १९५३ में यह प्रश्न छपवाये गये ऐसी बातें पढ़ने में आई कि पंजाब केसरी महाराज ने यह प्रश्न बनवारी मुनि के नाम से निकलवाये यह उन लोगों की भ्रान्ति थी। महाराजश्री ने इस विषय में मेरे को कोई प्रेरणा नहीं दी मैंने तो यह प्रश्न केवल अपनी जिज्ञासा के समाधान के लिये निकलवाये थे महाराजश्री का कोई भी कार्य डंके की चोट के समान होता था वे कोई भी कार्य किसी को आगे रख कर नहीं करते थे।

प्रश्न ४४—कुछ लोगों की ऐसी मान्यता है कि संसार का कोई भी पदार्थ अनन्तानन्त नहीं है वे लोग ऐसी दलील देते हैं कि आठ बोल अनन्त के हैं इन आठ बोलों से ऊपर और कोई बोल अनन्त का नहीं है। आठ बोल इस प्रकार हैं। सबसे कम अभव्य अनन्त, इससे अनन्त गुणा अधिक समकित के पडिवाई, इनसे अनन्त गुणा अधिक सिद्धात्माएं, इन से अनन्त गुणा अधिक समुच्चे संसारी जीव, इससे अनन्त गुणा अधिक पुद्गल, इस से अनन्त गुणा अधिक काल, इससे अनन्त गुणा अधिक आकाश, इस से अनन्त गुणा अधिक केवल

और केवल दर्शन की पर्यायें यह विषय भी विचारणीय है कि इन लोगों की ऐसी दलील युक्ति संगत है या नहीं ?

प्रश्न ४५—यदि ऐसा मान लिया जाए कि इन आठों द्रव्यों को अनन्तानन्त मान लिया जाए तो ऐसा मानने में कौन सी बाधा उपस्थित हो सकती है यह भी विचारणीय विषय है।

प्रश्न ४६—छओं द्रव्यों में उत्पाद व्यय ध्रुव माना गया है इन में उत्पाद व्यय को स्व आश्रित माना है या पर आश्रित ?

प्रश्न ४७—इन आठ बोलों में काल छठा बोल है जो पिछले पाँच बोल हैं उनकी जितनी पर्यायें हैं उन सभी पर्यायों के साथ यदि एक-एक समय माना जाए तो उनके बराबर ही काल होता है किन्तु काल को उनसे अनन्तगुणा अधिक माना गया है यह संगति कैसे बैठ सकती है ?

प्रश्न ४८—कुच्छ विद्वानों का ऐसा मत है कि भगवती सूत्र शतक दूसरे और उद्देशे प्रथम में जैसे वर्णन आया है कि गौतमस्वामी ने स्कन्दक-सन्यासी का जो स्वागत किया, वह असंयती का स्वागत किया है" क्या इन विद्वानों की ऐसी धारणा उचित है ?

प्रश्न ४९—गौतमस्वामी के द्वारा स्कन्दकसन्यासी का स्वागत किये जाने से गौतमस्वामी के द्वारा क्या व्यवहार मर्यादा का उल्लंघन हुआ है या नहीं ?

प्रश्न ५०—जैसे उत्तराध्ययनसूत्र के १४ वें अध्ययन में भृगुपुरोहित के पुत्रों को गृहस्थी भेष में होते हुए भी उन्हें मुनि कह कर संबोधित किया गया है ?

प्रश्न ५१— उत्तराध्ययन सूत्र के १९ वें अध्ययन में मृगापुत्र को गृहस्थी भेष में होते हुए भी "दमीसरे" कहकर पुकारा गया है इसी प्रकार स्कन्दकसन्यासी को भावसंयती कहने में कौनसी बाधा उपास्थित हो सकती है ?

प्रश्न ५२—दिगंबर मुनि श्रीविद्यानन्द जी ने एक पुस्तक प्रकाशित करवाई है उसमें उन्होंने लिखा है कि रामचन्द्र जी राज्य करते हुए भी वीत-रागी थे उनका ऐसा कथन सही है या गलत है ?

प्रश्न ५३—मैंने दिगंबर भाइयों के माध्यम से पुच्छवाया था कि वीतरागी तो चार गुणस्थानों अर्थात् ११ वें से लेकर १४ वें तक वीतरागी होते हैं, उन्होंने रामचन्द्रजी को राज्य करते वीतरागी कैसे मान लिया ? मेरे-इस प्रश्न के उत्तर में उन्होंने उत्तर दिया था कि तद्भवाश्री" तद्भव का अर्थ होता है उसी भव में, वीतरागी बनने वाला। क्या मेरे प्रश्न के उत्तर में उनका ऐसा कहना सही है ?

प्रश्न ५४—उनकी ऐसी दलील को यदि मान भी लिया जाए तो जितने भी चरमशरीरी हैं उन्हें जन्म से ही वीतरागी मानना चाहिए ?

प्रश्न ५५—श्रीरामचन्द्रजी वलदेव थे। वलदेव पदवी अमर होती है क्या—वलदेव की पदवी में वर्तते हुए वीतरागी हो सकते हैं अथवा नहीं ?

प्रश्न ५६—शास्त्रों में वर्णन आया है कि सभी जीवों के उत्पत्तिकाल में सभी की अवगाहना अंगुल के असंख्यातवें भाग की होती है, भगवती सूत्र शत्तक दूसरे उद्देशे ५ में गर्भ की स्थिति का वर्णन आया है जिसमें अप्काय के गर्भ की स्थिति जघन्य एक समय की उत्कृष्ट छ मास की, तृर्यचनी के गर्भ की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त की, उत्कृष्ट ८ वर्ष की। मनुष्यनी के गर्भ की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त की, उत्कृष्ट १२ वर्ष की, गर्भ की काया स्थिति २४ वर्ष की, काया स्थिति से अभिप्राय है कि गर्भ का जीव १२ वर्ष पूरे होने पर मरकर पुनः उसी शरीर में उत्पन्न होना, अब जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है सभी जीवों की उत्पत्तिकाल में अंगुल के असंख तवें भाग जितनी अवगाहना होती है किन्तु जिस जीव ने १२ गर्भ में रहकर जिस शरीर को छोड़ा है वह तो वड़ा

चाहिए, और उत्पत्तिकाल में जीव का प्रथम आहार शुक्र और रक्त होता है अतः पूर्वोक्त शास्त्र के दोनों कथनों की संगति कैसे बैठ सकती है ?

प्रश्न ५७—जीव के भेद २, गुणस्थान ६, योग १५, उपयोग १२, लेश्या ६, यह सारे बोल किसमें पाये जाते हैं ?

(भाषा का अहम्)

कुछ पंडित लोग इस प्रकार के आत्मसंबन्धि प्रश्नोत्तरों को उपहास रूप में लेते हैं। वास्तव में थोकड़ा तो ज्ञान के समूह का नाम है यदि गहराई से सोचा जाये तो अधिक माल थोक व्यापारी के पास ही रहता है परचून वाले के पास उतना माल नहीं होता अतः थोक ज्ञान का उपहास नहीं होना चाहिए, सादड़ी सम्मेलन के पश्चात् महाराजश्री उदयपुर पधारे वहां पर कुछ श्रावक थोक ज्ञान के जानकार थे जैसे रतनचन्द, राजमल आदि, एक भाई ने महाराजश्री से वार्त्तालाप करते हुए कहा कि श्रीकवि जी महाराज यहाँ पधारे थे राजमल श्रावक ने उनसे प्रश्न किया कि बैठी हुई मक्खी में जीव के कितने भेद होते हैं ? और उड़ती हुई मक्खी में जीव के कितने भेद होते हैं ? कवि जी महाराज ने उत्तर दिया कि क्या तुम्हें मक्खी बनना है ? इस प्रकार का उत्तर उपहास रूप ही हो सकता है। महाराजश्री के पास कुछ बोल विचार वाले श्रावक आये और उन्होंने महाराजश्री से अर्ज की कि कोई बोल विचार वाला साधु हो तो नीचे की मंजिल में भेजने की कृपा करें, इतना कहकर वे लोग सामायिक करने नीचे की मंजिल में चले गए, इसके बाद महाराजश्री ने मुझे फरमाया कि श्रावक आये थे वे बोल विचार करना चाहते हैं अतः तुम नीचे चले जाओ ! महाराजश्री की आज्ञा पाकर मै बोल विचार के लिए नीचे की मंजिल में चला गया वहां पर श्रावकों के साथ कुछ समय वार्त्तालाप चलता रहा। राजमल श्रावक ने मेरे से प्रश्न किया कि आप स्थावर है—अथवा सूक्ष्म ? मैंने उसे कविजी महाराज की तरह ऐसा उत्तर नहीं दिया कि आप स्थावर बनना चाहते हैं ? या सूक्ष्म ? क्योंकि स्थावर भी एकेन्द्रिय होता है

और सूक्ष्म भी एकेन्द्रिय होता है मैंने उसे उत्तर दिया कि मैं न तो स्थावर हूं न सूक्ष्म हूं यह दोनों एकेन्द्रिय हैं मैं पंचेन्द्रिय हूँ। वास्तव में श्रावक परीक्षा लेना चाहता था—इसके वाद काफी समय तक वार्तालाप के पश्चात् मैं महाराजश्री की सेवा में चला आया, वास्तव में पंडितलोगों को अपने शब्द ज्ञान का कुछ मान आ ही जाता है ।

एक वार डाक्टर इन्द्रचन्द्र जी शक्तिनगर स्थानक में आये—उन्हें आंखों से नहीं दीखता अत: उनके साथ एक आदमी और रहता है वे यहां पर आकर कुर्सी पर वैठ गए, कई सन्त नीचे वैठे हुए थे कुछ समय वाद वे कुर्सी से उठ कर मेरे पास आये तव वे नीचे फर्श पर वैठ गये उनके साथ कुछ वार्त्तालाप प्रारम्भ हुआ मैंने उनको कहा आप वीकानेर जैसी धार्मिक संस्था में पढ़े हो ! वहां उस संस्था में विद्यार्थियों को वोल विचार सिखाया जाता है आप पढ़े लिखे हो और शास्त्री हो ! इस विपय में आपका क्या विचार है कि शुक्लपक्ष और परित्तसंसारी की क्या परिभाषा है ? शुक्लपक्ष और परित्त-संसारी में परस्पर क्या अन्तर है ? यह दोनों एक ही चीज हैं या भिन्न-भिन्न चीजें हैं ? जीव को शुक्लपक्ष पहले होता है या सम्यक्त्व पहले होता है अथवा परित्तसंसारी पहले होता है ? जीव को शुक्लपक्ष स्वाभाविक होता है या करनी विशेप से ? मेरे इन प्रश्नों के विपय में कुछ समय तक चर्चा चली किन्तु वे इस विपय में विशेप गतिशील न हो सके ।

मैंने उनसे प्रश्न किया कि आठ कर्मों का देश वंध होता है ? या सर्ववन्ध होता है ? इस प्रश्न का भी उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया, इसके वाद उन्होंने श्रावकों की आलोचना रूप चर्चा प्रारम्भ कर दी तथा श्रावकों के नियम उपनियमों का वर्णन करने लगे इस दौरान मैंने उनसे पूछा कि श्रावक का द्रव्य क्या है ? क्षेत्र क्या है ? काल क्या है और भाव क्या है ? मेरे इस प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि श्रावक का द्रव्य समकित है इस पर मैंने उनसे कहा कि द्रव्य तो सदा काल वना रहता है उसका कभी भी नाश नहीं होता, उत्पाद और व्यय धर्म तो पर्याय के होते हैं समकित और चरित्र को तो उत्तर गुण माना गया है और द्रव्य तो मूलगुण है समकित तो एक भव में आजा सकती है क्या द्रव्य भी आ जा सकता

है ? द्रव्य तो वह तत्व है जो जीव के साथ नित्य ही विद्यमान रहता है मेरे इतने कहने पर डाक्टर इन्द्रचन्द्रजी निरुत्तर हो गए, मैंने उनसे कहा कि क्या आपको इसका उत्तर नहीं आया ? तो क्या आप ऐसा नहीं कह सकते इसका उत्तर मुझे नहीं आया आप ही इस विषय पर प्रकाश डालें विस्तार से समझायें क्या ऐसा पूछने से आपकी शान में कोई अन्तर पड़ता है ? साधु भी श्रावक से पूछ सकता है कि श्रावक जी इस प्रश्न के विषय में आप ही प्रकाश डालें, श्रावक से पूछने पर साधु की शान में भी कोई अन्तर नहीं पड़ता, जब हमारी शान में कोई अन्तर नहीं पड़ता तो श्रावक होकर आपकी शान में क्या अन्तर पड़ता है ? आप तो श्रावक हो और धार्मिक संस्था में पढ़े हो इस विषय में यथेष्ट जानकारी भी रखते हो इस पर उन्होंने उत्तर दिया कि जैन धर्म विनय मूलक है इसके बाद मैंने उन्हें साधु और श्रावक के विषय में सर्वव्रत और देशव्रत के विषय में बताते हुए कहा—सामायिक दो प्रकार की होती है व्यवहार सामायिक और भावसामायिक। व्यवहार सामायिक भी चार प्रकार की होती है द्रव्य सामायिक, क्षेत्र समायिक काल सामायिक, और भावसामायिक, द्रव्यसामायिक उसे कहते हैं जिस साधक के पास आसन, पूंजनी अनापूर्वी मुख वस्त्रिका, माला आदि साधन स्वच्छ हों जिन्हें देखकर दूसरे लोग घृणा न करें, क्षेत्र सामायिक उसे कहते हैं सामायिक करने का स्थान शांत एकान्त हो वहां पर शृंगार तथा मन में विकार उत्पन्न करने वाले चित्र न हों, कालसामायिक, उस समय साधक ने किसी को मिलने का समय न दिया हो तथा उसे लघुशंका, दीर्घशंका की बाधा न हो चित्त में चंचलता न हो। भावसामायिक-साधक दृष्टि का निरोध करे, मन, वचन और काया योगों की चंचलता का निरोध करे, यह सभी साधन व्यवहार सामायिक के हैं साधक के द्वारा इतना प्रयत्न करने पर भी साधक के द्वारा भावसामायिक हो भी सकती है और नहीं भी। जैसे प्रसन्न चन्द्रराजर्षिणकादः"

भावसामायिक चार प्रकार की होती है द्रव्य सामायिक, क्षेत्रसामायिक, कालसामायिक और भाव सामायिक। द्रव्यसामायिक क्या है ? द्रव्यसामायिक का कर्ता भव्य होना चाहिये अभव्य नहीं क्योंकि सामायिक भव्य ही कर

सकता है अभव्य नहीं, क्षेत्र सामायिक लोकमात्र है क्योंकि लोकमात्र का ही देश आश्रव साधक रोक सकता है, सर्वव्रतीसाधक लोक मात्र का सर्वाश्रव रोक सकता है, आश्रव का रोकना ही सामायिक है, देशसामायिक का कर्ता त्रस-नालका तक है और सर्वसामायिक का कर्त्ता १५ कर्म भूमि तक ही है। काल-सामायिक यावज्जीवन की होती है श्रावक की देश सामायिक, और साधु की सर्व सामायिक। भाव सामायिक ४ अनन्तानुवन्धी ४ अप्रत्याख्यानी की चौक-ड़ियाँ तीन दर्शन मोहनीय कर्म की प्रकृतियों का यथा मिथ्यात्व मोहनीय, मिश्रमोहनीय और सम्यक्त्वमोहनीय इन ११ प्रकृतियों का क्षयोपशम करने वाला देश सामायिक का कर्त्ता होता है, और इन ११ प्रकृतियों के साथ ४ प्रत्याख्यानी की चौकड़ी को मिलाकर १५ प्रकृतियो को क्षयोपशम करने वाला साधक सर्वसामायिक का कर्त्ता साधु होता है—इस प्रकार यह सामा-यिक जीवनमें निरन्तर सोते-जागते उठते-बैठते नित्य प्रति चलती रहती है इसमें बाधा नहीं पड़ती क्योंकि आश्रवों को रोकना सामायिक है और आश्रवों को रोकने का कार्य व्रत का है अतः जितना-जितना व्रत ग्रहण किया जाता है उतनी-उतनी ही सामायिक है यदि देश आश्रव को रोका जाता है तो देश सामायिक है और यदि सर्व आश्रव को रोका जाता है तो सर्वसामायिक है अतः व्रत संवर है, अव्रत आश्रव है।

कोई पाठक इस प्रकार की शंका कर सकते हैं जैसा कि मैंने यहां लिख-वाया है कि समकित और चरित्र उत्तर गुण हैं मूलगुण नहीं। किन्तु समकित और चरित्र देशव्रत और सर्वव्रत के आधारभूत तत्त्व हैं तब उन्हें उत्तरगुण कैसे माना जाये ? इस शंका का समाधान यह है कि जिस वस्तु की उत्पत्ति होती है उसे उत्तरगुण माना जाता है समकित की उत्पत्ति होती है और चरित्र की भी उत्पत्ति होती है कर्मग्रंथ ऐसा मानता है—कि समकित मोहनीय और मिश्रमोहनीय ये दोनों प्रकृतियां स्वतन्त्र नहीं हैं, मूल प्रकृति तो मिथ्यात्व मोहनीय की है। मिथ्यात्व मोहनीय के क्षयोपशम करने से उसके तीन भाग हो जाते हैं समकित मोहनीय, मिश्रमोहयीय और मिथ्यात्व मोहनीय समकित मोहनीय और मिश्रमोहनीय प्रकृतियों का बन्ध नहीं, केवल उदय माना है

सिद्धान्त ऐसा मानता है। समकित मोहनीय का बन्धकाल जघन्य अन्तर्मुहूर्त का, उत्कृष्ट ६६ सागर से अधिक माना है परन्तु इसका अबाधाकाल शास्त्र में कहीं देखने में नही आया, उदय के विषय में भी ६५ प्रकृतियों का उदय द्रव्य, क्षेत्र, काल भाव, और भव की अपेक्षा से माना गया है इन ६५ प्रकृतियों में सम्यक्त्व मोहनीय तथा मिश्रमोहनीय प्रकृतियों का भी समावेश हो जाता है अत: इनके उदय में भी बाधा पड़ सकती है। कुछ विद्वानों का ऐसा मत है कि समकित मोहनीय प्रकृति का उदय ६६ सागर से अधिक तक रह सकता है इस बात से यह तथ्य उजागर होता है कि इस प्रकृति का जितना बन्ध है उतना ही उदय भी है अर्थात् इनके उदय को ध्रुव न मानकर अध्रुव माना गया है, इनका उदय सकारण माना गया है। अभिप्राय यह है कि इनके उदय में बाधा पड़ सकती है, कर्म ग्रंथ ऐसा मानता है—जिसने समकित का वमन कर दिया है प्रथम और तीसरे गुणस्थान में उसकी सत्ता में समकित मोहनीय प्रकृति नहीं रहती, समकित मोहनीय का नाश भी होता है और उत्पत्ति भी होती है समकित मोहनीय के उत्पन्न हुए बिना समकित की प्राप्ति नहीं होती, जब तक जीव में समकितमोहनीय तथा मिश्रमोहनीय प्रकृतियों का उदय होकर उनका क्षय या क्षयोपशम नहीं होता तब तक जीव को समकित की प्राप्ति नहीं होती, जीव एकान्त मिथ्यात्वी बना रहता है। अत: समकित और चारित्र को उत्तरगुण मानना युक्ति युक्त प्रतीत होता है। यहां पर प्रसंगवश ही समाकित तथा चरित्र के विषय में विशेष वर्णन किया गया है।

नोट—बिहार प्रचार और प्रेमज्योति के लिखवाते समय साधु मर्यादा एवं भाषा समिति का यथा संभव विचार रक्खा गया है तथापि किसी कारणवश प्रूफशोधने, संपादक की अलंकारीय भाषा के कारण न्यूनाधिक हो सकता है अत: मैं आवश्यक सूत्र के माध्यम से आत्मालोचना करता हूँ मूल गुण ५ महाव्रत उत्तरगुण १० विधि पच्चक्खाण इनके विषय में अतिक्रम, व्यक्तिक्रम, अतिचार, अणाचार जानते अजानते मन, वचनकाया करके सेव्या हो, सेवाया हो, सेवतां प्रति अनुमोद्या हो, तो मैं श्री अरिहन्त भगवन्तों की साक्षी से मिच्छामि दुक्कडं लेता हूँ साधु का मार्ग तो आत्मकल्याण का है और आत्मकल्याण निसल्य हो आत्मालोचना करने से ही होती है। इतिशुभम्।

शुद्धि-पत्र

प्रूफ संशोधन की असावधानी से प्रुफ की जो असहनीय अशुद्धियाँ रह गई, कृपया संशोधन कर पढ़े।

पृष्ठ न०	पंक्ति न०	अशुद्धी करण	शुद्धिकरण
१	१८	ढाई	ढ़ाई
१	२२	को	के
२	१३	पीडियों	पीढ़ियों
३	अन्तिम	(श्री वनवारी लाल जी से)	वनवारी लाल जी) से)
६	६	घणेराव	वाणेराव
६	१२	परपर	परस्पर
८	कुछ पंक्तियों में	संमेलन	सम्मेलन
६	४	सचित-अचित	सचित्त-अचित्त
१०	कुछ पंक्तियों में	सम्मेलन	सम्मेलन
१३	१५	उपरि	ऊपरि
२३	२२	जागे	जागना
२४	१६	शरीरी	शरीर
२६	१५	होने वाला	होता है
२७	४	जाता।	जाता है।
२६	४	उपरीलिखित	ऊपरलिखित
२६	६	नीन्द	नींद
२६	११	"	"
३८	२४	उतारु	उतारू
३८	२५	समान	स्नान
४१	१७	उद्धृरत	उद्धृत
४४	७	अजीव	अजीव
४४	अन्तिम में	है	हैं
४५	१	मगवान	भगवान

४५	६	अपकाथ	अपकाय
५०	१३	वम्वई, चानुर्मास	वम्बई, चातुर्मास
५४	६	ढाई	ढ़ाई
५४	८	है	हैं
५५	६	ढीले	ढ़ाले
५७	२३	लव्ध	लव्ध
६०	३	ठनि	ठाणे
६०	१५	हूक	हूक
६०	१७	नही	नही। (पूर्ण विराम)
६०	अन्तिम पंक्ति	निर्जन	निर्जल
६१	५	जाए, टंडी	जाए, ठंडी
६१	१०	पर	पर
६१	२०	कोना-कोना	कोने-कोने
६१	२५	लिखें	लिखे, (कोमा)
६१	२७	है अवृत	हैं अमृत
६२	१०	तुफानों	तूफानों
६२	१४	श्रवण	श्रमण
६२	१८	अज्गिय	अडिग
६२	१६	लाल मिसाल	वे मिसाल
६२	२२	वंधों, ग्रहस्थों	धन्धों, गृहस्थी
६२	२४	अघ्यात्मिकवाद	अध्यात्मिकवाद
६२	२६	है	हैं।
६३	७	रहा	रहा। (पूर्ण विराम)
६३	८	वह, वन	वह, वन
६३	६	तरइ	तरह
६३	१४	विश्वामी	विश्वासी
६३	२०	वलबोते	वलबूते

६४	६	विमारियो	वीमारियों
६४	६	अचूक	अचूक
६४	१६	लिपा	लिया
६४	२०	करें	करें। (पूर्ण विराम)
६४	२५	निपुर्ण	निपुण
६४	२६	योगीराज	योगीराज
६५	५	ही	ही, (कोमा)
६५	१०	पाए	पाएं
६५	१८	असाथना	असातना
६६	१	शिरोमणी	शिरोमणि
६६	३	चरणीर्वन्द	चरणविन्दों
६६	१३	द्विय	द्विव्य
६७	४	उनमुक्त	उन्मुक्त
६७	१०	तीथस्थान	तीर्थ स्थान
६७	१६	विशाक्त	विपाक्त
६७	१९	थी	थी। (पूर्ण विराम)
६८	३	रही	रही। (पूर्ण विराम)
६८	८	आती।	आती ? (प्रश्न सूचक)
६६	९	तई	ताई
६८	२०	अभारी	आभारी
६९	२	सम्वन्धि	सम्वन्धी
६९	१६	रमशान	श्मशान
६९	२४	रहेंगी	रहेंगी
७०	७	माने	मानें
७०	२१	निमित	निमित्त
७०	२३	साक्षात	साक्षात्
७१	६	मानवना	मानवता

७१	८	रहा	रहा।
७१	१०	हूई	हुई
७१	१४	है	हैं
७१	१६	आलौकित	आलोकि
७२	१	चरणविन्द	चरणारवि
७३	३	हैं	हैं
७३	८	ब्रहमचारी	ब्रह्मचारी
७३	१०	स्वाभाव	स्वभाव
७३	१०	कर्तव्य	कर्तव्य
७४	अन्तिम	पुष्पाअंली	पुष्पाँजली
७५	१६	धर्मोपदेष्ठ	धर्मोपदेष्टा
७६	१७	का	की
७८	२४	संभर	संवर
७६	८	वारावार	पारावार
७६	११	देखते	देते
७६	१४	ज्योतिधर	ज्योतिर्धर
८०	१८	भहां	यहाँ
८०	१६	है	हैं,,
८०	२०	और	ओर
८०	२२	बोते	बीते
८२	७	रौशनी	रोशनी
८२	२१	दुनिया	दुनियाँ
८३	१४	वार	बार
८३	२४	अल्विदा	अलविदा
८५	२	गया !	गया।
८५	३	उठी	उठी। (पूर्णविराम)
८५	४	कीड़ी धर	कोढ़ी धर

८५	१८	दुइ	दुई
८५	१६	जिन	जिन
८६	यहाँ पर कुछ (कोमा) व पूर्ण विराम की गलतियाँ हैं।		
८६	अन्तिम पंक्ति से पहले शरनार्थी		शरणार्थी
८७	७	मुल्तमस	इल्तमास
८८	अन्तिम	वढ़ता	वढ़ता हुआ
९०	३	ढाई	ढ़ाई
९०	१६	ईंटे	ईंटें
९२	४	विरादरी	बिरादरी
९४	कोमा व पूर्ण विराम की कुछ गलतियाँ		
९८	२३	वासदेव	वासुदेव
९९	४	हैं	है
९९	१४	भाजन	भोजन
९९	१७	दीपका	दीपकों
१०१	१७	हें	हैं
१०१	१९	होगे	होंगे
१०१	अन्तिम	जशसिसंघ	जरासिंध
१०२	६	अवसर्पिनि	अवसर्पिणी
१०२	१०	उदेश नौवा	उद्देसा नौवां में
१०२	१२	वे	वें
१०२	१४	भगवन	भगवन्
१०२	अन्तिम	हैं	हैं,
१०३	३	के	से
१०३	८	सम्मूछिम	सम्मुछिम
१०३	९	अपर्याप्त	अपर्याप्त,
१०३	१०	पर्याप्त	पर्याप्त।

१६३	१४	लडी	लड़ी ।
१०३	१७	की	की ।
१०३	१७	ग्रेवैयक	ग्रैवेयक,
१०३	२२	वगेवैयक	वग्रैवेयक
१०४	१	की	की ।
१०४	३	अर्न्तमुहूत	अन्तर्मुहूर्त
१०४	८	की	की । (पूर्ण विराम)
१०४	१०	वैक्रय	वैक्रिय
१०५	५	मोलक	अमोलक
१०५	७	हैं वह	हैं । वे
१०५	६	हैं	हैं ।
१०५	१०	हैं	हैं,
१०५	११	हैं	हैं ।
१०६	१६	है	हैं
११०	१२	जाये	जाएँ
१११	७	महाराजश्री	महाराज
११२	६	रहते हैं वहाँ पधारे	(करना है)
११२	११	सुगर	शूगर
११२	२४	जीन	जीव
११३	३	है	हैं
११३	६	औधिक	औधिक
११३	१२	जाएगा के बाद	(जहां) करना है
११३	१४	उमर	उम्र
११३	२०	जहां जायगा	जहां जाएगा
११३	२२	जघन्य	जघन्य ।
११३	२४	जायेया	जायेगा

११४	७	समभना	समभना ।
११४	२१	जायेग	जायेंगे
११५	१०	नवां	नौवा
११५	१३	पाँच	पांच ।
११६	अन्तिम	विहार	विहार
११६	८	गये	गये । (पूर्ण विराम)
१२०	१७	दैदीप्यमान	देदीप्यमान
१२०	२६	वचनों	वचनों
१२४	३	वलाया	बुलाया
१२५	२२	जमोदार	जमींदार
१२५	२६	अधिकार	अधिकार
१२६	६	पारश	पारस
१२८	१६	मगवान	भगवान
१२६	११	उत्पन्न	उत्पन्न
१३०	२३	अन्तर्मुहूत	अन्तर्मुहूर्त
१३१	२२	तर्यकारों	तीर्थकरों
१३१	अन्तिम	गह	यह
१३३	८	हो	ही
१३३	१६	पन्नावणा	पन्नवणा
१३४	८	करता	घटता
१३४	अन्तिम	द व्य	द्रव्य
१३५	१५	पच्चाकरवाण	पच्यकरवाण
१३६	प्रथम	वहुत	(से) वहुत करना है।
१३६	१२	पर्यव्व,	पर्याय
१३६	१२	मन पर्यव्व	मन पर्याय
१३७	४	हीत	होता
१३७	१४	प्राकृति	प्रकृति

१३७	१४	वर्प	वर्प
१३८	६	व्यव्याख्यान	व्याख्यान
१४०	६	श्राविका	श्रावक श्राविका करन् है।
१४१	१८	पंजावी	पंजाव
१४१	१६	रौलरी	गैलरी
१४२	१४	पहुचे	पहुंचे
१४२	२३	चींचा	सींचा
१४५	८	कट	फट
१४६	१०	मगवान	भगवान
१४६	२४	फरसना	फरसने
१४७	१०	सुर्योदय	सूर्योदय
१४८	५	मिल	मील
१४८	१८	नही	नहीं (थी) करना है
१४६	२	यात्रा······	यात्रा अवसाद
१४६	१८	गुजायमान	गुजायमान
१५४	६	उत्तर	उत्तर
१५७	१६	भगवव्	भगवन्
१६१	७	वहनों	वहनों
१६१	११	श्रीवीतरागय	श्रीवतरागाय
१६१	२०	वहूघ्नानि	वहुविघ्नानि
१६२	७	भाव······	भाव को करना है
१६२	२१	सेवा	सेवा
१६३	१०	श्रायरेशन	श्रापरेशन
१६३	२१	दें	दे
१६४	४	दृश्य था	दृश्य था।
१६५	६	को	की

१६५	१५	थीं	थी
१६५	२४	साधु	साधु
१६७	१८	द्वीप	द्वीप
१६७	२२	यहाँ	वहां
१६८	८	चातुमास	चातुर्मास
१६९	६	दूरी	दूर
१६९	६	म०	महाराज को
१६९	९	था	था। (पूर्ण विराम)
१६९	२३	साथ···	साथ वाला करना है।
१७०	६	श्रोताओं	श्रोताओं
१७२	१०	अद्‌भुदता	अद्भुतता
१७२	२४	निस्त्तेज	निस्तेज
१७२	२४	किया ?	किया !
१७३	६	प्रांप्त	प्राप्त
१७३	६	वैजिटेरियम	वैजीटेरियन
१७५	२	बंधती	बँधती
१७६	९	हजारो	हजारों
१७७	अन्तिम	कृण्ण	कृष्ण
१७८	२२	पति	यति
१७९	१४	करके लिए	करने से
१७९	१९	हैं	है।
१७९	२१	चढ़ाया जाएगा	चढ़ाएँगे
१७९	२२	वकरा	बकरा
१८०	९	अधर्मास्तिकाय	अधर्मास्तिकाय
१८०	९	ककाशस्तिकाय	आकाशास्तिकाय
१८१	११	प्रमावना	प्रभावना
१८१	१५	इन्द्रसेन	इन्द्रसेन

१३७	१४	वर्प	वपं
१३८	६	व्यव्याख्यान	व्याख्यान
१४०	६	श्राविका	श्रावक श्राविका करत् है।
१४१	१४	पंजावी	पंजाव
१४१	१६	रौलरी	गैलरी
१४२	१४	पहुचे	पहुंचे
१४२	२३	चींचा	सींचा
१४५	८	कट	फट
१४६	१०	मगवान	भगवान
१४६	२४	फरसना	फरसने
१४७	१०	सुर्योदय	सूर्योदय
१४८	५	मिल	मील
१४८	१८	नहीं	नहीं (थी) करना है
१४६	२	यात्रा······	यात्रा अवसाद
१४६	१८	गुजायमान	गुजायमान
१५४	६	उत्तर	उत्तर
१५७	१६	भगवव्	भगवन्
१६१	७	वहनों	वहनों
१६१	११	श्रीवीतरागय	श्रीवतरागाय
१६१	२०	वहूघ्नानि	वहुविघ्नानि
१६२	७	भाव······	भाव को करना है
१६२	२१	सेवा	सेवा
१६३	१०	आयरेशन	आपरेशन
१६३	२१	दें	दे
१६४	४	दृश्य था	दृश्य था।
१६५	६	को	की

१६५	१५	थीं	थी
१६५	२४	साघु	साधु
१६७	१८	द्वीप	दीप
१६७	२२	यहां	वहां
१६८	८	चातुमास	चातुर्मास
१६९	६	दूरी	दूर
१६९	६	म०	महाराज को
१६९	९	था	था। (पूर्ण विराम)
१६९	२३	साथ···	साथ वाला करना है।
१७०	६	श्रोताग्रों	श्रोताओं
१७२	१०	अद्भुदता	अद्भुतता
१७२	२४	निस्त्तेज	निस्तेज
१७२	२४	किया ?	किया !
१७३	६	प्रांप्त	प्राप्त
१७३	६	वैजिटेरियम	वैजीटेरियन
१७५	२	वंधती	वँधती
१७६	९	हजारो	हजारों
१७७	अन्तिम	कृण्ण	कृष्ण
१७८	२२	पति	यति
१७९	१४	करके लिए	करने से
१७९	१९	हैं	है।
१७९	२१	चढ़ाया जाएगा	चढ़ाएँगें
१७९	२२	वकरा	वकरा
१८०	९	अधर्मास्तिकाय	अधर्मास्तिकाय
१८०	९	ककाशस्तिकाय	आकाशास्तिकाय
१८१	११	प्रमावना	प्रभावना
१८१	१५	इन्द्रसेन	इन्द्रसैन

१८१	२०	कर्तव्यो	कर्त्तव्यों
१८१	२८	कल्पना	कल्पता
१८२	प्रथम	नर्मथित	समर्पित
१८२	२०	गुजावस्ती	गुजावस्ती
१८२	२२	"	"
१८३	२२	यहां	यहां से
१८५	१७	वह की	यह ही
१८५	२०	यहां	यहाँ की
१८६	१३	वह	वह
१९२	४	वह है	है वह
१९२	८	वांधते	बाँधते
१९२	२१	इन	इस
१९२	अन्तिम	रम	इस
१९४	२०	त्रिशाला	त्रिशला
१९५	१८	स्वाती	स्वाति
१९५	२५	वर्प	वर्प
१९६	२४	गूरु	गुरु
१९७	७	मित्यात्वी	मिथ्यात्वी
१९७	८	दृर्लभ	दुर्लभ
१९७	२३	अवतावेंगे	प्रर्वताएँगे
१९९	प्रथम	पंच	पंचम
१९९	८	रहेगा	रहेगा । (पूर्ण विराम)
२००	५	वाटरपने	वादरपने
२००	८	वाले	वाले
२०२	प्रथम	पहुंचे	पहुंचे ।
२०२	२	रत्रि	रात्रि भर करना है ।
२०२	७	वह	यह

२०२	२३	से	में
२०२	२७	उद्देशे	उद्देसे
२०३	३	गोजन	योजन
२०४	अन्तिम	प्रम	गीतों
२०५	प्रथम	मघुर	मधुर
२०६	२६	पर्व	पर्व
२०७	१३	जीवन	जीवन
२०७	१७	क्या	क्या
२०७	१६	है	हैं
२०८	११	भगवान	भगवन्
२०६	६	हैं	है
२१०	२३	तीनों	तीनों
२११	प्रथम	गंध	बंध
२११	१०	हैं	है
२१२	२२	यहाराजश्री	महाराजश्री
२१४	प्रथम	की	कि
२१४	६	जगरावां ने	जगरावां में
२१४	२०	महाराजश्री का विचार विहारा करने का	महाराजश्री ने विहार करने का विचार
२१५	प्रथम	रुकने, विचार	करने, विचार
२१६	३	की श्रवण	को श्रवण
२१६	६	लुघियाने	लुधियाने
२१६	१३	जैनाचार्थ	जैनाचार्य
२१६	१६	आंप	आप
२१६	२१	के यह	में ये
२१७	७	महाराज ने	महाराज के

२१६	३	हैं	है
२१६	१२	उद्देशक	उद्देसे
२१६	२०	निरोघ	निरोध
२२०	८	तह	वह
२२६	२२	निरोघ	निरोध
२२०	१२	भव	भव
२२२	१०	महावीर	महावीर
२२२	१७	विधिवत	विधिवत्
२२३	३	कर्म	क्रम
२२३	८	थानक	स्थानक
२२४	६	वे	वे
२२४	११	कर्ता	कर्त्ता
२२५	२१	स्पश	स्पर्श
२२५	२६	वेशबन्ध	देशबन्ध
२२७	८	सम्वन्ध	सम्वन्ध
२२७	१८	सामायिकावी	सामायिकादि
२२८	प्रथम	क्षयिक	क्षायिक
२२८	३	परत	पारित
२२४	अन्तिम	वनास्पति	वनस्पति
२२६	६	भवों	भवो
२२६	१६	अथना	अथवा
२३०	१५	कपाई	कपायी
२३०	१५	सकपाई	सकपायी
२३०	१५	अकपाई	अकपायी
२३३	४	जीव	जीव
२३४	२	ये	थे
२३४	८	पाकर	पाकर लोग

२३४	१६	जैगधर्म	जैनधर्म
२३४	१८	वणी	वाणी
२३४	१६	निर्वाध	निर्वाध
२३४	२४	वैदीप्यमाव	देवीप्यमान
२३४	अन्तिम	घर्म	धर्म
२३५	६	वैंक	द्वारा
२३६	प्रथम	लेने	लेने के
२३१	११	थीं	थी
२३७	२५	भटिण्डे	भटिण्डे (के)
२३८	५	गए	गया
२३८	१४	निरर्माणा	निरमाणा
२३६	३	मैं	मेरा
२३६	१३	होत······	हो जाए
२४०	५	वन्धुओं	वन्धुओ
२४०	अन्तिम	पधार	पधार
२४१	८	जी	श्री ने
२४२	६	व्या ख्यान	व्याख्यान
२४२	२५	रहते	रहे
२४२	२७	पधारे	पधार
२४२	६	मण्डल	मण्डली सहित
२४२	६	रविवार	रविवार
२४४	८	इत्वर	इत्वर
२४४	१२	ऐरवत्	ऐरावत
२४४	१३	साघ्वियों	साध्वियों
२४४	१५	ऐखत्	ऐरावत्
२४४	१६	तीर्थकरों	तीर्थकरों
२४५	८	बर्पा, जवन्य	वर्पा, जघन्य

२४५	२४	कहलाता है	कहलाते हैं
२४६	१४	श्रौर	श्रौर
२४७	२	चरित्र	चारित्र
२४७	३	वारहवे	वारहवें
२४७	६	चरित्र	चारित्र
२४८	१०	ग्रिग्र थों	निर्ग्र थों
२४८	१८	दाले	वाले
२४६	११	स्थाविर	स्थविर
२४६	१५	दो	जो
२४६	१८	कहालाता	कहलाता
२५०	१२	जाते हैं	जाते हैं।
२५०	१७	मोहनीय	मोहनीय
२५१	३	चरित्र	चारित्र
२५१	८	स्थानक	स्नातक
२५२	अन्तिम	कहोते हैं	कहाते हैं
२५२	,,	वुकश, हैं	वकुश, है
२५४	४	श्रौघ	श्रौर
२५४	१७	इससे	इसके
२५४	१६	संख्या में······	संख्या में लोग करना है।
२५५	१२	धर्तलाभ	धर्मलाभ
२५६	८	सुधारकवाद	सुधारवाद
२५८	११	कूछ	कुछ
२६२	४	पर	पर जनता ने
२६४	१८	तीव्र	तीव्र
२६७	प्रथम	घान	धान
२६७	३	है, कुलत्था	हैं कुलत्था

२६७	७	सोभित	सोमिल
२६७	२१	वाहर शे	वाहर से
२६८	५	रचना	चरना
२६८	८	मैंनू	मैंनू
२६८	१७	में	मैं
२६८	१८	लक्खा	लक्खां
२६८	२३	दाना	दा ना
२७०	३	श्रायू	श्रायु
२७०	७	समाप्ति	समाप्ति
२७१	१२	उदीरण	उदीर्ण
२७१	१३	"	"
२७१	१५	श्रोदारिक	श्रौदारिक
२७२	२४	गल्लीनाथ	मल्लीनाथ
२७३	६	हौता	होता
२७३	२६	सेवा	सेवा
२७४	३	विजशल्ल	विजशेल
२७४	अन्तिम	सराफ	सर्राफ
२७६	१२	की	ली
२७६	२४	रहै	रहे
२७७	३	किये	किये ।
२७७	३	युक्तियुक्त	युक्तियुक्त
२७८	३	धर्म को	धर्म के
२७८	१०	रहे थे	रहे थे ।
२७९	४	सूंधने	सूंघने
२८०	७	जब्द	शब्द
२८०	११	मानने	मान
२८०	२१	श्रायु की	श्रायु को

२८२	२	जाती	जाति
२८२	६	ऐश्वर्य	ऐश्वर्य
२८२	१६	लाभन्तराय	लाभान्तराय
२८२	२४	अविचिक	आवीचिक
२८३	प्रथम	,,	,,
२८३	७	आत्यान्तिक	आत्यान्तित
२८३	११	पंण्डित	पण्डित
२८३	१५	गोतम	गौतम
२८३	अन्तिम	भाव	भाव
२८४	प्रथम	अत्यन्तिक	आत्यान्तित
२८४	२	अचधिकरन	अवधिमरण
२८४	७	कहलाते है	कहलाता है
२८५	४	है, दोनो	है, दोनों
२८५	१४	आयम्विल	आयम्बिल
२८५	१५	सम्वत्सरी	सम्वत्सरी
२८५	२६	वृक्ष:स्वल	वक्ष:स्थल
२८६	१४	हो जाने	आ जाने
२८६	१६	पर्दार्पण	पदार्पण
२८६	२१	मैं, और	में और
२८७	४	कि	की
२८७	१६	मैं	में
२८७	२१	श्राधक	श्रावक
२८६	प्रथम	रुग्णा रुग्णवस्था	रुग्णावस्था
२८६	१०	करीट	किरीट
२८६	१७	हुऐ	हुए
२६१	३	हैं	है
२६१	१०	करौलवाग	करौलवाग

२९१	अन्तिम	करौलवाग	करौलवाग
२९२	,,	कोन	कौन
२९३	१३	परिव्राजक	परिव्राजक
२९४	२	के	तुम के लिए
२९४	७	अरिहन्त	अरिहन्त
२९५	२१	योजना	योजन
२९६	३	सिद्धि	सिद्ध
२९६	१४	वड़ाता	वढ़ाता
२९६	२१	अत्याधिक	अत्यधिक
२९७	प्रथम	आर्हती	अर्हति
२९७	८	वढ़ौत	वड़ौत
२९७	२५	के समय	का समय
२९८	३	की	वाँटी
२९८	अन्तिम	हुवा	हुआ
२९९	४	रहे	रहे।
२९९	८	विजामान	विराजमान
२९९	११	रहे	रहे।
२९९	१२	आए	आए।
२९९	१४	करली	करली।
२९९	१५	गई	गई।
२९९	२२	पधारे	पधारे।
२९९	२२	माईयों	माइयों
२९९	२३	पधारे	पधारे।
२९९	२५	शीष्या	शिष्या
२९९	२५	विमार	वीमार
२९९	२६	,,	,,
३००	प्रथम	थे	थे।

३००	७	उपरी	ऊपरी
३००	६	पधारे	पधारे ।
३००	११	लगे	लगे ।
३००	१२	संवर	संवर
३००	२१	मगवान्	भगवान्
३००	२५	,,	भगवन्
३०१	८	वस्त्र	वस्त्र
३०१	१०	मगवान्	भगवन्
३०१	१३	गाढे	गाढ़े
३०१	१३	शिस्लस्ट	सलिष्ट
३०१	१४	वदते	वेदते
३०१	१४	श्रमणा	श्रमणों
३०१	१६	घोया	धोया
३०१	१७	घ्यानादि	ध्यानादि
३०२	६	कदाञ्चित	कदाचित्
३०२	२०	है	हैं
३०२	२१	प्रतीपन्न	प्रतिपन्न
३०२	२२	अनुतर, है	अनुन्तर हैं
३०२	अन्तिम	प्राति	प्राप्ति
३०३	७	पच्यक्खान	पच्चक्खान
३०३	२०	तक	से
३०३	२३	पड़े	पड़े ।
३०३	२४	थे	तो
३०३	२४	पड़ा	पड़ा ।
३०२	२१	शेलेशी	शैलेशी
३०३	अन्तिम	लगा	लगा ।
३०४	८	गया	गया ।

३०४	८	दवाईयों	दवाइयों
३०४	१२	माईयों	माइयों
३०४	१४	"	"
३०४	१४	किया	किया।
३०४	१५	की	कि
३०४	१५	फरमायेंगे	फरमायेंगे।
३०४	१७	गई	गई।
३०४	१९	समतसरी	सम्वत्सरी
३०४	२०	किया	किया।
३०४	२१	व्रत्त	व्रत
३०४	२२	अमल	आयम्बिल
३०४	२२	की	की।
३०४	२४	रहा	रहा।
३०४	२५	लगी	लगी।
३०४	अन्तिम	किसी	कुछ
३०४	प्रथम	और	और
३०५	"	आया......	आया है।
३०५	२	किसी के	विद्वान की
३०५	३	निकले	निकला
३०५	४	भाईयों	भाइयों
३०५	१०	है	हैं।
३०५	२३	विज्ञानी	वैज्ञानिक
३०६	९	पुस्कर्णी	पुष्करणी
३०६	११	वाणव्यन्तरदेवता	वाणव्यन्तर
३०६	२३	वेवाणीक	वैमानिक
३०७	१३	उन्हें	उसे
३०८	१३	ब्रिरादरीयों	बिरादरियों